Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

घर का वैद्य

2.3

[तृतीय भाग]

प्रकाशक :—
हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

श्री वैद्य बलवन्तसिंह आर्य

प्रथमवार २०२३ वि० मूल्य २·००

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ
१-	आद्य वक्तव्य	१
२-	शूल रोगनिदान	६
३-	परिणामशूल चिकित्सा	१६
४-	अन्नद्रवशूल चिकित्सा	२१
५-	आध्मान रोग चिकित्सा	२१
६-	गुल्म रोग चिकित्सा	२४
७-	यकृत् प्लीहा (जिगर और तिल्ली)	३०
८-	जलोदर चिकित्सा	३८
९-	हृदयरोग चिकित्सा	३९
१०-	मूत्रकृच्छ्र निदान, लक्षण	४७
११-	मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा	४८
१२-	मूत्राघातनिदान	५०
१३-	अश्मरी प्रकरण	५३
१४-	दर्द गुर्दा (गुदस्थित वातरोग)	५७
१५-	प्रमेह प्रकरण	६१
१६-	स्वप्नदोष प्रकरण	७०
१७-	मधुमेह प्रकरण	८२
१८-	बहुमूत्ररोग	८८
१९-	सुजाक रोग निदान	८८
२०-	आतशक (फिरंग) प्रकरण	९४
२१-	बद्ध की चिकित्सा	१०८
२२-	दाद प्रकरण	१०९
२३-	चम्बल प्रकरण	१११
२४-	खाज प्रकरण	११९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२०/13

आद्य वक्तव्य

"घर का वैद्य" नामक पुस्तक का तृतीय भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है। इसमें भी प्रथम द्वितीय भागों की तरह आयुर्वेद संसार में अत्यन्त उपयोगी एवं प्रामाणिक सामग्री दी गई है।

धार्मिक परम्परा में भारतीय जनता का विश्वास शुद्ध, पवित्र आयुर्वेद औषधों पर ही रहा है। ९० प्रतिशत से अधिक धर्म-परायण जनता इसे सदियों से अपना रही है। इसमें ऋषि-मुनियों ने भी अपने ज्ञान कुण्ड द्वारा सर्वदा ही अनुभवामृत उड़ेला है। अनुभवपूर्ण होने के कारण इसका भारत में सर्वत्र प्रचार है। भारतवर्ष में इस समय अनेक चिकित्सा पद्धतियां प्रचलित हैं। अपनी-अपनी पद्धतियों की विशेषता सभी बताते हैं किन्तु इन सब में आयुर्वेदीय चिकित्सा की विशेषता अपनी और ही है। अपनी उस सर्वश्रेष्ठ विशेषता के कारण यह चिकित्सा पद्धति जीवित है और भविष्य में सदैव जीवित रहेगी। आज का युग विकास का युग माना जाता है। किन्तु विकास की अपेक्षा वह विनाश की ओर अधिक अग्रसर है। अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों की भांति चिकित्सा क्षेत्र में भी यह बात अछूती नहीं रही। आज का चिकित्सा सिद्धान्त यह है कि चाहे जिस तरह भी हो, रोग दूर करो। इस सिद्धान्त से प्रस्तुत रोग तो दूर हो जाता है अथवा घट जाता है किन्तु साथ ही अन्य रोगों का सूत्रपात हो जाता है। कभी-कभी तो तत्काल ही दूसरी बीमारियां पैदा हो जाती हैं। इसलिए यह सिद्धान्त उपादेय नहीं कहा जा सकता। आयुर्वेद चिकित्सा का सिद्धान्त यह है कि चिकित्सा वह है, जो प्रस्तुत व्याधि को शान्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे और दूसरी व्याधि को उत्पन्न न होने दे । औषधि भी वही उत्तम है जो रोगी के रोग को दूर करे और अन्य कोई विकार न हो। आप बताइये कि युद्ध के इन दो मैदानी योद्धाओं में से किस को महत्त्व देंगे ? एक तो मात्र जोरदार वार ही करता है, अपनी सुरक्षा को व्यवस्था नहीं करता। दूसरा जो सावधानी से वार भी करता है और अपने को सर्वतः सुरक्षित भी रखता है। अतः बीमारी को चाहे जिस तरह दूर करो यह चिकित्सा सिद्धान्त अरक्षित है और कभी भी ढह सकता है, जबकि इससे अधिक सावधान आयुर्वेदिक चिकित्सा सिद्धान्त सदा अमर रहेगा । इसी सिद्धान्त पर आयुर्वेद और आयुर्वेदिक औषधियां जीवित हैं और यह दोनों सदा अमर रहेंगे। संसार की कोई शक्ति एवं दबाव मारना तो क्या मूर्च्छित भी नहीं कर सकता ।

आयुर्वेद के विद्यार्थी इसी बात के सूचक इस श्लोक को कण्ठाग्र करलें –

प्रयोगः शमयेद्व्याधिं योऽन्यमन्यमुदीरयेत् ।
नासौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत् ।।

आयुर्वेद सिद्धान्त को विशेषता:—आयुर्वेद संसार का सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सिद्धान्त और उसकी सर्वश्रेष्ठ विशेषता यह है कि वह जनकल्याण की भावना लेकर संसार के समक्ष आदर का पात्र बन रहा है। इसके सामने आर्थिक लाभ का प्रभाव उद्देश्य नहीं है जब कि भारत में घुसी हुई अन्य विदेशी चिकित्सा प्रणालियों का मुख्य ध्येय अपना अर्थ साधन ही है और इसीलिये वे प्रणालियां प्रायः धनिकों के उपभोग का विषयमात्र बनी हुई हैं । गरीब जनता उनसे कोई लाभ नहीं ले पाती । कोई एलोपैथी डाक्टर बिना पैसे के किसी रोगी को प्रायः ठीक नहीं कर सकता। दूसरी ओर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबकि हर एक वैद्य छोटासा उपाय या जंगल की सुलभ जड़ी बूटी बताकर रोगी को मुफ्त या सस्ते में रोगमुक्त कर देता है। इसीलिए यह आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली सर्वप्रिय है और रहेगी। अभी तक तो इस का स्थान लेने वाली कोई भी चिकित्सा प्रणाली उत्पन्न ही नहीं हुई है।

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अर्थात् भारतीय चिकित्सक, सद्वैद्य राज्य नहीं चाहता, स्वर्ग की भी इच्छा नहीं करता और यहां तक कि मुक्ति (मोक्ष) की भी अभिलाषा नहीं रखता, किन्तु एकमात्र दुःखतप्त, रोगग्रस्त प्राणियों के रोग व दुःख दूर करने में यत्नशील रहता है।

नार्थार्थं नापि कामार्थमथ भूतदयां प्रति।

न तो सद्वैद्य अपनी जेब भरना चाहता है और न ही किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है किन्तु वह दया कर्त्तव्यवश, जनकल्याण की प्रमुख भावना को ही अपने हृदय में स्थान दिए रहता है। जब तक यह विचारधारा रहेगी, कोई भी शक्ति आयुर्वेद का बाल बांका नहीं कर सकता। वैद्य अपनी इस शक्ति को पहचानने और उसका सदुपयोग करें। जनमत हमेशा आपके साथ रहेगा। यही उनकी विजय का प्रमुख कारण होगा। लादी गई कोई भी मंहगी अथवा पैसा चूसनेवाली चिकित्सा प्रणाली भारतीय जनता द्वारा आदरणीय नहीं हो सकती। फिर अधिकांश तामसवृत्तिप्रवर्तक उन पाश्चात्य औषधों से भारत की सात्विक वृत्ति पर प्रबल कुठाराघात होता है। अतः कोई भी समझदार उन्हें खाना तो क्या, छूना भी पसन्द न करेगा। अहिंसामय भारतीय तत्त्वों में हिंसामय औषध-विष घोलकर उन्हें दूषित बना देना कोई भी समझदार भारतीय कभी भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार नहीं करेगा। भारतीय ग्राम्य जनता की आयुर्वेद पर आज अपार श्रद्धा है। त्रिकुटा अथवा त्रिफला किंवा संजीवनी प्रभृति औषधों से आज भी लाखों आदमी सरलता से भयंकर रोगों से मुक्त हो जाते हैं। सचमुच गरीब बन्धुओं का अनाथ-नाथ एकमात्र आयुर्वेद ही है। आज हमारे आयुर्वेदीय तत्त्व-ज्ञान से शून्य प्रायः कतिपय नेता आयुर्वेदज्ञों पर अज्ञानता किंवा अपूर्णता का दोष थोंपने हैं किन्तु इसके लिए जिम्मेदार वह स्वयं हैं क्योंकि वे आयुर्वेद को पाश्चात्य चिकित्सा के सामने उसी दृष्टि से देखते हैं, जैसे सौत के पुत्र को विमाता। आयुर्वेद को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता। वह क्षीणकाय होता जा रहा है। भगवान् बचाये, ऐसों के हाथों में स्वास्थ्य की पतवार देने से, जो आयुर्वेद के विनाश पर तुले हैं और उसकी अर्थी (जनाजा) निकालने की ठान रखी है। किन्तु परमेश्वर भी गरीबों का रक्षक है। लगातार ६५० वर्षों से विदेशी कुठाराघात सहता हुआ भी यह आयुर्वेद आज भी ८० प्रतिशत भारतीय जनता का शिरोमणि है। वैद्यों की सेवावृत्ति, अनुसंधान संगठन प्रचार यदि प्रबल मात्रा में हुए, तो वर्तमान और आगामी हजारों विरोधी भी इस का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे। उन्नति अवन्नति तो हर समय परिवर्तित होती ही रहती है।

हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के आयुर्वेद के प्रति विचारः—

आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों को चाहिए कि आयुर्वेदिक प्रणाली में सहानुभूति रखें। उन्हें इस प्रणाली का बहिष्कार इसलिए नहीं करना चाहिए कि वे इसे समझते नहीं। उन्हें चाहिए कि वे इसे समझें, इसका अध्ययन करें, एवं इसके उन गुणों को ढूंढ निकालें जिनके कारण यह प्रणाली आज भी जीवित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

420

है और देश के लाखों व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ हो रही है। मेरी राय है कि आयुर्वेदिक पद्धति अन्ततोगत्वा एलोपैथी से सस्ती है और यदि परीक्षण के तौर पर कुछ व्यय भी करना पड़े तो मुझे पूरा यकीन है कि यह फिजूल खर्ची नहीं होगी।

—डा० राजेन्द्र प्रसाद

श्री मंगलदास पकवासा ने मध्यप्रदेश के गवर्नर पद पर होते हुए आयुर्वेद के विषय में अपना निम्नलिखित वक्तव्य प्रसारित किया था—

भारतीय जनता को आयुर्वेद पर अपार श्रद्धा है। गरीबों की सहायता का एकमात्र साधन आयुर्वेद ही है। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारें आयुर्वेद का पुनर्जीवन एवं पुनरुद्धार करें। यदि देश की ग्रामीण एवं दरिद्र जनता को वास्तव में चिकित्सा सहायता पहुँचानी हो, तो आयुर्वेद को बढ़ावा दिया जाना ही चाहिए। भारत की ग्रामीण जनता में आयुर्वेद के प्रति नितान्त आदर है। जबकि आज इस वैद्यक शास्त्र की स्वास्थ्य सेवाओं में उपेक्षा की जा रही है।

मंगलदास पकवासा

सचमुच प्रत्येक भारतीय जिस में भारतीय रक्त है और जिस में भारतीय बीज है, जिस के रोम-रोम में भारतीय संस्कृति की शिक्षा दीक्षा समाई हुई है, वह अवश्य ही ऐसे विचारों के होंगे और आयुर्वेद के उद्धार के लिए सदा यत्नशील एवं कटिबद्ध रहेंगे। हम इन महाशयों का उपकार माने बिना कदापि नहीं रह सकते, ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का अभिनन्दन करते हैं। साथ ही इसमें भाषा का संशोधन करने वाले ब्र० विरजानन्द दैवकरणि का भी आभार मानता हूं। धन्यवाद के प्रसंग में वैद्य बलराम जी नूना-माजरा को भुला देना हमारी अनुदारता ही समझी जायेगी जिन्होंने इस ग्रन्थ की प्रेस प्रतिलिपि बड़े परिश्रम से की है।

बलवन्तसिंह वैद्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर का वैद्य

[तृतीय भाग]

शूलरोग-निदानम्

शूलरोगस्य भेदाः—वातजशूल, पित्तजशूल, क़फजशूल, वात-पित्तजशूल, वातकफजशूल, पित्तकफजशूल, सन्निपातज शूल आमजशूल भेद से शूल आठ प्रकार का है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में दो प्रकार का शूल रोग और कहा है। वैसे तो यह भी वातादि दोषों से होता है, किन्तु इनका विशेष दोषों से अभिप्राय नहीं होता, इसलिए आयुर्वेद आचार्यों ने इनकी उत्पत्ति की दृष्टि से इनकी संज्ञा दी है। परिणामशूल व अन्नद्रवशूल। यह आठ प्रकार के शूलों से भिन्न हैं। इनका अर्थ इनके नामों से ही स्पष्ट हो जाता है। जो पीड़ा भोजन के पाचनकाल में होती है, किए हुए भोजन के पश्चात् होती है, उसे परिणाम शूल कहते हैं। दूसरा किए हुए भोजन द्रव होने पर (पतला होने पर) आमाशय में जो दर्द होता है उसको अन्नद्रवशूल कहते हैं। यह भोजन के एक दो घण्टे बाद होता है। शूल का अर्थ पीड़ा अथवा दर्द होता है।

प्रश्नः—दर्द तो शरीर के कई भागों में होता है।

उत्तरः—शूल का अर्थ तो दर्द ही है परन्तु शूलविशेष से पेट दर्द ही जाना जाता है। आयुर्वेद में पेट दर्द ही नहीं अपितु स्थान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बताये हैं। यथा हृदय, पीठ, पसली, पेट, बस्ती प्रदेश आदि का दर्द।

प्रश्न– वातजशूल की विशेष पहचान क्या है ?

उत्तर—उष्ण चिकने पदार्थों के प्रयोग करने, सेंक करने, उष्ण तैल की मालिश से जो दर्द शान्त हो, वह वातजशूल जानें। यह दर्द भोजन के पच जाने पर, सायंकाल के समय, वर्षा ऋतु अथवा हेमन्त ऋतु में अधिक बढ़ता है।

प्रश्न—पित्तजशूल (दर्द) कहां पर होता है ?

उत्तर—यह दर्द प्रायः नाभि में होता है।

प्रश्न—पित्तजशूल का दर्द किस समय बढ़ता है ?

उत्तर—मध्याह्न में, अर्ध रात्रि में बढ़ता है।

प्रश्न—यह दर्द किन पदार्थों के प्रयोग से न्यून अथवा दूर होता है ?

उत्तर—शीतल वायु, शीतल जल से, शीतल तथा मीठे पदार्थों से।

प्रश्न—पित्तजशूल के बुरे लक्षण क्या हैं ?

उत्तर—दाह, संज्ञा का न रहना, मूर्च्छा, भ्रम, तृषा, पसीने आना आदि।

कफजशूल

यह दर्द भोजन करने पर तत्काल बढ़ना आरम्भ होता है; दिन के पहले भाग में बसन्त ऋतु में इसका दर्द बढ़ता है।

आमजशूल

आमशूल, कफ और वायु के कारण हो, तो वस्ति, हृदय, पीठ, पसलियों में दर्द होता है। कफपित्त के कारण हो, तो पेट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय नाभि में दर्द होता है। यदि वातपित्त के कारण आमशूल हो, तो दर्द के अतिरिक्त ज्वर दाह होता है। यह दर्द भयंकर है।

परिणामशूल

यह शूल भोजन पच जाने पर होता है। इसमें पेट में अफारा, दर्द, गुड़गुड़ाहट, मल मूत्र का रुक जाना, दिल की घबराहट, कंपकपी, बेचैनी होती है।

दोष उल्वणता—१—पेट का दर्द, कंपकपी, घबराहट, दिल की बेचैनी इत्यादि लक्षण हों, तो उसको वाताधिक शूल जानो। यह दर्द गर्म और चिकने पदार्थ खाने से दूर होता है।

२—यदि अधिक तृषा, दिल की घबराहट, पसीना आना और दर्द का होना, पित्ताधिक्य परिणाम शूल होता है। यह शीतल तथा चिकने पदार्थों के प्रयोग से शान्त होता है।

३—यदि दर्द के साथ उबकाई आती हो और दर्द बहुत समय तक धीमी-धीमी गति से साथ हो तो कफाधिक्य परिणाम शूल जानो, यह दर्द गरम और कटु पदार्थों के प्रयोग मे शान्त होता है।

४—जिस शूल में उपरोक्त तीनों के लक्षण मिलते हों, उसे त्रिदोषज परिणाम शूल कहते हैं।

५—परिणाम शूल की यह खास पहचान है कि जैसे-जैसे भोजन पचता जाता है, दर्द भी बढ़ता जायेगा। यदि दर्द के साथ कुछ खा लिया जाये, तो दर्द उसी समय शान्त हो जाता है।

अन्नद्रवशूल

इस शूल रोग में, जब भोजन का रस बनने लगता है, तब यह दर्द होता है। इसको अन्नद्रवशूल कहते हैं। भोजन के पतला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते ही उदर में दर्द होता है। पसलियां दुखती हैं, जी मिचलाता है, उबकाइयां आती हैं, जब तक किया हुआ भोजन वमन द्वारा बाहर नहीं निकल जाता, तब तक लाभ नहीं होता, यह साध्य लक्षण हैं।

असाध्य लक्षण

भयंकर दर्द, बेचैनी, तृषा, मूर्च्छा, मल मूत्र की रुकावट, शरीर का भारीपन, भोजन में अरुचि, श्वास, कास, वमन (कै) हिक्का यह लक्षण हों, तो शूल रोग असाध्य है।

टि०—शूल रोग एक दोष से साध्य, दो दोष कुपित होने से कष्टसाध्य, तीनों दोषों से होने वाला शूल रोग असाध्य माना गया है।

चिकित्सा

१—शूल रोग में शीघ्र ही चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोग में रोगी जितनी देर में संभाला जायेगा उतना ही यह रोग कठिन होता जायेगा। इसलिये शीघ्र ही चिकित्सा करनी चाहिये।

२—सब प्रकार के शूल रोग में वात के शमन करने का ध्यान रखना चाहिये। शूल रोग कफ अथवा आम के कारण हो, तो वमन कराना चाहिये, भोजन आदि खाने को न देवें। पाचक औषधि प्रयोग करायें। पसीना निकलवायें दर्द पर सेक करायें। मल मूत्र की रुकावट हो तो एरण्ड तैल, गरम पानी आदि की वस्ति (एनीमा) देवें।

शूलशार्दूल वटी (१)

काली मिर्च १ तोला, हल्दी ४ तोले, मोम देशी ४ तोले, गुड़ ४ तोले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरोक्त दोनों औषधियों को बारीक पीसकर रख लें, पश्चात् मोम और गुड़ को खरल कर के उसी में पहले पिसी हुई दोनों औषधियां मिलाकर झड़वेर के समान गोलियां बना लेवें। आवश्यकता पड़ने पर इस की धूनी देवें। धूनी देते समय मुख को बाहर रखें और शेष शरीर पर वस्त्र रखें, वस्त्र मोटा होना चाहिये।

प्रयोग—एक से दो गोली कोयलों पर रख कर धूनी देवें। यह उदरशूल, वृक्कशूल, शीतपित्त आदि रोगों में सफल प्रयोग है। हिक्का, श्वास रोगों में चिलम (हुक्का) अथवा नली आदि में रख कर मुंह द्वारा धूम्रपान कराने से शीघ्र लाभ होता है। स्त्री स्तन रोग जिसे थनेला कहते हैं, उस पर यह औषधि अच्छा प्रभाव करती है।

पेट दर्द की अचूक औषधि (२)

काली मिर्च ५ तोला, काला नमक ५ तोला। इन दोनों को बारीक पीसकर चीनी मिट्टी अथवा कांच के पात्र में भर लेवें। फिर गन्धक तेजाब एक तोला एक-एक बूंद करके डालते जावें तथा किसी लकड़ी से हिलाते जावें, बस औषधि तैयार है। शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्राः-यह औषधि ४ रत्ती तथा मीठा सोडा ४ रत्ती मिला कर सेवन करावें।

गुणः—हैजा (विशूचिका) वमन (कै) दस्त और पेट दर्द के लिए रामबाण है।

योग (३)

मीठा सोडा २ माशा, सिरका ईख २ तोला, जल ५ तोला।

विधिः—प्रथम मीठा सोडा एक गिलास में डालें, फिर जल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला दें फिर सिरका मिलाकर तत्काल पिला दें। यह एक मात्रा है। शिशु को मात्रा न्यून देवें।

गुणः—पेट दर्द, अफारा, बदहजमी, वमन, वायुगुल्म, विशूचिका रोग दूर होते हैं। हैजे में सौंफ, अजवायन, पोदीना अथवा इलायची के अर्क में देवें।

योग (४)

खाने का सोडा १ पाव, असली यवक्षार ५ तोला, सज्जीक्षार शुद्ध ५ तोले, स्नुही (थोहर) क्षार २॥ तोले।

विधिः—इन सब को मिलाकर घीक्वार के चारगुने स्वरस में घोटें अथवा धूप में सुखावें।

अनुपानः—एक से दो माशे गरम जल से।

गुणः—भयानक पेट दर्द, गुल्म, अजीर्ण आध्मान इत्यादि रोगों में तत्काल लाभ दिखाता है। कैसा ही पुराना पेटदर्द हो इससे अवश्य ठीक हो जाता है। अनेक बार का परीक्षित है। पुराने पेटदर्द में कुछ दिन लगातार पथ्यपूर्वक सेवन करें।

योग (५)

असली शुद्ध हींग २ रत्ती, मुनक्का २ नग।

मुनक्का के दाने निकाल कर उसमें हींग भरदें और गरम पानी से खिलादें। लाभ होगा। इससे कौड़ी (कलेजे) की पोड़ा (शूल) में एकदम लाभ होगा। किसी किसी को दूसरी मात्रा देनी पड़ती है।

उदरशूलनाशक चूर्ण (६)

गिरी करंज बीज, कालानमक, सोंठ, भुनी हींग, सब को समान भाग लेकर चूर्ण बनालें। छः माशे चूर्ण गरम जल से लेने पर शीघ्र लाभ होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (७)

आक की लौंग १ सेर, पाँचों नमक, धनियां दोनों जीरे, नौशादर प्रत्येक १ छटाँक, फिटकरी भस्म, उत्तम भुनी हींग १-१ तोला, पीपल २ तोला, पीपरमेंट १ तोला, शुद्ध गन्धक १ छटांक, सत्त निम्बू २॥ तोला।

विधि:—इन सब को कूट पीसकर अदरक के स्वरस में घोट कर चार-चार रत्ती की गोलियां बनालें।

गुण:—प्रात: सायं एक एक गोली गर्म जल से सेवन करें। यदि दर्द हो तो दो दो गोलियां सेवन करें।

शूल विशूचिका गुल्म आदि अनेक रोगों पर कार्य करता है। अनेक बार का अनुभूत है। यह योग पहलवान धनतर ग्राम ततारपुर जिला मेरठ से प्राप्त हुआ था।

योग (८)

धतूरे का का पका फल १ नग, गुड़ तथा सेंधा नमक, यह सब बराबर लेवें, अर्थात् समान वजन हो।

विधि:—इन तीनों को कूट कर एक मिट्टी की हाण्डी में भरकर कपडमिट्टी करके छाया में सुखाकर उपलों की आग में भस्म करलें। कोयलों जैसी काली भस्म होनी चाहिए। फिर निकाल कर बारीक पीसकर रख लें।

गुण:—एक से दो माशे खांड में मिलाकर गरम जल से सेवन करावें। आरम्भ में दो माशा देवें। द्विदल, चनादि दाल खाने को न दें। कहावत है — रोता आवे और हँसता जावे।

योग (९)

शास्त्रोक्त संजीवनी बटी ३ रत्ती पीसकर देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपानः—कालाजीरा १ माशा, हींग २ रत्ती, काला नमक १ माशा, जल छटांक में मिलाकर आग पर पकावें। जब उफान आ जावे, उतार कर छान लें। संजीवनी बटी वाली मात्रा पीसकर खिलादें तथा ऊपर से बना हुवा क्वाथ पिला दें। शीघ्र लाभ हो जावेगा। यदि एक मात्रा से लाभ न हो तो एक घण्टे पश्चात् दूसरी इसी प्रकार की मात्रा देवें। दो तीन मात्रा में निश्चित लाभ होगा।

योग (१०)

स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) के बीजों का तैल निकालकर रख लें। खाण्ड में ३० से ६० बूंद मिलाकर देने से उदरशूल में शीघ्र लाभ हो जाता है।

योग (११)

देशी कपूर १० ग्राम, सोडा बाईकार्ब ६० ग्राम। इन दोनों को पीसकर रख लें। फिर आधा लिटर जल लेकर खूब उबालें। फिर दोनों मिली हुई औषधियां डालकर मिला दें। फिर शीतल करके बोतल में भरकर कार्क लगाकर रख दें। यह योग पेट दर्द में अच्छा कार्य करता है।

योग (१२)

आक के पीले पत्ते २० नग, सौंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, यवक्षार १ तोला, कपूर देशी १ तोला, पांचों नमक ५ तोला, ईंख का पुराना सिरका ३० तोले।

विधिः—सब को बारीक पीसकर सिरके में मिलादें। सात दिन तक धूप में रख दें। फिर छानकर काम में लावें।

गुणः—१० बूंद से ६० बूंद तक जल में मिलाकर दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदरशूल; अफारा, गुल्म विशूचिका, प्लीहादि रोगों पर लाभ करता है।

योग (१३)

गो दूध १ पाव, जल १ पाव, लाल मिर्च बीजों सहित ५ नग। इसको अग्नि पर पकावें, जब जल समाप्त हो जावे, दूध मात्र शेष रहे तब मिर्चों को हल्के हाथों से दबाकर निचोड़कर निकाल दें और दूध को छानकर मीठा मिलाकर रोगी को गर्म-गर्म ही पिला दें।

गुण:—भयंकर वायुशूल, पेट दर्द, आध्मान आदि रोगों पर अच्छा कार्य करनेवाला योग है।

योग (१४)

सल्फ्यूरिक एसिड (तेजाब गन्धक) १ तोला, पिसा हुआ कालानमक १ तोला, निम्बू का रस ५ तोला, गुलाब जल २० तोले, सबको एक शीशी में मिलाकर रख लें।

मात्रा:—पेट दर्द की तीव्रावस्था में ५ बूंद से १० बूंद पताशे में मिलाकर देवें अथवा १ छटांक गर्म जल में १५ से २० बूंद मिला कर पिलावें। शीघ्र लाभ होगा। अत्युत्तम योग है।

योग (१५)

अमलतास का गुदा २ तोला, गोघृत ५ तोला।

गूदे को घृत में भून लें और दूसरी तरफ गोदूध १ पाव गरम करें, फिर इसी में घी में भुना हुआ गुदा घी समेत गर्म-गर्म ही दूध में डाल दें, जब थोड़ा शीतल हो जावे तब मसलकर अमलतास का गुदा निकाल दें तथा इसी दूध में दस बारह काली मिर्च पीसकर मिला दें। १॥ माशा काला नमक पीसकर मुख में फांक लें और ऊपर से उपरोक्त दूध पी लें और ऊपर से गर्म पानी पिला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें। पानी एक दो घूंट ही पिलाना चाहिए। औषधि देने के दस मिनट में ही आराम हो जावेगा, अद्भुत योग है। वात का अनुलोमन करता है, दस्त साफ लाता है।

योग (१६)

एरण्ड तैल (कास्ट्रायल) २ तोला, अदरक का रस २ तोला दोनों को मिलाकर पिलादें। ऊपर से गर्म जल पिला दें। शीघ्र लाभ होगा। अनेक बार का परीक्षित है।

योग (१७)

आक के पुष्पों को सुखाकर बारीक पीसकर कपड़छान कर लें, फिर आक के पत्तों के रस में तीन दिन घोटें, फिर चने बराबर गोली बनालें।

मात्रा—दो गोली उष्ण जल से सेवन करने से कठिन से कठिन पेट दर्द को आराम करता है। यदि एक मात्रा से लाभ न होवे, तो इसी प्रकार दूसरी मात्रा देवें।

योग (१८)

सूखा आक का पुष्प १० तोला, अर्क मूलत्वक् ५ तोला इन दोनों को पीस छानकर आक के पत्तों के रस में घोट कर एक-एक रत्ती की गोली बनालें।

मात्राः—एक से चार गोली सोंफ अर्क अथवा गर्म जल से प्रयोग करें। इससे उदर शूल तथा वात की पीड़ा शान्त होती है।

योग (१९)

शूलहर वटिका

आक के पत्ते २ तोले, एरण्ड पत्र २ तोले, नौशादर २ तोले,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुना सुहागा २ तोले, पीपरमेन्ट १ तोला।

विधि :—सब को घोट पीस कर दो से चार रत्ती की गोलियां बनालें। अवस्था तथा रोगानुसार दो से चार गोली गरम जल से सेवन करावें। पेट दर्द बहुत शीघ्र ठीक हो जावेगा। सुपरीक्षित है।

योग (२०)

नारियल की जटा हटाते समय जो चूरा गिरता हे। इस को लेकर चिलम में रख कर ऊपर आग रख कर इस का धुआँ मुंह से पीवें। इस से भयंकर दर्द भी (शूल, पेट दर्द) एकदम शांत हो जाता है।

योग (२१)

आक के ताजा फूल १।। सेर, नींबू का सत १० तोले, काला नमक ३० तोले, सेंधा नमक ३० तोले, सफेद जीरा १० तोला, काला जीरा १० तोले, लाल मिर्च छिलका (बीज रहित) १० तोला, काली मिर्च १० तोले, लौंग १० तोले, सूखा पोदीना १० तोले, छोटा पीपल १० तोले, मुनी हींग १० तोले, चित्रकमूलत्वक् १० तोले।

विधि :—फूलों को जल से धोकर शुद्ध करलें। शेष औषधियों को कूट कर बारीक चूर्ण करलें फिर सब को मिला कर घोट लें और छोटे वेर के समान गोलियाँ बनालें। इसकी २ से ४ गोली सेवन करें। इन गोलियों को चूसें अथवा गरम जल से प्रयोग करें। विशूचिका (हैजे) के दिनों में अवश्य प्रयोग में लावें। यह हैजे से बचाव का उत्तम योग है। यह योग उदर शूल, आध्मान, अरुचि, अजीर्ण नाशक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्म बाण चूर्ण (२२)

हिंग्वष्टक चूर्ण २।। तोले, मीठा सोडा १।। तोला, छोटो हरड़ २ तोला, शुद्ध कुचला १ तोला, सत पोदीना ६ माशे।

इन सब को कूट पीस कर छान कर रख लें। यह चूर्ण १ से २ माशे प्रातः सायं काल गरम जल से लेवें।

गुण :- इस से उदरशूल, वायु का दर्द, आध्मान (अफारा) मलबद्धता (कब्ज) आदि रोग शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। पुराने पेट दर्द में नित्य लगातार कुछ दिन सेवन करना चाहिये।

शूलामृत अर्क (२३)

गन्धक का तेजाब ४ माशे, अमृतधारा (सत पोदीना, सत अजवायन, कपूर तीनों मिश्रित) ४ माशा इन दोनों को एक शीशी में डाल कर आधा घण्टा हिलाते रहें। फिर एक बोतल अर्क सौंफ में मिलाकर डाट लगा कर रखें। इस औषधि को जल में भी बनाया जा सकता है। अर्क सौंफ यदि न मिले, तो परिश्रुत जल लेवें, तो अच्छा है। इस की मात्रा एक तोला है। कैसा ही पेट दर्द हो, निश्चित ठीक हो जाता है। यदि पेट दर्द पुराना हो, मलबद्धता (कब्ज) भी साथ रहती हो, तो इस औषधि में एक बोतल में १ पाव मगनेशिया सल्फ (साल्ट) मिलादें। फिर इसका प्रयोग करें। रंग मिलाना हो, तो टि० कार्ड को मिलादें। इससे लाल रंग आजाता है।

योग (२४) स्वादिष्ट अर्क

नींबू का रस, अदरक का रस, मूली का रस, घीक्वार का रस, जामुन का सिरका प्रत्येक १० तोले, पांचों नमक २-२ तोले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि—इन सबको एकत्र कांच की शीशी में भरकर आठ दिन तक सूर्य की धूप में रखदें। फिर निथार कर छान लें।

उपयोग—तीन माशे से छः माशे, जल में मिलाकर सेवन करने से पेट दर्द, यकृत्, प्लीहा (तिल्ली), विकार, मन्दाग्नि आदि रोग मिट जाते हैं।

योग (२५)

कागजी नींबू का रस १ तोला, मधु, यवक्षार तीन-तीन माशे मिलाकर पिलादें। यदि मधु न मिले तो पुराना गुड़ भी मिला सकते हैं। पेट का दर्द एकदम शान्त हो जाता है।

जम्बीरी द्राव (२६)

जम्बीरी नींबू का रस ५ सेर, भुनी हींग ८ तोले, अजवायन ८ तोले, सेंधा नमक ४ तोले, बायबिडंग ४ तोले, सोंठ ४ तोले, मिर्च काली ४ तोले, पीपल ४ तोले, काला नमक १६ तोले, राई १० तोले।

विधि—इन सबको कूट पीसकर नींबू के रस में मिलाकर मुख बन्द करके २० दिन तक सूर्य के ताप में रखें। ६ माशे से १ तोला तक जल मिलाकर सेवन करें।

गुण—अरुचि, पेट दर्द, वमन, मन्दाग्नि, छाती का दर्द आदि रोग दूर होते हैं।

योग (२७)

नींबू का रस १ तोला, काला नमक २ माशे दोनों को मिला कर गरम करके पिलाने से पेट दर्द शान्त हो जाता है।

योग (२८)

नौशादर ६ रत्ती, सत नींबू ६ रत्ती, सोडा बाईकार्ब १ माशा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन तीनों को मिलाकर कांच अथवा चीनी मिट्टी के पात्र में २॥ तोला अथवा ५ तोले जल मिलादें। उसी समय पात्र में झाग उठने आरम्भ हो जायेंगे। तत्काल रोगी को पिलादें। इससे कठिन उदर शूल (पेट दर्द) शान्त हो जाता है। यह औषधि मिलाकर रखने से वर्षा में पिघल जाती है, अतः अलग-२ ही रखें। आवश्यकता पर मिलाकर प्रयोग करें।

इन्द्रायणादि चूर्ण (२६)

इन्द्रायण के शुष्क फल १०, इन्द्रायण क्षार, सूखा पोदीना, निशोथ, गुलाब पुष्प, अजमोद, अनारदाना, बड़ी इलायची, काला नमक प्रत्येक २ तोला। त्रिफला ५ तोले, सज्जीक्षार, अर्कक्षार, यवक्षार, सैंधा नमक, सांभर नमक १-१ तोला।

विधि—इन सबको कूट पीसकर छानकर एकत्र मिला कर शीशी में भर कर रख लें। इस चूर्ण से प्लीहा, यकृत्, गुल्म, अजीर्ण, बद्धकोष्ठता शीघ्र नष्ट होते हैं।

परिणामशूल चिकित्सा

नारिकेलामृत (१)

पके नारियल की ताजा गिरी १ किलो, गोघृत १ किलो, ताजा नारियल का जल ८ लिटर, गोदूध ८ लिटर, ताजा पके आमले का स्वरस १ लिटर, खांड १ किलो, सोंठ ५०० ग्राम।

निर्माण विधि—नारियल की गिरी पीस लें, अथवा कद्दूकस करलें तथा सोंठ को पीस कर छान कर रख लें, फिर कद्दूकस गोले को घी में भून लें, फिर इसमें गोले का पानी, दूध तथा आमले का रस, सोंठ एकत्र मिला कर कढ़ाही में डाल कर चूल्हे पर अग्नि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पकावें। जब सबका पक कर खोआ सा हो जावे तब खांड मिला कर पकावें, जब घी छोड़ने लगे अग्नि से उतार लें। फिर निम्न प्रक्षेप मिलावें। प्रक्षेप की औषधि पहले से ही कूट कर रख लेनी चाहियें।

सोंठ, मिर्च, पीपल, तेजपात, दारचीनी, छोटी इलायचीदाना, नागकेशर प्रत्येक १-१ तोला। आमला, जोरा सफेद, जीरा काला, धनियां, बंशलोचन, नागरमोथा प्रत्येक १॥-१॥ तोला। इनको कूट पीस छान कर उपरोक्त औषधि में मिला दें, पश्चात् शीतल होने पर १०० ग्राम मधु मिला कर सुरक्षित रख लें।

उपयोग—१० ग्राम से २० ग्राम तक नित्य प्रातः शाम प्रयोग करने से परिणामशूल को शान्त कर देता है। अनुभूत है।

शतावरी मण्डूर

मण्डूर भस्म, शतावर का स्वरस, गो दही प्रत्येक ३०० ग्राम। गोघृत १५० ग्राम। सबको एक कलईदार पात्र में डालकर पकावें। जब हलुआ जैसा गाढ़ा अंगुली के न लगे, हो जाने पर उतार कर रखलें, औषधि तैयार है। इसको भोजन के समय एक-एक ग्राम प्रयोग करें। इससे परिणामशूल शान्त हो जाता है।

नारिकेल लवण

ताजे नारियल का जल ५ लिटर, सेंधा नमक २५० ग्राम। इन दोनों को लोहे की कढ़ाही में डालकर अग्नि पर पकावें। जब पानी सूख जावे, नमक मात्र रह जावे, बारीक पीस कर शीशी में रखलें।

प्रयोग—आधा ग्राम से एक ग्राम प्रातः शाम ताजा जल से सेवन करें। परिणामशूल शीघ्र अच्छा हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्नद्रव शूल चिकित्सा

योग (१)

आमला ताजा सूखा हुआ लेकर कूट पीस छानकर चूर्ण बना लें, इस में से आमला चूर्ण २० ग्राम, मण्डूर भस्म २० ग्राम, शुद्ध मधु ४० ग्राम, सब को मिलाकर रख लें।

मात्रा—३ से ६ ग्राम तक नित्य खाने से अन्नद्रवशूल रोग अच्छा होता है।

योग (२)

पुराना गुड़ ४ तोले, आमला चूर्ण ४ तोले, मण्डूरभस्म १२ तोले, गोघृत २ तोले, मधु असली २२ तोले।

विधि—प्रथम चूर्ण भस्म तथा गुड़ में घी मिलाकर चिकना कर लें, फिर मधु मिलाकर रख लें।

मात्रा –३ माशा औषधि भोजन के प्रथम ग्रास, मध्यम तथा अन्तिम ग्रास के साथ प्रयोग करने से अन्नजशूल नष्ट होता है।

आध्मान (अफारा) रोग चिकित्सा

योग (१)

लहसुन ५ तोले, शुद्ध गन्धक ४ तोले, चित्रक छाल २ तोले, सोंठ २ तोले, काला नमक ४ तोले, भुनी हींग ३ तोले।

विधि—इन सब को बारीक पीसकर नींबू के रस में तीन चार दिन घोटकर दो से चार रत्ती की गोली बना लें। दो से चार गोली अर्क सौंफ अथवा जल के साथ सेवन करने से अफारा शीघ्र दूर हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (२)

अनारदाना ६ तोले, काली मिर्च ६ तोले, सूखा पोदीना ६ तोले, सोंठ १ तोला, भुना सफेद जीरा २ तोले, काला जीरा २ तोले, छोटीपीपल २ तोले, बीज छोटी एला २ तोले, चित्रक २ तोले सत नींबू ३ तोले, गिरी कमलगट्टा ४ तोले, सैंधा नमक १६ तोले, सत पोदीना ६ माशा, मिश्री ६० तोले।

विधि—इन सब को कूट पीस कर चूर्ण बनालें। इस को ३ माशे से ६ माशे तक लेवें। यह जठराग्निदीपक है। अफारा को मिटाता है। पेट के भारीपन को चुटकी में मिटाने वाला चूर्ण है।

योग (३)

लहसुन १० तोले, काला नमक ५ तोले, असली हींग ४ तोले, शुद्ध सुहागा २॥ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, चित्रक मूल २ तोले, अजवायन २ तोले, अजमोद २ तोले, सोया २ तोले।

निर्माण विधि—लहसुन को छीलें, तथा अन्य औषधियों का चूर्ण बनालें फिर लहसुन को बारीक पीसकर मिलालें, फिर अदरक का रस ३२ तोले मिला कर खरल करें, जब अदरक का रस सूख जावे तब नींबू का रस डालकर खरल करें। जब गोली बनाने लायक हो जाये तब मटर समान गोली बनालें।

उपयोग—(१) आमादि अजीर्ण पर गरम जल से प्रातः शाम दिन में दो बार देवें। आमातिसार, विदग्धाजीर्ण, विष्टम्भाजीर्ण, विशूचिका तथा उदर के समस्त शूल रोगों पर उपयोगी सिद्ध हुवा है। अजीर्ण का उपद्रवों पर, आध्मान, बद्धकोष्ठ, हिस्टीरियादि रोगों पर लाभ करता है। यह योग श्री मान्यवर स्वामी शरणमुनि जी कृषक जूनियर हाई स्कूल ग्राम नवादा, पो०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुंघराना, जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) ने प्रेषित किया है। उन्हीं के शब्दो में यह संजीवन प्रयोग लिखा है।

आनाह रोग (कोलंज)

आनाह के लक्षण—जिस रोग में आम (कच्चे दोष) और मल पेट में संचित होकर दूषित वायु से सूख जाते हैं। मल और अपानवायु को बन्द कर देने से जो रोग होता है उसी को आयुर्वेद में आनाह रोग कहते हैं। इस रोग में तृषा, प्रतिशाय, शिर दर्द, जलन, पेट दर्द, सारे शरीर में भारीपन, हृदय में पीड़ा, उदगार का न आना आदि लक्षण होते हैं।

ज्ञातव्य आनाह के रोगी को यदि मल का वमन होने लगे। तब चिकित्सक इस की चिकित्सा न करे। यदि करनी ही पड़े तो उसके परिवार को समझा देवें क्योंकि उस समय यह रोग असाध्य होता है।

आनाह रोग में पाचक जठराग्नि को तीव्र करने वाली औषधि प्रयोग करे। इस में वातनाशक और कब्ज दूर करने वाली औषध का प्रयोग करें अथवा एनीमा करें।

राजरेचन (१)

अमलतास का गूदा आध सेर लेकर नींबू के एक सेर रस में दो दिन तक भिगो दें फिर मलकर रस छान लें। उस में निम्न औषधि मिलाकर योग तैयार करें।

दारचीनी २ तोले, सोंठ २ तोले, काली मिर्च २ तोले, पीपल २ तोले, भुनी हींग २ तोले, दाना बड़ी एला ३ माशे, सेंधा नमक ५ तोले, काला नमक ५ तोले, भुना काला दाना ५ तोले, मुनक्का ५ तोले बीज रहित द्राक्षा नींबू के रस में पीस कर कल्क बनालें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सब द्रव्य कूट छानकर पिसी द्राक्षा में मिलाकर उपरोक्त अमलतास वाले अवलेह में मिला दें। सब की चटनी बनालें।

उपयोग—६ माशे से १ तोला तक रात को सोते समय भोजन के १॥ घण्टे पश्चात् अथवा प्रातःकाल सेवह करें। यह योग वातानुलोमन है और सुखद रेचन है।

योग (२) आनाहभेदनिका वटी

निशोथ, छाल बड़ी हर्ड़, कृष्ण निशोथ इन तीनों को समान भाग लेकर कूट कपड़छान करके चूर्ण बनालें। फिर सेहुंड के दूध में भावना देकर दो-दो माशा की गोली बनालें। यदि कृष्ण निशोथ न मिले तो सफेद निशोथ ले लेवें। प्रातः काल एक गोली गोमूत्र से लेने से आनाह रोग नष्ट होता है।

फलवर्ति (३)

मैनफल, पीपल छोटा, कूठ बच, सफेद सरसों। इन पांच द्रव्यों को समान भाग लेकर बारीक पीस लें। इन सबके समान गुड़ लेकर उसमें मिला कर कूट कर छोटी उंगली के समान वर्त्ति बनालें। यह वर्त्ति आनाह रोगी के मल के स्थान में रखने से आनाह रोग दूर हो जाता है।

गुल्म (गोला) रोग चिकित्सा

पक्वाशय में पित्ताशय में कफाशय में, स्वतन्त्र या परतन्त्र रूप से जब वायु स्पर्श से जानने योग्य पिण्डाकर रूप (गांठ के आकार में) में हो जाता है। तब दोषानुसार इसके वातगुल्मादि नाम होते हैं। यह हृदय और नाभि के बीच में चल अथवा गोल घटने व बढ़ने वाली गाँठ को गुल्म रोग कहते हैं। यह गुल्म पांच प्रकार का होता है। (वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रक्तजन्य) गुल्मों के पांच स्थान हैं। यथा-वस्ति, नाभि, हृदय और दोनों पार्श्व में होता है। वातगुल्म में वायु स्वतन्त्र और अन्य गुल्मों में परतन्त्र रहता है। यही वायु जब पित्ताशय में पित्ताश्रित होकर रहे तब पित्तगुल्म कहलाता है। पक्वाशय में स्वतन्त्र रूप से रहने पर वातगुल्म, कफाशय में कफ के आश्रित रहने पर कफ गुल्म होता है।

गुल्म रोग होने के कारण

कोष्ठ में वायु के कुपित होने के कारणः—

१. पुरीष अर्थात् कफ और पित्त इनके अति स्राव से अर्थात् इनके अधिक बढ़कर रुकावट पैदा करने से।

२. मल, मूत्र के उपस्थित वेगों के रोकने से।

३. चोट लगने से।

४. अति दबाव पड़ने से।

५. रूक्ष खान-पान के अति सेवन करने से।

६. शोक से।

७. वमन विरेचन के मिथ्याचरण से।

८. विषम चेष्टाओं से कोष्ठ में वायु कुपित हो जाता है। यह कुपित वायु कफ और पित्त को दूषित और अपने स्थान से विचलित करके मार्गों को रोक लेता है। इससे हृदय, नाभि, पार्श्व, उदर तथा वस्ति में शूल उत्पन्न होता है। मार्ग के रुकने से वायु नीचे गुदा की ओर नहीं जा सकता।

गुल्म के असाध्य लक्षण

१. जिस गुल्म रोग में श्वास, ज्वर, वमन, अतिसार से पीड़ित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और जिस के हृदय नाभि, हाथ और पैरों में सूजन हो गई हो, वह गोले का रोगी असाध्य कहा है।

२. जिस गुल्म रोगी के सारे पेट में गुल्म धीरे-धीरे फैल जाये और धातुओं में उसकी जड़ पहुंच जाए, शिराओं से बन्धा हुआ गुल्म जब कछुवे की पीठ के समान हो जाता है। उससे दुर्बलता, अरुचि, कास, वमन, बेचैनी, ज्वर, तृषा, तन्द्रा, प्रतिशाय हो जाता है। वह असाध्य रोगी होता है।

३. श्वास, शूल, तृषा, गुल्म, ग्रन्थि का सहसा लोप हो जाना और दुर्बलता इन लक्षणों से युक्त रोगी मर जाता है।

गुल्म चिकित्सा में जानकारी

गुल्म रोग की चिकित्सा करते समय सबसे पहले वात दोष को शमन करने के लिए ध्यान रखें।

२. जब गुल्म रोग की चिकित्सा करने के लिए दोषों का निदान न हो सके, तो उस समय वात दोष को शमन करने का यत्न करना चाहिए।

३. वात गुल्म की चिकित्सा करते समय प्रारम्भ में औषधियों से स्वेद करें। एरण्ड तैल का विरेचन देवें अथवा आवश्यकता के अनुसार एनीमा करें।

४. पित्तगुल्म में विरेचन लाभ करता है। पुराने गुड़ में बड़ी हर्ड़ की छाल मिलाकर देवें अथवा त्रिफला क्वाथ के साथ निशोथ का प्रयोग करायें। इससे अतिसार होकर गुल्म को शान्त कर देता है। यदि पित्तगुल्म में तीव्र दाह हो, दर्द और शूल के कारण निद्रा न आती हो, दिल की घबराहट हो, ज्वर हो, स्पर्श करने से गर्म प्रतीत हो, रक्तवर्ण हो तो जानो गुल्म पकने वाला है। उसकी चिकित्सा विद्रधि की तरह करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. कफ के गुल्म रोगी को वमन करायें, भोजन न देवें, पसीना निकालें। काले तिल, एरण्ड बीज की गिरी, सरसों इनको सिरका अथवा गोमूत्र में पीसकर गरम करके लेप करें। लोहे का टुकड़ा गरम करके सेक करें।

६. रक्तगुल्म की चिकित्सा दस मास व्यतीत होने पर ही करें। क्योंकि १० मास व्यतीत होने पर यह निश्चय हो जाता है कि स्त्री को गुल्म रोग है अथवा गर्भ है। दूसरी बात १० मास के पश्चात् गुल्म पक जाता है। बिना पके गुल्म शल्यक्रिया के योग्य नहीं होता। प्रायः इस की चिकित्सा शल्यकर्म से ही होती है।

७. चिकित्सक का कर्त्तव्य है कि गुल्मरोगियों की इस प्रकार की चिकित्सा करे जिससे वात का शमन होवे। परिश्रम, अधिक भ्रमण, रात को जागना, सूर्य की धूप में अधिक भ्रमण करना। ब्रह्मचर्य का न रखना इत्यादि वर्जित है।

८. गुल्मरोगियों को प्रायः कब्ज, अफारा, अपानवायु का न निसरना आदि पीड़ाएं होती हैं। इनको शान्त करने के लिए गरम दूध में अदरक का रस १ तोला मिलाकर सेवन करायें। बोतल में गरम जल डालकर पेट पर सेकने से लाभ होता है।

योग १

असली भुनी हींग, बच, अम्लवेत, यवक्षार, सज्जीक्षार, सैंधा नमक, नौशादर प्रत्येक समभाग।

उपयोगः—सब को कूट छानकर रख लें। तीन से छः माशे गरम पानी से नित्य लेने से गुल्म रोग ठीक हो जाता है।

वज्रक्षार चूर्ण (२)

पाँचों नमक, यवक्षार, कल्मीशोरा, नौशादर, सुहागा, सज्जीखार।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिः—इन सब को दो-दो तोले लेकर कूटकर तीन दिन तक थूहर के दूध में खरल करें। जब सूख जाये तब आक के दूध में खरल करें। दो दिन तक खरल करें जब गोला सा बन जाये तब इस गोले को आक के पत्तों में लपेट देवें जिससे गोला दिखाई न देवे। ऊपर धागा बान्ध देवें। फिर मिट्टी के पात्र में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट में उपलों की आग में फूंक देवें। शीतल होने पर निकालकर पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

उपयोगः—एक माशा यह चूर्ण तथा तीन माशे हिंग्वादि चूर्ण मिलाकर ऊपर से अर्क सौंफ अथवा गरम पानी से सेवन करें अथवा कुमार्यासव के साथ देवें। यह सफल प्रयोग है।

हिंग्वादि चूर्ण (३)

शुद्ध हींग, यवक्षार, सज्जीक्षार सेंधा नमक, काला नमक, नौशादर, पीपल छोटी, पीपलामूल, चित्रक छाल, काली मिर्च, कचूर, धनियां, समाकदाना, बच, अजमोद, पोहकरमूल, सौंठ, काला जीरा, हरड़ छाल, पाढ़ल गिरी करंजुवा।

विधिः—सब को समान भाग लेकर कूटकर चूर्ण बना लें। इसको तीन चार दिन निम्बू के रस में खरल करके रखें अथवा जंगली बेर के समान गोली बनालें। इसकी मात्रा तीन से छः माशे तक की है।

गुणः—इसके प्रयोग से पेट दर्द, अफारा, पेट में गुड़गुड़ शब्द का होना आदि दूर होते हैं। संग्रहणी के रोगो के उपद्रवों पर इस का प्रयोग गौ छाछ से दिन में तीन बार देवें। अत्यन्त लाभदायक है। यही उपरोक्त वज्रक्षार चूर्ण के साथ अनुपान देने से गुल्म रोग नष्ट हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भस्माकर चूर्ण (४)

सैंधा नमक ४ तोला, काला नमक ४ तोले, बिड़नमक ४ तोले, समुद्र नमक ४ तोले, नली नमक ४ तोले, यवक्षार ४ तोले, सज्जी-क्षार ४ तोले, शुद्ध सुहागा ४ तोले, आक के पत्ते १०० नग, धतूरे के पत्ते २४ नग, कनेर के पत्ते ६४ नग, थूहर का क्षार १० तोले, घीक्वार का रस ६४ तोला, कटेरी फल १०० नग, इन्द्रायण फल ४० नग।

विधि निर्माण—इन सबको एक हाण्डी में भरकर ऊपर से आक का दूध इतना डालें कि सब दवा डूब जावे। पश्चात् आग पर रख कर भस्म कर डालें। फिर निम्न औषधियां मिलावें—

सोंठ १॥ तोला, काली मिर्च १॥ तोला, पीपल छोटा १॥ तोला, भुना जीरा १० तोला, देशी अजवायन २० तोला, सरसों का तैल २० तोले।

इन को भी यथा योग कूट पीसकर उपरोक्त में मिलादें, फिर इसमें संहजने के पत्तों के रस अथवा छाल और पत्तों के क्वाथ की तीन भावना देवें। फिर बिजौरे नींबू (गलगल, खट्टा) के रस की तीन भावना देवें, फिर नींबू के रस की तीन भावना गरम करके सुखालें, बस औषध तैयार है।

मात्रा—४ माशा गरम पानी के साथ।

गुण—पेट के समस्त विकार, यकृत्, प्लीहा, पाचन विकार, मन्दाग्नि, अपच, अजीर्ण, खट्टी डकार, वमन, जी मिचलाना, परदेश का जल अनुकूल न आने पर, वर्षा जल के विकार, प्रभृति अनेक रोग दूर हो जाते हैं। गुल्म रोग में शीघ्र प्रभाव करता है। इसका प्रयोग अवश्य करके देखिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (५)

हिंग्वष्टक चूर्ण अथवा कांकायन गुटिका कुमार्यासव के साथ देने से गुल्म में तत्काल लाभ होता है।

योग (६)

करञ्ज के बीज की सफेद गिरी को पीसकर कपड़छान करके ईसबगोल लुआब के साथ रुद्राक्षफल के समान गोली बनालें। वायुगोले पर उष्ण जल से देते ही लाभ होता है और दस्त भी साफ आता है।

यकृत् प्लीहा (जिगर और तिल्ली)

कारण—अति भोजन करने से, घोड़ा, गाड़ी की सवारी अथवा अति घूमने से, संक्षोभ उत्पन्न होने से, मैथुन से, भार उठाने से, अधिक मुसाफिरी से, वमन से, रोगजन्य कृशता से प्लीहा रोग हो जाता है।

"वामपार्श्वाश्रितप्लीहांच्युतस्थानात्प्रवर्धते" (चरक) बायें पार्श्व में स्थिति प्लीहा अपने स्थान से खिसक कर बढ़ने लगती है। इसकी वृद्धि में कारण बढ़े हुए रक्त और रस आदि हैं जो कि अपने आश्रय को बढ़ाते हैं।

प्लीहा के लक्षण

रोगी की प्लीहा (तिल्ली) प्रथम कठिन और अष्ठिला (लोहे का गोला या छोटा पत्थर) के समान होती है। पीछे बढ़कर (कच्छपसंस्थान उपलभ्यते) कछवे के बराबर हो जाती है। इसकी भी उपेक्षा करने से प्लीहा धीरे-धीरे बढ़कर कुक्षि (कोख) पेट ग्रहणी के चारों ओर बढ़कर उदर रोग को उत्पन्न करती है। इसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक भयंकर उपद्रव हो जाते हैं। प्लीहा (तिल्ली) की भाँति.....

एवमेव यकृदपि दक्षिणपार्श्वस्थे कुर्यात् तुल्यहेतुलिङ्गौषधत्वात्तस्य प्लीहजठर एवावरोध इत्येतद्यकृत्प्लीहोदरं विद्यात ॥

यकृत भी दक्षिण पार्श्व में बढ़कर उपरोक्त लक्षणों को उत्पन्न कर देता है। इसके कारण और लक्षण तिल्ली के समान हैं तथा औषध भी उसी की भांति है। इसका प्लीहोदर में ही अन्तर्भाव होता है। इसी को यकृतोदर जानो।

साध्य असाध्य लक्षण

प्रायः सभी उदर रोग उत्पन्न होने के साथ कष्टसाध्य होते हैं। यदि रोगी बलवान् हो, पानी उत्पन्न न हुआ हो, रोग नया हो, तो यत्नपूर्वक चिकित्सा करने से रोग साध्य है।

(१) जिस रोगी के नेत्र सूज जायें, त्वचा क्लिन्न (चिकनी) और पतली हो, बल, रक्त, मांस और अग्नि क्षीण हो जाये। वैद्य ऐसे रोगी की चिकित्सा न करे।

(२) यदि हृदय आदि सब मर्म स्थानों पर शोथ हो जाये, रोगी को श्वास, हिचकी और मूर्च्छा, अरुचि, वमन तथा अतिसार हो, उस रोगी को उदर रोग मार ही देता है। वैद्य इसको असाध्य जाने।

चिकित्सा

तिल्ली के रोगी को कब्ज न होने पाये। रोग के प्रारम्भ में रेचक औषधियां अच्छा रहता हैं। किन्तु जब यह रोग जीर्ण (पुराना) हो जाता है तब, उस अवस्था में दस्तावर औषधि नहीं देनी चाहिये। क्योंकि उस अवस्था में उदर के बहुत से रोग जलोदर आदि होने का भय रहता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) यदि तिल्ली के रोगी को रक्तातिसार (पेचिस) शोथ, पाण्डु, कामला आदि रोग हो जायें तो प्लीहा की औषधि के इन रोगों की भी दवा देवें।

(२) यदि तिल्ली के साथ ज्वर हो. तो ज्वर और तिल्ली दोनों की औषधि देवें।

(३) तिल्ली के स्थान पर दर्द हो, तो वातनाशक लेप करें।

योग (१)

सज्जीखार, नौशादर, यवक्षार, कल्मीशोरा, कालानमक, हराकसीस, मुनी फिटकरी, शु० सुहागा प्रत्येक ६ माशे। साल्ट (मैगसल्फ) २० तोला, बोतल में जल ३ पाव।

विधि—सब औषधियों को पीस कर रखलें, फिर पानी को गरम करके उसमें मिलालें। शीतल होने पर छान लें। फिर शुद्ध औषधि को ऊपर से निथार ले, नीचे का मल फैंक दें, बस औषध तैयार है। बोतल में १५ बूंद गन्धक का तेजाब भी मिलालें।

उपयोग – प्रातः शाम दो-दो तोला औषध पिलावें, यदि इससे अधिक दस्त हो जायें तो दवा की मात्रा कम करदें। यदि किसी को दस्त न आवें, तो मात्रा बढ़ा देवें। इसके प्रयोग से काले रंग के दस्त होते हैं। पथ्य में दूध, चावल, गेहूं, जौ का दलिया, मूंग की दाल, सुपाच्य भोजन, हरा शाक आदि खाने को देवें। इससे जिगर तिल्ली एक बोतल में ही कट जाती हैं। किसी-किसी को तीन बोतल पिलानी पड़ती हैं।

योग (२)

नौशादर १ तोला, कल्मीशोरा १ तोला, शंख भस्म १ तोला, शु० कसोस हरा १ तोला, शु० मुहागा १ तोला, अर्क क्षार १ तोला, चने का क्षार १ तोला, काला नमक ५ तोला।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि—इनको कूट पीसकर रख लें। १॥-१॥ माशा प्रातः शाम गोमूत्र से सेवन करें। गोमूत्र को छान कर प्रयोग करें। दिन में दो तीन बार खिलायें। यदि कोई रोगी गोमूत्र लेने में संकोच करे, तो सब दवाओं के समान मैगसल्फ (साल्ट) मिलाकर रख लेवें और गरम पानी से प्रयोग करें। वैसे गोमूत्र ही उत्तम रहता है। इससे काले रंग का शौच आता है।

गुण—इससे बढ़ी हुई तिल्ली, यकृत् की गांठ शोथ, वातगुल्म आदि रोग ठीक होते हैं।

योग (३)

मैगसल्फ (साल्ट) १० तोला, शुद्ध हरा कसीस १० तोला, कल्मीशोरा ५ तोला, कालीमिर्च २॥ तोला, सेंधानमक २॥ तोले, दाना बड़ी इलायची १ तोला, नौशादर २॥ तोले। इन सबको कूटकर नींबू के रस की एक भावना देवें। सूखने पर गन्धक तेजाब इतना मिलावें, जिससे औषधि थोड़ी सी गीली हो जावे। मामूली सी गीली होवें, कुछ शुष्क सी रहे। बस औषधि तैयार है।

गुण—दिन में दो तीन बार १॥-१॥ माशा शीतल जल से प्रयोग करें। यकृत् शोथ, अग्निमान्द्य, कब्ज, उदरशूल, रक्ताल्पतादि रोग दूर होते हैं।

योग (४)

मण्डूर भस्म १ तोला, शंख भस्म १ तोला, लवण भास्कर १० तोला, कुमार्यासव २ पौंड।

सेवन विधि—मण्डूर भस्म और शंख भस्म को मिलाकर रखें, इस की मात्रा ४ रत्ती की है। प्रातः शाम इसको मुख में डाल कर ऊपर से छाछ में तीन माशा लवणभास्कर चूर्ण मिला पीलें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्मायासव भोजनोपरान्त दो तोले समान जल मिलाकर आध घण्टे पश्चात् पीवें। गरिष्ट आहार न करें। इससे जिगर (यकृत्) ठीक हो जाता है।

योग (५)

सज्जीखार, नौशादर, यवक्षार, कल्मीशोरा, कालानमक, शुद्ध फिटकरी, शुद्ध सुहागा प्रत्येक ६ माशा, साल्ट (मैग सल्फ) २० तोला।

विधि—सबको पीसकर तीन पाव गर्म जल में मिलाकर रख लें, शीतल होने पर निथारकर छानकर रख लें।

उपयोग—प्रातः शाम दो, दो तोले पिलावें। सुपाच्य भोजन देवें। यकृत्, प्लीहा में लाभ होगा।

शंखद्राव (६)

जम्बीरी नींबू का रस ६ सेर, काकड़ासींगी तीन तोले, सज्जीखार २ तोले, सेंधानमक ५ तोले, काला नमक ५ तोला, नौशादर ८ तोले, शुद्ध हींग ८ तोले, यवक्षार ८ तोले, शंख भस्म १ तोला।

निर्माण—कूटने पीसने योग्य दवाओं को कूट कपड़ छान करलें। पश्चात् चीनी मिट्टी अथवा कांच के पात्र में जम्भीरी नींबू के रस को भरकर सब औषधि मिलाकर रख दें। १५ दिन धूप में रखें, फिर छानकर कार्य में लावें।

गुण—प्लीहा, यकृद् विकार; पेट दर्द, उदरविकार नाशक है।

योग (७)

नौशादर दस ग्राम, कल्मीशोरा दस ग्राम, हरा कसीस दस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम, साल्ट २५० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को पीसकर रख लें। फिर तीन पाव पानी उबाल कर यह औषधि उसमें मिलादें, शीतल होने पर गन्धक तेजाव १५ बूंद मिलाकर रख छोड़ें। फिर निथार कर बोतल में भर लें। पश्चात् टिंचर कार्ड को ६ माशा मिला दें, जिससे सुन्दर रंग हो जायेगा।

उपयोग—प्रातः शाम दो, दो तोले सेवन करें। इस से काले रंग के दस्त आते हैं। यह यकृत् प्लीहा की उत्तम औषधि है।

योग (८)

एक बड़ी बोतल लेकर उसे आधी बोतल पानी की भरलें, फिर उसमें मीठा सोडा ४ तोले मिलालें। घुलने के बाद उसमें फेरीएट अमोनियम साईट्रास (यह अंग्रेजी औषधि है) एक तोला मिलाकर हिला देवें। फिर बोतल को पानी से भर देवें। पश्चात् तेजाब गन्धक पन्द्रह बीस बूंद धीरे धीरे मिलावें, क्योंकि इसके डालने से उबाल सा आता है। औषधि बोतल से बाहर निकल जाती है। अतः सावधानी के लिये बोतल को किसी पात्र में रख लें, ताकि जो निकले, उसे दोबारा बोतल में भर लें। अथवा एक एक बूंद करके मिलावें, बस दवा तैयार है।

गुण—इसके सेवन से यकृत्, प्लीहा, पेट दर्द दूर होते हैं। प्रातः शाम दो, दो तोला पिलावें।

योग (९)

कागजी नींबू का रस १ बोतल अर्थात् ३ पाव, पांचों नमक, ५ तोले, कौड़ी भस्म ६ माशा, शंख भस्म ३ माशे, कासिस भस्म ३ माशे, लोह भस्म तीन माशे, यवक्षार तीन माशे, पुनर्नवाक्षार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन माशा, काकमाचीक्षार तीन माशा, चने का खार तीन माशे, स्नुहीक्षार दो माशा।

निर्माण विधि—सब को पीसकर बोतल में डालकर धूप में रखदें। इनको मिलाते समय उफान सा आता है, सावधानी रखें। धूप में एक सप्ताह तक रखना चाहिये। अवस्था और बल के अनुसार एक से दो तोले की मात्रा में दोनों समय सेवन करें। यह उदर रोगी को जीवनदान देनेवाला योग है। इस की दो तीन बोतल सेवन करने से उदर के सारे उपद्रव शान्त हो जाते है।

गुण—वैसे तो यह योग साधारण सा प्रतीत होता है। उदर सम्बन्धी अनेक रोगों में परमाणु के समान चोट पहुँचाता है। इस के सेवन से यकृतोदर, प्लीहोदर, हर प्रकार के गुल्म, मांसपिण्ड, मन्दाग्नि, अरुचि, ग्रहणी आदि उदर रोग नष्ट होते है। मात्रा बलानुसार घटा बढ़ा सकते हैं।

योग (१०)

शूल रोग में लिखा योग नं० २४ स्वादिष्ट अर्क उत्तम है। गुल्म रोग में लिखा भस्माकर चूर्ण योग नं० ४ पर लिखा हुआ यकृत् प्लीहा में लाभदायक है और इस के साथ भोजनोपरान्त कुमार्यासव पिलावें।

यकृत् प्लीहा शोथ पर लेप (११)

अमलतास का गूदा एक तोल, काला जीरा १ तोला, असगन्ध १ तोला, एलवा १ तोला इन सब को पीसकर गर्म जल में घोट कर यकृत् प्लीहा के शोथ पर और उसके आस पास लेप करें। यह लेप दिन में दो बार मध्याह्न और रात्रि में सोते समय करें। तीन दिन में लाभ होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—कब्ज, भूख न लगना, आदि रोगों में लाभ करता है। यदि लाभ होने में कमी रह जावे तो दो दिन पीछे लेप करें। लगातार लेप न करें। पथ्य में मौसमी का रस अथवा गोदूध देवें। यदि अधिक क्षुधा लेगे तो घोलिया (यवागू) आदि सुपाच्य भोजन देवें। इस लेप के साथ कोई खाने वाली दवाओं में से जो लिखी हैं, सेवन करायें। अथवा द्राक्षासव, कुमार्यासव, पुनर्नवारिष्ट, लोहासव मिलाकर इन चारों की मिली मात्रा दो तोले तथा पानी दो तोले मिलाकर पिलावें।

लेप शोथ पर (१२)

असली मधु २॥ तोले लेवें कहीं बाजारू नकली शहद न ले बैठें। फिर कलई का चूना २॥ तोला लेवें।

विधि—एक लट्ठे का नया चिकना कपड़ा लेवें, जितना तिल्ली की गाँठ पर आजावे। उस पर शहद फैलाकर चूना डाल दें। आपस में मिलादें, मिलाते समय ध्यान रखें, यह बहुत गर्म हो जाता है। किसी लकड़ी से मिलाकर गर्म २ ही लेप कर दें। यह दश पन्द्रह मिनट में अच्छी तरह चिपट जाता है। इस के साथ भी उपरोक्त लेप के समान खाने की औषधि देवें।

उदर रोगों पर स्नुही प्रयोग (१३)

स्नुही (थूहर) का ३, ४ इन्च मोटा और दस इन्च लम्बा डण्डा काटकर उसके ऊपर से छाल कांटे चाकू से काटकर साफ करलें। फिर जल से भीगा कपड़ा लपेट कर अग्नि पर सेकें। सेकते समय उस डण्डे को घुमाते रहें, जब नर्म हो जावे, कपड़ा हटा कर निचोड़ लें, उसमें से स्वरस निकलेगा। इस की मात्रा ५ तोला से दस तोला है। प्रातःकाल २१ दिन देते रहें। इसे कम अथवा अधिक दिन भी प्रयोग कर सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—कफोदर, जलोदर, वातोदर, प्लीहोदर, आदि रोगों पर अच्छा कार्य करता है। इस से प्रारम्भ में दो तीन बार मल काले रंग का आयेगा। घबराना नहीं, निःसंकोच सेवन करते रहें। साथ ही आरोग्यवर्धनी वटी की दो तीन गोली प्रातः शाम देवें। इससे पत्थर जैसे कठोर पेटवाले के सब दोष निकल जाते हैं और पेट कोमल हो जाते हैं। बड़ा उत्तम प्रयोग है। इससे उदररोगी अच्छे हो जाते हैं।

योग (१४)

मगनेशिया (सल्फ) ५० ग्राम, फिटकरी ६ ग्राम हराकसीस ६ ग्राम, कल्मीशोरा ६ ग्राम, नौशादर ६ ग्राम, मीठा सोडा ६ ग्राम, सत्व नींबू ३ ग्राम।

विधि—तीन पाव जल गर्म कर एक बोतल में डालकर उपरोक्त औषधि पीसकर मिलादें। हिलाकर रखदें। जब निथर जावे छानकर १५ बूंद गन्धक का तेजाब मिलाकर रखदें। औषध तैयार है।

उपयोग—प्रातः शाम दो दो तोले सेवन करायें। इस से काले रंग के दस्त आते हैं। यकृत्, प्लीहा और दूसरे पेटदर्द शान्त हो जाते हैं। यह योग स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश गुरुकुल झज्जर से प्राप्त हुआ।

जलोदर चिकित्सा

लक्षण

नानावर्णराजिसिरासन्ततमुदकपूर्णदृतिक्षोभसंस्पर्शं भवति, एतदुदकोदरं विद्यात् (चरक)

अर्थ—उदर पर नाना प्रकार की रेखायें दिखाई देती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी से भरी मशक के समान उदर का स्पर्श होता है। एक ओर टकोरने से तरंग दूसरे पार्श्व में आती हैं। इसको उदकोदर जानो।

योग (१)

उदर रोगों पर स्नुहि प्रयोग नं० १३ का यकृत् प्लीहा में लिखा है, इस पर अत्युत्तम है।

योग [२]

उशारा रेवन्द एक तोला, क्रिम आफ टार्टर ८ तोला दोनों को मिलाकर रख लें। एक से दो माशा जितना रोगी सहन कर सके प्रातः शाम अर्क सोंफ अथवा परिश्रुत जल के साथ देवें।

[योग ३]

उशारा रेवन्द २॥ माशा, कल्मी शोरा २॥ तोला, सौंफ का अर्क, २० तोले।

मात्रा—एक एक तोला दिन में तीन चार बार सेवन करायें, दिन में पीने के लिए सोंफ का अर्क ही देवें अथवा उबला हुआ पानी पिलावें। कुछ दिन में ही आश्चर्यजनक लाभ दीखता है।

हृद्य रोग चिकित्सा

कारण—अत्यन्त उष्ण और भारी कड़वे, खट्टे पदार्थों के अधिक सेवन से, शक्ति से अधिक परिश्रम करने से, चोट आदि के लगने से, पहला भोंजन पचे बिना दूसरा भोजन करने से और चिन्तादि से हृदय रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

इस रोग को आयुर्वेद ने पाँच भागों में विभक्त किया है और उनके लक्षण भी दोषानुसार भिन्न भिन्न बताये हैं। यथा—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात में हृदय में शूल चलना, पित्त में घबराहट और शरीर में गर्मी बढ़कर बेचैनी होना। कफप्रधान में हृदय पर भारीपन सा प्रतीत होता है। कृमियों के होने से जी का मिचलाना, सूई सी हृदय में चुभना; आंखों के आगे अंधेरा होना आदि लक्षण होते हैं। हृदय की धड़कन बढ़ जाना।

असाध्य लक्षण

दिल के रोगों में उपद्रव हो जाना, अर्थात् तृषा, मुंह का सूखना, उबकाई आना, हृदय में अत्यन्त पोड़ा होना, यह हृदय रोगों में उपद्रव हैं। यदि इन का शमन न हो, तो यह रोंगी को मार देते हैं।

चिकित्सा

योग (१)

अर्जुन वृक्ष की छाल लेकर पीसकर छानकर रखलों, ३ माशे चूर्ण, गो दूध में घी एक तोला मिश्री मिलाकर प्रातः निराहार सेवन करें।

उपयोग—पहिले दवा को खाकर ऊपर से दूध पीवें। थोड़े ही दिनों में लाभ होगा। हृदयदौर्बल्य (दिल की कमजोरी), घबराहट, धड़कनादि बन्द होकर दिल में शक्ति उत्पन्न होती है।

योग (२)

अर्जुनछाल का वस्त्रपूत चूर्ण, तीन तोले, जहर मोहरा पिष्टी तीन माशे, संगेयशब तीन माशे, अकीक भस्म तीन माशे, मिश्री तीन तोले सबको मिला एकत्र खरल कर रख लें। दो रत्ती से एक माशा तक प्रातः शाम गोदूध के साथ सेवन करें। हृदय रोग में विशेष लाभकारी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (३)

औटाया हुवा गोदूध १ पाव, खांड २॥ तोले, अर्जुनछाल का चूर्ण २ माशा। तीनों को मिलाकर नित्यप्रति प्रातः निराहार १ वर्ष तक पीते रहने से हृदयरोग का डर नहीं रहता, और यदि दर्द हो तो उसका शमन हो जाता है और हृदय वलवान् रहता है।

योग (४)

अर्जुनछाल एक पाव, जल ४ सेर में काढ़ा करें। जब एक सेर क्वाथ शेष रहे, तब छानकर पुनः कढ़ाही में डालकर आग पर पकावें। जब रबड़ी जैसा गाढ़ा हो जावे, तो समान भाग खांड मिलाकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनाकर रखें। एक से दो गोली गोदूध से प्रातः सायं सेवन करें। यह हृदय रोगों पर लाभकारी है।

योग (५)

कभी कभी हृदय रोग में उदर में वायु भर जाती है और उसके कारण से हृदय की क्रिया अव्यवस्थित होकर श्वास चलने लग जाता है। जैसी स्थिति श्वास रोग में हो जाती है। उस समय कपूर देशी की दो रत्ती की मात्रा प्रयोग करें। इसी मात्रा के अनुसार दिन में तीन मात्रा दें। इसी से प्रसूति काल का उन्माद तथा दूसरे उन्माद रोगों में भी लाभ होगा।

योग (६)

गेहूं और अर्जुनछाल को बकरी के दूध में पकावें, दूध चार गुना होना चाहिये। जब दूध का मावा बन जावे, तो गोघृत में भून लें। इसी में मिश्री और शहद मिलाकर सेवन करें। शक्ति के अनुसार एक तोला से ढ़ाई तक सेवन करने से अति उग्र हृदय रोग मिट जाता है। इसमें गेहूं तथा अर्जुन की छाल पीसकर दूध में मिलावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (७)

किशमिश हरी ताजा आधी छटांक, जल २ छटांक। दोनों को मिलाकर शाम को चन्द्रमा के प्रकाश में रखें। प्रातःकाल प्रवाल पिष्टी अथवा भस्म के साथ सेवन करें। इससे हृदय रोग शांत होता है।

योग (८)

गाजर को भूनकर उसके भीतर की गुठली निकाल कर ऊपर का छिलका छीलकर साफ करके पीसकर चटनी बनालें। फिर इस को चीनी मिट्टी के पात्र में डालकर रात्रि को चांद की चांदनी में रखें। प्रातः मिश्री अथवा खांड मिलाकर पेट भरकर खावें। आशातीत लाभ होगा।

योग (९)

गाजर एक सेर को कद्दूकस करके गोरखमुण्डी ५ तोले, गाजुवां के फूल ५ तोला, सफेद चन्दन २ तोले इनको तीन सेर जल में भिगोदें। बारह घण्टे भीगने के पश्चात् कढ़ाही में आग पर चढ़ा कर क्वाथ बनावें। डेढ़ सेर क्वाथ शेष रहने पर उतारकर छान लेवें। इस छने हुए क्वाथ में चारों मगज ५ तोले, बादाम की गिरी ५ तोला, पोस्तदाना १० तोला, छोटी इलायचीदाना ३ तोला, मुरब्बा सेव १ पाव, मुरब्बा आमला १ पाव इन सब को कुण्डी में पीसें और पीसते समय अर्क गावजुवां तथा अर्क गुलाब थोड़ा-थोड़ा डालते जायें तथा पीसते जायें जब तक दोनों अर्कों को एक एक बोतल समाप्त न हो जायें। अब उपरोक्त क्वाथ तथा अर्क जिस में चारों मगज पीसे गये हैं, छानकर मिलाकर आग पर रखें तथा २॥ सेर खांड मिला शर्बत विधि से शर्बत बनालें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवन विधि—आवश्यकता पर २॥ तोले से ५ तोले तक दुगुना जल अथवा गोदूध मिलाकर पीवें। दिन में तीन बार नित्य सेवन करें। सेवन करने से पूर्व, मस्तिष्क और पेट शुद्ध कर लेवें।

गुण—यह शर्बत उष्ण ऋतु और उष्ण देश में अमृततुल्य कार्य करता है। यकृत् दौर्बल्य, हृदय की धड़कन, बेचैनी, घबराहट, गर्मी खुश्की के कारण निद्रानाश, नेत्रों के सामने अन्धकार प्रतीत होना। पक्वाशय की कमजोरी के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

योग [१०] शर्बत

ताजा पके आमले का रस १ पाव, मिश्री २ पाव शर्बत विधि से शर्बत बनालें। दो से चार तोले जल में मिलाकर सेवन करें।

गुण—हृदयदौर्बल्य तथा हृदयावरोध को दूर करता है। इस के पीने से हृदय फेल नहीं होता।

योग [११]

सफेद जीरा छः माशा जल में पीस छानकर मिश्री मिलाकर पीवें। कुछ दिन लगातार सेवन करने से पूर्ण लाभ होगा।

योग [१२]

बंशलोचन असली ४ तोला, इलायची छोटी २ तोले, सत गिलोय असली ३ तोला, गुठली बेर १ तोला, जिह्वारहित गिरी कमल गट्टा १ तोला, कूजा मिश्री १६ तोला, संगे यशब भस्म ६ माशा, अकीक भस्म ६ माशा, जहरमोहरा खताई १ तोला, रजत भस्म ६ माशे, मुक्ता भस्म ३ माशा, स्वर्णमाक्षिक भस्म १ तोला।

विधि—इन सब को यथाविधि कूट छानकर मिलाकर औषध तैयार करें।

मात्रा—एक माशा दिन में तीन बार फलों के रस में प्रयोग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें अथवा मुरब्बा आमला १ तोला खूब पीसकर एक मात्रा मिला खिलावें तथा ऊपर से दूध पिलावें।

गुण—यदि रोगी पर अकस्मात् दिल फेल होने का आक्रमण हो जाये तो रोगी को सीधा (चित्त) लिटा देवें, हाथ पांव तक न हिलावें इससे लाभ हो जाता है। यह आवश्यकता पड़ने पर भरोसे की दवा है और अनुभूत है।

योग [१३]

गुलाब के फूलों का गुलकन्द १ तोला, कपूर देशी १ रत्ती, इन दोनों को एक अथवा दो चांदी के वर्कों में लपेटकर खिला देवें। ऊपर से अर्क गुलाब अथवा अर्क गावजुवां अथवा रूह केवड़ा पिलावे। हृदय की कमजोरी दूर करने का प्रसिद्ध योग है।

योग [१४]

उत्तम प्रवालशाखा लाल रंग की लेवें (यदि इस में सफेद और खोखली शाखा होवे तो निकाल देवें) फिर इस को गर्म पानी से धोवें तथा सुखा लें। फिर इसे हमामदस्ते में डालकर कूटकर बारीक कर डालें। अब इस को न घिसने वाली खरल में डालकर अर्क गुलाब की भावना देकर पिष्टी बनावें। रात को बाहर चांद की चांदनी में रखदें, दिन में जोरदार होथों से खरल करें। इस प्रकार पांच दिन तक घुटाई करें। यह चन्द्रपुटी प्रवाल भस्म हो गई। यदि चांद की चांदनी न हो तो ओस में रखें, इससे भी गुण बढ़ जाते हैं, किन्तु चांदनी से कम। इसे प्रातः शाम दिन में दो बार एक रत्ती से दो रत्ती तक सेवन करें।

अनुपात—गर्मी की अधिकता में सत्व गिलोय के साथ, हृदय रोगों में मुरब्बा, आमला, मस्तिष्क की कमजोरी में मलाई, गोदूध तथा घी से सेवन करायें। रक्तपित्त में अंजबार के शर्बत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांसा पत्र अथवा जल पीपली के एक तोला शर्बत के साथ देवें।

गुण—इसके गुण प्रवाल भस्म से शीतल हैं, इसी लिए गर्मी बढ़ जाने पर भस्म की अपेक्षा अधिक लाभ करती है। हृदय की बेचैनी, घबराहट, धड़कन, प्रमेह, प्रदर, आदि रोगों को दूर करने में उत्तम है। सब प्रकार के रक्तपित्त में लाभ करती है।

योग [१५]

उपरोक्त विधि से बनाई हुई प्रवालपिष्टी २ तोला, असली वर्क चांदी १ तोला, कूजा मिश्री १ माशा। प्रथम मिश्री और चांदी के वर्कों को खरल करें, जब वर्कों की चमक न रहे तब प्रवाल पिष्टी मिलाकर तीन चार घण्टे तक खरल करें। जब वर्कों की चमक लेशमात्र भी न रहे, शीशी, में सुरक्षित करके रखदें। मात्रा एक दो रत्ती प्रातः शाम दूध की मलाई, मक्खन, सेव का मुरब्बा, आमले का मुरब्बा आदि के साथ सेवन करें।

गुण—पित्त की अधिकता से होनेवाले रोग, घबराहट, धड़कन, दिल का घुटना, हृदय की कमजोरी, मस्तिष्क की कमजोरी, सिर चकराना आदि में भी अत्यन्त लाभ करता है। प्रमेह पर भी लाभकारी है।

जीवन वर्धक (१६)

बुरादा रक्त चन्दन, बुरादा सफेद चन्दन, कचूर, मुलहटी, नीमपत्र, महेन्दी पत्र, मंजीठ, गैरू, हिरमची, बबूल पुष्प। सब को समान भाग १ तोला लेकर कूट पीस कपड़छान करके फिर प्रवाल पिष्टी अथवा प्रवाल भस्म १ तोला मिलाकर रखलें। मात्रा ४ रत्ती है, आवश्यकता हो तो एक माशा तक दे सकते हैं। प्रातः शाम जल से, अर्कगुलाब, अर्क गावजुवां अथवा दूध फटे हुये के जल से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या शर्बत नीलोफर, मुरब्बा सेव या मुरब्बा आमला से प्रयोग करायें। बच्चों को बलानुसार कम दें।

अपथ्य—गर्म पदार्थ, तैल तथा तैल से बने हुए पदार्थ, गर्म मसाला, लाल मिर्च, खटाई, गरिष्ट वस्तु वर्जित हैं। दूध, हरी सब्जी, फल, गाजर, सेव, आमला, पेठा आदि खायें।

गुण—दिल की धड़कन की उत्तम दवा है। यकृत् को शक्ति देती है। रक्त की न्यूनता, पतलापन यकृत् की शोथ, पाण्डु, कामला, रक्तविकार, वमन, गर्भपात, रक्तप्रदर, बच्चों की खांसी, दूध उलटना, फोड़ा फुंसी आदि रोगों को दूर करती है।

ठंडक का योग (१७)

बंशलोचन असली २॥ तोला, दाना छोटी इलायची २॥ तोला, बुरादा सफेद चन्दन २॥ तोला, धनिया २॥ तोला, गिरी कमलगट्टा २॥ तोला, कहरवा २॥ तोला, दरियाई नारियल १॥ तोला, रजतभस्म ३ माशा अथवा चांदी वर्क ५० नग, अकीक भस्म १ तोला, जहर-मोहरा भस्म २ तोला, संगेयशव भस्म ६ माशा इन सब कों कूट पीस कर युक्तिपूर्वक मिलालें।

गुण—एक से दो माशा किसी गुलकन्द, अर्क आदि अनुपान से देवें। प्रत्येक गर्मी को बीमारी के लिये उत्तम है। मस्तिष्क की कमजोरी, चक्कर आना, (घबराहट होना) में मिश्री और घृत में दो माशा दवा मिलाकर दें। पेचिश में ईशबगोल भूसी अथवा दूसरा अनुपान मिलाकर दें। वमन, तृषा, घबराहट मतली में किसी शर्बत के साथ, ज्वर में अर्क गावजुवां से देवें, निश्चित लाभ हो जाता है।

योग (१८)

बारहसींगा के शृंग शुद्ध करके घीक्वार से कपरौटी करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजपुट में फूंक दें। यह सफेद रंग की भस्म हो जाती है। यदि कमी रह जाये तो पहले की तरह दूसरी तीसरी पुट दें। उत्तम कुरंग शृंग भस्म तैयार हो जायेगी। पीसकर शीशी में रखलें।

उपयोग—चार-चार रत्ती मुनक्का में रखकर खालेवें और ऊपर से गर्म पानी पीवें। इसी प्रकार प्रातः शाम सेवन करें। यह दवा हृदयशूल पर जादू जैसा कार्य करती है। इसी प्रकार नित्य कुछ दिन तक सेवन करते रहें। छाती के दर्द पर भी अत्यन्त लाभ करती है।।

योग (१९)

हृदय रोग पर आयुर्वेद का प्रसिद्ध योग अर्जुनारिष्ट है। इस को दो दो तोले भोजन के आध घण्टे पश्चात् सेवन करें। दिल की प्रत्येक बीमारी पर लाभ दिखाती है।

मूत्रकृच्छ्र रोग निदान

कारण—अधिक व्यायाम करना, तीव्र औषधि अर्थात् राई मिर्चादि के सेवन से, मद्य (शराब) पीने से, रूक्ष पदार्थों के सेवन से, अधिक नाचने कूदने से, घोड़े आदि की सवारी, मूत्रादि वेगों के रोकने से मूत्रकृच्छ्र (कष्ट से मूत्र आना) रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

इस रोग में मूत्र थोड़ा-२ कष्ट से बूंद २ उतरता है अथवा रक्तमिश्रित मूत्र आता है। मूत्रनली में अतीव दर्द होता है। इसको हरयाणे की भाषा में चिनघवा कहते हैं। आयुर्वेद की दृष्टि से यह छः प्रकार का है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा

योग (१)

कल्मीशोरा ५ तोला, घीक्वार का रस १ सेर। कल्मीशोरे को पीसकर घीक्वार के रस में मिलादो, और उस रस को हिलाओ, थोड़ी देर में शोरा उस में मिल जायेगा। पश्चात् बारीक वस्त्र से छान लो। पात्र शीशा, चीनी मिट्टी अथवा पत्थर का हो। छानते समय बिना दबाये जो रस निकले वही अच्छा होता है, उसी को लेवें। शेष जो वस्त्र में रह जावे, छोड़ देवें। औषध तैयार समझें।

उपयोग—मूत्र में जलन (दाह) ३० बूंद से १ तोला तक चार-चार घण्टे के अवकाश में देवें। लाभ होने तक देते रहें। अनुपान भेद से यकृत् प्लीहा (तिल्ली) आदि पेट के रोगों में प्रातः शाम एक एक तोला दवा पिलावें। यह गुल्म, पेटशूल में अच्छा कार्य करती है।

योग (२)

मक्की के बारीक बाल (रोम) १ तोला लेकर जल में उबाल कर तीन दिन पिलाने से लाभ हो जाता है। इससे रेत और पथरी भी मूत्र के द्वारा निकल जाती है। मक्की के ऊपर के रूयें (बाल) की मात्रा ६ माशे से एक तोला लेकर आध सेर जल में क्वाथ करें २ छटांक क्वाथ शेष रहने पर छानकर पिलावें।

योग (३)

बबूल की कोमल कोंपल ऐक तोला, भांखड़ी (गोखरू) एक तोला। दोनों को ताजा लेकर रस निकालकर पिलावें। यदि रस न निकले तो थोड़ा सा जल डालकर घोटकर छानकर मिश्री मिलाकर पिलायें। इस प्रकार कई दिन तक पिलाते रहें लाभ हो जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (४)

कल्मी शोरा २ तोले, जल २ तोले, रूमी मस्तगी १ माशा।

विधि—कल्मीशोरा और जल को मिलाकर आग पर पकावें, इस में जब बुलबुले उठने लगें तो रूमीमस्तगी को बारीक पीसकर मिला देवें, और पकाते रहें। जब औषध शुष्क हो जाये, पीसकर रख लें।

इसको एक माशा की मात्रा प्रातः शाम दूध की लस्सी अथवा जल के साथ सेवन करें। इसके प्रयोग से मूत्रकृच्छ्र, जलन, सुजाक अच्छे हो जाते हैं। कोई भी उष्ण पदार्थ, लाल मिर्च, अचार आदि खाने को न देवें।

योग (५)

कल्मीशोरा १० तोले लेकर लोहे की कड़ाही में डालकर नीचे आग जलावें। जब शोरा पिघल जावे, तब उस में पिसी हुई काली मिर्च एक तोला डालकर मिला दें। जब शोरे का जल सूख जावे, कड़ाही को नीचे उतार कर शीतल करके पीस कर रख लें। फिर इस में साबुन देशी २ तोले और थोड़ा गुड़ मिलाकर जंगली बेर के समान गोली बना लें। एक गोली दूध की लस्सी के साथ सेवन करें। इससे मूत्र की जुलाब होकर मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जावेगा। पश्चात् एक सप्ताह तक जिसमें गुड़ और साबुन मिला हुआ न हो, एक-एक माशा नित्य शर्बत बिजौरी के साथ सेवन करावें।

योग (६) मूत्रल चूर्ण

कल्मी शोरा ४० तोले, फिटकरी ५ तोले, नौशादर २॥ तोले।

विधि—इन सब को कूट कर एक मिट्टी की हांडी में डाल कर आग पर पकावें। जब सारी दवा पिघल कर पानी जैसी हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावे, तब हांडी को आग से उतार कर ठण्डा करके औषधि को खुर्च कर निकाल लें और पीस कर शीशी में रख लें। दिन में दो तीन वार ३ से ६ माशे तक कच्चे नारियल के जल अथवा पानी से खिलावें बालकों को आयु के अनुसार ३ से ४ रत्ती की मात्रा से १ माशा तक देवें। विशूचिका में शीघ्र लाभ के लिए एक-एक अथवा दो-दो घण्टे के अन्तर से देवें।

गुण—यह मूत्र लाने के लिए उत्तम औषधि है, मूत्र का कष्ट से उतरना, रुकना, जलन होना। रोगी को बड़ा कष्ट और बेचैनी होती है। इस से सब प्रकार का मूत्रकृच्छ्र दूर हो जाता है। यह मूत्र खोलने में अत्यन्त सफल प्रयोग है। एक दो मात्रा लेते ही मूत्र खुलकर आने लगता है।

योग (७)

पांडु (पीलिया) रोग प्रकरण प्रथम भाग में योग नं० ३ पर शोरा आदि का योग लिखा है। मूत्रकृच्छ्र में शतशोऽनुभूत है।

योग (८)

यवक्षार ३ माशे, मिश्री १ तोला, दोनों को मिलाकर १० तोले पेठे के रस के साथ देने से मूत्र खुलकर आता है। यदि पेठे का रस न मिले तो ताजा पानी से देवें। इसको दोगुण मधु से देने से भी लाभ होता है।

मूत्राघात निदान

इस रोग में लगभग वही कारण हैं, जो मूत्रकृच्छ्र में होते हैं। उन कारणों से वात कुपित होकर मूत्रनली को खराब कर देती है और मूत्राघात हो जाता है।

सामान्य लक्षण

मूत्राघात में मूत्र बन्द (रुक-रुक कर) होकर थोड़ा-२ आता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वायु भरने से मसाना फूल जाता है और दर्द होता है। मसाना, पेडू पर कठिन ग्रन्थि हो जाती है। मूत्र गाढ़ा-२ कठिनता से उतरता है। मूत्र में दुर्गन्ध आती है। यह रोग कष्टसाध्य होता है। आयुर्वेद के ज्ञाताओं ने इसे १३ भागों में विभक्त किया है।

मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र में भेद

मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र दोनों ही मूत्र सम्बन्धी रोग हैं। परन्तु दोनों में भेद है। मूत्रकृच्छ्र में मूत्र अत्यन्त पोड़ा से आता है। मूत्राघात में पीड़ा न्यून होती है, मूत्र बहुत कम आता है। मूत्रकृच्छ्र का दौर देर तक नहीं रहता।

चिकित्सा

मूत्राघात रोग में यह विशेष ध्यान रखें। यदि वेदना बहुत बढ़ी हुई हो, तो घृतादि पदार्थों से स्नेहन करें। पीछे एरण्ड तैल का जुलाब देवें और तिल तैल से मूत्रेन्द्रिय में पिचकारी करें।

योग (१)

केले वृक्ष का स्वरस ४ तोले, गोघृत २ तोले इन दोनों को मिलाकर पिला देवें, उसी समय मूत्र का बन्द टूट जाता है। यह मूत्राघात की उत्तम औषधि है। स्त्री पुरुष सबके लिये उत्तम है, किन्तु स्त्रियों के लिये विशेष है।

योग (२)

कल्मीशोरा १ तोला, मिश्री अथवा खांड १ तोला दोनों को बारीक पीसकर ८-८ माशा की तीन मात्रा बनावें। इसकी एक मात्रा ताजा जल से देवें। आध घण्टे पश्चात् दूसरी मात्रा देवें। इससे निश्चित मूत्र बन्ध हट जावेगा। यदि दो मात्रा से मूत्र साफ न आवे, तो तीसरी मात्रा आध घण्टा पीछे देवें। इसको मूली के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस दस तोले से प्रयोग करें, तो शीघ्र लाभ होता है। रोगी
पेडू पर कल्मीशोरा ३ माशे थोड़े से जल में पीसकर लेप करदें
मूत्रबन्ध टूट जायेगा।

योग (३)

देशी कपूर की दो तीन रत्ती की डली लेकर थोड़ी सी पतल
करके मूत्रेन्द्रिय में रखें और पेडू पर ढाक के फूल उबाल कर बां
देवें। मूत्रबन्ध शीघ्र ही टूट जायेगा। कपूर मूत्रेन्द्रिय के मुख
रखने से ही टूट जाता है।

योग (४)

देशी कर्पूर की २-३ रत्ती को जल से पीसकर और ए
छोटा सा टुकड़ा लथपथ करके बत्ती बनाकर मूत्रेन्द्रिय के मुख
रखने से मूत्र खुलकर आता है और मूत्र का बन्ध टूट जाता है।

योग (५)

पाषाणभेद १०० ग्राम, हरड़ की छाल १०० ग्राम, गिलो
१०० ग्राम, वरुण छाल १०० ग्राम।

इन औषधियों को कूट कर दो लिटर जल में क्वाथ करें
जब ५०० मिलिलीटर शेष रहे छानकर इस क्वाथ में, सोंठ, बी
खरबूजा, मकई के लोम, शंख भस्म, यवक्षार, प्रत्येक २५ ग्रा
सबको बारीक पीसकर सब को मिलाकर खरल करें। जब गो
बनने के लायक हो जावे, चने समान गोली बनालें। प्रातः दोपह
शाम को एक गोली जल के साथ सेवन करने से मूत्र सम्बन्धी स
रोग दूर हो जाते हैं। यह योग स्वर्गीय विद्यासा
थापर आयुर्वेदाचार्य प्रिंसिपल आयुर्वेद कालिज अस्थल बो
जिला रोहतक का अनुभूत है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (६)

मूत्रकृच्छ्र प्रकरण में योग नं० ६ मूंत्रल चूर्ण लिखा है। वह मूत्राघात के लिए सर्वश्रेष्ठ योग है।

अश्मरी (पथरी) प्रकरण

वायु वस्ति के भीतर शुक्र एवं पित्त से युक्त मूत्र को अथवा कफ को सुखा देता है। तब अश्मरी बन जाती है। यह मनुष्य के भीतर इस तरह बढ़ती है, जिस प्रकार गौ के पित्ताशय में गोरोचन (गऊ लोचन) बढ़ता है।

सामान्य लक्षण

नाभि, सीवन, वस्ति और वस्ति के ऊपरी भाग में पीड़ा होती है। पथरी के द्वारा मूत्र मार्ग रुकने पर मूत्र की टूटी हुई धारा और कष्ट से बिन्दु बिन्दु और रुक रुक कर मूत्र आता है। कभी कभी पथरी के अपने स्थान से हट जाने पर मूत्र सुखपूर्वक आ जाता है। पथरी की रगड़ से घाव होने पर कभी कभी रक्त मिश्रित मूत्र आता है। चलने फिरने आदि परिश्रमों से अत्यन्त पीड़ा होती है

चिकित्सा

पथरी के रोग में शीघ्रता करनी चाहिये क्योंकि यह रोग थोड़े ही दिनों में भयंकर रूप धारण कर लेता है। फिर औषधियों से दूर नहीं होता, आप्रेशन (शल्यक्रम) कराना पड़ता है। आप्रेशन में प्रायः खतरा होता है। इसलिए पथरी की चिकित्सा शीघ्राति-शीघ्र करनी चाहिये।

योग (१)

कड़वी तुम्बी, घिया कद्दू के नाम से पुकारी जाती है। यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोल होती है। यह दो प्रकार की होती है। एक मीठी औ दूसरी कड़वी। इसी को साधु महात्मा पानी पीने का पात्र व कर रखते हैं, और इस से बीन जो एक प्रकार का बाजा होता बनाई जाती है। हमारा अभिप्राय कड़वी तुम्बी जाति की घि से है। इसका स्वरस निकाल कर एक छटांक लेकर यवक्षार माशा, मिश्री दो तोला मिलाकर पिलावें। इसी भांति प्रातः शा दोनों समय सेवन करें। एक सप्ताह में पथरी टूट कर बाहर निक जाती है। यह औषधि आप्रेशन जैसा कार्य करती है।

योग (२)

पथरी तोड़ने वाली बूटी।

जलपीपली, (इसको जल पीपल अथवा बूकन बूटी भी क हैं) यह नदी नालों, जोहड़ों के किनारे सब स्थानों पर मिलती है इसको प्रातःकाल उखाड़कर कूटकर स्वरस निकाल लें। इस दो तोले रस में मिश्री मिलाकर निराहार सेवन करावें। य स्वरस न निकले, तो दो तोले बूटी लेकर पांच तोले जल में घो कर रस निकाल लें। दो मास तक निरन्तर सेवन करने से, मू वस्ती की पथरी टूटकर निकल जाती है। दो मास में रत्ती समाप्त हो जाती है। इस बूटी के अनेक गुण हैं, जो यहां न लिखे हैं। अनुभूत है।

योग (३)

कल्मीशोरा ५ तोला, लिथा सायट्रास २॥ तोला, पोट बाई कार्ब २॥ तोला, बेर पत्थर पिष्टी २॥ तोले।

विधि—इन सब को कूट पीस कर छान लें। खूब बारीक मैं जैसी पीसें। इस को एक एक माशा दिन में तीन बार सेवन कर अनुपान में अर्क सौंफ देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—यह प्रत्येक पथरी पर कार्य करती है। यह दर्द गुर्दे को पिलाते ही मिटा देती है। मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात पर पूर्ण रूपेण कार्य करती है। कई बार की अनुभूत है।

योग (४)

नौशादर ६ तोले, असली यवक्षार १२ तोले, मूलीक्षार १ तोला, बेर पत्थर १८ तोले, पीपल छोटा ६ तोले, कल्मीशोरा १८ तोले, फिटकरी २ तोले।

निर्माण—फिटकरी को एक सेर जल में हल करके कड़ाही में आग पर रक्खें। जब सारा जल सूखकर श्वेत रंग का पदार्थ रहे; उसे खुर्च लें। और इस में ऊपर लिखी हुई सब औषधि डाल तीव्र अग्नि जलायें, और लोहे के डण्डे से हिलाते रहें। जब मोम की तरह नर्म हो जाय, उतार कर पीसकर रखें। अर्क सौंफ ४ तोले, अर्क मकोय २ तोले के साथ ४ रत्ती सेवन करायें। प्रातः शाम कुछ दिन लगातार सेवन करने से सब प्रकार की पथरी को आप्रेशन (शल्य) की भांति काट देती है।

योग (५) पथरी तोड़

कल्मीशोरा ३ तोले, बेर पत्थर पिष्टी १ तोला, नौशादर ठीकरी ६ माशे, मूली क्षार ६ माशे, कच्चा सुहागा ३ माशे, रीठा त्वक् १ नग।

विधि—मिट्टी के पात्र में दश तोले जल डालकर शोरे का मिश्रण बनालें। फिर अग्नि पर पकावें। एक छटांक शेष रहने पर सब औषधि डालकर लकड़ी से हिलाते रहें। सूखने पर बारीक पीस लें। चार रत्ती से एक माशा दिन में तीन बार कुल्थी क्वाथ अथवा बकरी के ताजा दूध के साथ प्रयोग करें। यह पथरी की उत्तम औषधि है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (६) पथरी का काढ़ा

कुलथी के बीज ९ माशे, सेंधा नमक ३ माशे, शरपुंखा २ माशे।

इनको कूटकर तीन पाव पानी में पकावें, जब आधा शेष रहे, छानकर पिला दें। इसी भांति दिन में तीन बार क्वाथ पिलावें। कुछ दिन लगातार प्रयोग से अश्मरी कटकर निकल जाती है।

योग (७)

यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं, कि बड़ी पथरी हो जाने पर शल्य (आप्रेशन) के बिना कोई औषधि सफल नहीं होती। परन्तु आजकल छोटी बड़ी पथरी कोई भी हो, सिवाय आप्रेशन के कोई औषधि नहीं मानी जाती, किन्तु उनकी यह धारणा मिथ्या है। उनके लिए शतशोऽनुभूत योग लिखते हैं। आप्रेशन करने पर भी पथरी बार बार होती रहती है। उन को भी चाहिये कि आप्रेशन के पश्चात् इन औषधियों का सेवन करें, जिससे पुनः पथरी होने का डर न रहे। पथरी प्रारम्भ होने पर चने के बराबर अथवा उस से न्यून होती है। तभी औषधि सेवन प्रारम्भ कर दें और आप्रेशन के झंझट में न पड़ें, क्योंकि शरीर कार्य करने में समर्थ नहीं रहता। अथवा मृत्यु ही हो जाती है। योग इस प्रकार है

बेर पत्थर भस्म १ तोला, संगेसरेमाही १ तोला, असली जवाखार ६ माशे, शुद्ध सुहागा ६ माशे, कल्मीशोरा ६ माशे, फिटकरी भस्म ६ माशे, नौशादर ६ माशे, कुलथी ६ माशे, जीरा सफेद ६ माशे, बीज सोया ६ माशे, मूली क्षार ६ माशे, दाना बड़ी एला ६ माशे, शीतल चीनी ६ माशे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि—सब को यथाविधि कूट पीसकर मिलाकर रक्खें। प्रातः शाम चार चार माशा शर्बत बिजूरी अथवा जल से देवें।

गुण—यह पथरी का सफल योग है। इसके सेवन से आप्रेशन का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। जो इसका सेवन करता है लाभ देखकर प्रसन्न हो जाता है। इसके सेवन से दर्द तो पहले ही दिन दूर हो जाता है और पथरी को गला गला कर निकाल देता है। उत्तम योग है।

योग (८)

बेर पत्थर १ पाव, कल्मीशोरा १ छटांक इन दोनों को मूली के रस में तीन दिन खरल करके गजपुट की आंच में फूंक दें। इसी प्रकार कल्मीशोरा १ छटांक मिलाकर मूली के रस में तीन दिन खरल करके पहले की तरह फूंक दें। इसी भांति सात गजपुट देवें। पश्चात् पीस कर सुरक्षित रखें। मात्रा ४ रत्ती से १ माशा अर्क सौंफ अथवा गर्म जल से सेवन करें। इस योग से पुरानी से पुरानी पथरी गल कर निकल जाती है।

दर्द गुर्दा अथवा गुदस्थित वात रोग

सर्व प्रथम दर्द गुर्दा का लक्षण लिखने से पूर्व पाठकों को कुछ जानकारी देना चाहते हैं। यूनानी और ऐलोपैथी चिकित्सा की पुस्तकों में इस रोग का वर्णन है। इसको पढ़ने वाले कहते हैं, कि इस रोग का ज्ञान प्राचीन आचार्यों को नहीं था। एलोपैथिक और यूनानी चिकित्सकों ने आयुर्वेद को ध्यान पूर्वक नहीं देखा। यदि देखा होता, तो इस प्रकार की व्यर्थ की बातें न करते। आयुर्वेद के आचार्यों ने इस रोग का वर्णन वातरोगों में किया है, और इसका नाम गुदस्थित वात है। इस के निदान की ओर ध्यान देकर देखिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुदस्थित वात के लक्षण

ग्रहो विण्मूत्रवातानां शूलाऽऽध्मानाऽश्मशर्कराः।
जङ्घोरू-त्रिक-पात्-पृष्ठ-रोगश्शोषो गुदे स्थिते ।

अर्थः— गुद (पक्वाशय) में स्थित अपानवायु जब कुपित होता है तो मल मूत्र एवं अधोवायु की रुकावट, उदरशूल, अफारा होता है। मूत्र सम्बन्धी स्थानों में पथरी तथा शर्करा उत्पन्न हो जाती है। टांग, जांघ, पैर एवं पीठ में पीड़ा और उन की शुष्कता हो जाती है।

एलोपैथी यूनानी दर्द गुर्दा के लक्षण

जब कोई छोटा-सा कण (प्रमाणु) गुर्दा से मसाना में जाते हुए गुर्दा और मसाना के मध्य की नाली में फंस जाता है तो पीड़ा होती है, इसी को दर्द गुर्दा कहते हैं।

गुर्दे के स्थान पर बहुत दर्द होता है, और वह दर्द कमर (कटि) से मसाना (वस्ति) की तरफ चलता है। जिसकी पीड़ा अण्ड-कोषों तक जाती है। ज्वर हो जाता है, मतली होना, हाथ पैर शीतल होना, मूत्र थोड़ा-थोड़ा आता है और मूत्र में रक्त का किञ्चित् वर्ण भी हो जाता है।

आप ध्यानपूर्वक देखिए, जो लक्षण गुदस्थित वात के हैं, वह लक्षण दर्द गुर्दा के हैं। केवल भेद इतना है, डाक्टरी चिकित्सा और यूनानी में इसे दर्द गुर्दा कहते हैं और आयुर्वेद में गुदस्थित वात। दर्द गुर्दा वात और पथरी से होता है।

चिकित्सासम्बन्धी जानकारी

१- चिकित्सक को चाहिए, रोगी को पूछ-ताछ करके ठीक निदान करें। दर्द एक स्थान पर स्थिर है, अथवा सारी कमर, वस्ति आदि स्थानों में घूमता रहता है। जब इस दर्द का दौरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांत होता है, तो चलने फिरने से गुर्दे के स्थान पर रगड़ सी उत्पन्न होकर दर्द होने लगता है। अथवा बैठने की अवस्था में भी दर्द होता रहता है। मूत्र में कोई रेत के समान कतरा आता है, अथवा शुद्ध आता है। मूत्र आते समय पीड़ा होती है, और रुक-रुक कर आता है।

२- यदि गुदस्थित वात (दर्द गुर्दा) में रोगी के चलते-फिरते समय दर्द होता है, तो समझ लेना चाहिए, पथरी प्रारम्भ होगई है। उसकी चिकित्सा पथरी रोग में लिखे अनुसार करनी चाहिए।

योग (१)

राई और कल्मीशोरा, दोनों को समान भाग लेकर पीसकर रखलें। दो से चार माशे जल के साथ खाने से वृक्कशूल से तड़फते रोगी को तुरन्त लाभ हो जाता है।

योग (२)

यवक्षार असली - लोटा सज्जी, सुहागा कच्चा - नौशादर, काली मिर्च - सैंधा नमक, सफेद नमक - उत्तम हीरा हींग, कल्मी शोरा - प्रत्येक एक तोला।

विधि:— सबको यथाविधि पीसकर रख लेवें। इस में से ३ माशा औषधि लेकर सिरका असली मिलाकर चटनी जैसा पतला करके चटादें। इस से शीघ्र लाभ होगा। यदि लाभ न हो, तो १५ मिनट में इसी भांति दूसरी मात्रा सेवन करावें। इस तरह १५-१५ मिनट के अन्तर से ३ मात्रा देवें। निश्चित् लाभ होगा। अनुभूत है।

योग (३)

कल्मीशोरा एक सेर लोहे की कड़ाही में डाल कर नीचे आग जलावें। अग्नि तीव्र होनी चाहिए। जब शोरा पिघल जावे, जब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा पतला हो जावे तब इस में ३ नग भिलावे डाल देवें। भिलावे डालते ही शोरा में आग लग जावेगी। जब अग्नि बन्द हो जावे तो कड़ाही को आग से नीचे उतारकर शीतल करलें और पीसकर सुरक्षित रखलें।

उपयोगः—जब कोई मनुष्य दर्द गुर्दा का रोगी हो, तो इस औषधि की १ माशा की मात्रा और आधी रत्ती अफीम (अहिफेन) मिलाकर गरम जल से सेवन करावें। उसी क्षण दर्द गुर्दा में लाभ हो जाएगा। कमाल का योग है।

योग ५

एक रीठा साबुत (सालम) बीज (गिरी) और छिलके समेत बारीक पीस लें और जल संयोग से ५ गोली बना लें। इसकी १ गोली अथवा २ गोली गर्मजल से निगलवा दें। लाभ होगा।

योग (६) हिंग्वादि चूर्ण

घी में भुनी हीरा हींग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हाऊ बेर पाढ़, हरड़ छाल, कचूर, अजमोद, अम्लवेत, अजवायन देशी, समाक दाना, अनारदाना, पोहकर मूल, धनियां, सफेद जीरा, चित्रक छाल, सेंधा नमक, काला नमक, चव्य।

प्रत्येक औषधि १-१ तोला लेवें।

विधिः—सब को कूट पीसकर चूर्ण बनालें। एक माशा से दो माशा गर्म जल के साथ, अर्क सौंफ अथवा संजीवनी सुरा के साथ खिलावें। इस औषधि की पहली मात्रा ही लाभ दिखाती है। जब दर्द का दौरा बन्द हो जावे तो रोगी को शक्ति के अनुसार आधी छटाँक से एक छटाँक तक अरण्डी का तैल पिलादें। इससे पूर्ण लाभ होगा। यह चूर्ण प्रत्येक वातरोग, पेट दर्द, और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाततिसार में लाभ करता है। मन्दाग्नि आदि रोगों को शान्त करता है।

टिप्पणी:—पथरी प्रकरण में लिखे योग नं० ३ का योग अथवा दर्द का दौरा बन्द कर देवें। पश्चात् पथरी वाले योगों का प्रयोग करें। एक मास पर्यन्त देते रहने से दर्द गुर्दे का दौरा नहीं होता।

प्रमेह (धातुरोग) प्रकरण

कारण—अधिक मात्रा में जिसको पाचनशक्ति पचा न सकती हो, दूध दही, नया अन्न आदि पदार्थ, गुड़, मिठाइयां, तेल, खट्टे पदार्थ, गन्ने का रस, अधिक जल पीना, सिरका, मद्य (शराब) मांस खाना, बीड़ी सिगरेट, तम्बाकू पीना। दिन में सोना, रात्रि को अधिक जागना, मूत्र रोकना, अधिक मैथुन करना, दूषित (गन्दा) जल पीना, लाल मिर्च, लहसन, प्याज, पूरी, कचौरी, दही बड़े, पकौड़ी, समोसे, आलू आदि रूक्ष एवं बादी के पदार्थ संगीत, नाच, गान, सिनेमा, ड्रामा, अधिक पशुवत् भोजन करना, चरित्रहीन पार्टी में रहना, शृंगार, वेग रोकना, चिन्ता, क्रोधादि अधिक करना। यह सब प्रमेह रोग होने के कारण हैं। इन दोषों को सर्वदा छोड़ देवें अन्यथा रोग अधिक बढ़ता जावेगा। आराम से परिश्रम और व्यायाम, कारणों को हटाये बिना कोई कितनी भी परीक्षित औषधि देवे, किन्तु लाभ नहीं होगा। अतः जो प्रमेह रोगी लाभ की आशा करे, वह सब व्यसनों को छोड़ दे।

सामान्य लक्षण

नख, दांतों में मैल जमना, हाथ पैरों के तलुओं में जलन होना, नाक पर चिकनाहट, शरीर भी चिकना सा प्रतीत होना, गला तालु सूखना, मुख मीठा सा रहना; झनझनाहट, मूत्र पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चींटी, मक्खियों का आना, रोगी को आलस्य बना रहना; किसी कार्य को करने में उत्साह न रहना, अंगों का टूटते रहना, कमर में दर्द रहना, इस रोग में मस्तिष्क कमजोर हो जाता है। थोड़ा सा कार्य करने पर शिर में पीड़ा आरम्भ हो जाती है, और कभी-कभी चक्कर आने लग जाते हैं। स्वभाव क्रोधी हो जाता है। रोगी कितना भी पौष्टिक पदार्थ खाये, शक्ति नाममात्र को भी नहीं होती। नाखुनों का पहिला हिस्सा सफेद हो जाता है।

प्रमेह के विषय में स्पष्टीकरण

यह रोग २० प्रकार का होता है। इसके सामान्य लक्षण लिखना कठिन सा प्रतीत होता है। इस रोग का सम्बंध सारे शरीर से है। प्रमेह में रक्त, मांस, चर्बी प्रभृति धातुयें विकृत हो जाती हैं और मूत्र मार्ग से निकलती हैं। इससे मनुष्य निचुड़कर शक्तिहीन हो जाता है अथवा यम का द्वार खटखटाता है।

असाध्य लक्षण

आयुर्वेद की दृष्टि से प्रमेह २० प्रकार का होता है। कफ से १० प्रमेह साध्य, पित्त से उत्पन्न ६ प्रमेह याप्य अथवा कष्टसाध्य और वात से उत्पन्न ४ प्रमेह असाध्य हैं।

प्रमेह रोगी का वीर्य हर समय निकलता रहता है। अथवा प्रमेह के उपद्रव, पिड़िका, प्रमेह के फोड़े जिनको आयुर्वेद की परिभाषा में शराविका, कच्छपिका कहते हैं और डाक्टरी नाम कारबेकल है, यह प्रमेह का रोगी असाध्य है।

वीर्य का महत्त्व

यह वीर्य ही मनुष्य का जीवन है, अतः अमृत तुल्य है तथा शरीर को बलवान् व पुष्ट करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्।
तस्मादतिप्रयत्नेन कर्त्तव्यं बिन्दुधारणम्॥

वीर्य बिन्दु पात से ही मृत्यु है। इस बिन्दु के धारण से ही जीवन है। अतः प्रयत्नपूर्वक इस वीर्य बिन्दुमात्र को धारण करना चाहिए।

वीर्यमेव बलम् बलमेव वीर्यम्।

शरीर में वीर्य के स्थिर रहने पर बल (शक्ति) की प्राप्ति होती है, अर्थात् शक्ति अथवा बल वीर्य की स्थिरता पर ही पूर्णतया निर्भर है। बिना वीर्य के शरीर में बल रह नहीं सकता। इसको विभिन्न रूपों से परित्याग करने पर अनेक उपद्रव यहां तक कि मृत्यु भी हो जाती है।

वीर्य (शुक्र) का शरीर के प्रति क्या कर्म है

शरीर में वीर्य का कर्म बहुत ही उच्चकोटि का है। जिस प्रकार गृह निर्माण में घर की नींव (जड़) की मजबूती का प्रमाण चिरकाल तक स्थिरता का संकेत है ठीक उसी प्रकार वीर्य से शरीर की स्थिरता तथा बल की प्राप्ति होती है। वीर्य के स्थिर रहने पर धैर्य, सुख-दुःख आदि झंझटों की उपस्थिति में भी निर्विकारता, वीरता, निर्ममता आदि यह वीर्य के कर्म हैं। ब्रह्मचर्ययुक्त नवयुवक अथवा वीर्यवान् पुरुषों की ओर आंख मिला कर नहीं देख सकते। किसी अपराधी के समान लज्जित होकर नीचे की ओर देखते हैं अथवा मुख छिपा लेते हैं।

वीर्यहीन के लक्षण

१. कुछ ढीठ नवयुवक छाती फुलाकर घूमा करते हैं। वह समझते हैं कि ऐसा करने से हमारे दुर्गुण समाज में छिप जायेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. कुछ नवयुवकों का विशेषकर स्कूल, कालिज के विद्यार्थियों की रोनी सूरत, अप्रसन्नभाव, चिड़चिड़ा स्वभाव, पीला चेहरा तथा निस्तेज हो जाता है।

३. कपोलों की गुलाबी छटा नष्ट होकर काले दाग पड़ जाते हैं।

४. आंखें भीतर धंस जाती हैं। बाल झड़ जाते हैं।

५. रोग न होने पर भी निस्तेज, दुर्बल, उत्साहहीन होना, आवाज में विकृति आ जाती है।

६. शरीर के हिस्सों में दर्द, शिथिलता तथा प्रमेह रोग हो जाता है।

७. हाथ पैर के तलुवों में पसीना आना, अथवा पसीजना।

८. हाथ-पैरों में कम्प होना, एकदम उठते ही आंखों के सामने अन्धेरा सा छा जाना।

९. उपन्यास पढ़ने तथा सिनेमा देखने, गन्दे गाने सुनना आदि की अधिक इच्छा रहती है। स्त्रियों में बार बार जाना, निर्लज्जता से उनकी ओर देखना।

१०. स्मरण शक्ति का नाश, मन का चंचल होना, कोई प्रतिज्ञा पूरी न कर सकना, विचार बदलते रहना, मस्तिष्क में गर्मी का प्रतीत होना, शीघ्र प्रसन्न शीघ्र अप्रसन्न होना, मुख में दुर्गन्ध का आना, छाती की हड्डियों का दीखना, नासिका के कोनों में कालिमा का छा जाना इत्यादि वीर्य नाश के चिन्ह हैं।

प्रमेह चिकित्सा योग (१)

भिण्डी की जड़ को छाया में सुखाकर कूट पीस छानकर रख लें। इस की छः माशा की खुराक गोदूध से लेने से प्रमेह रोग दूर हो जाता है और वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (२)

ईशबगोल का छिलका ६ माशा, मिश्री १ तोला, दोनों को मिलाकर फांक लेवें और ऊपर से धारोष्ण दूध पीवें अथवा थोड़ा थोड़ा गाय का दूध पीवें। थोड़े ही दिन में प्रमेह और स्वप्नदोष दूर हो जाता है।

योग (३)

ईसबगोल का दाना १ तोला, गौ के पाव भर दूध में पकाकर खीर बनाकर और मिश्री मिलाकर एक मास पर्यन्त सेवन करें। इस से वीर्य के सब रोग दूर हो जाते हैं। वीर्य गाढा हो जाता है।

योग (४)

मूसली सफेद १ तोला, काली मूसली २ तोला, सालब मिश्री ३ तोला, छोटी इलायची ४ तोले, गोंद कतीरा ४ तोले, भूसी ईशबगोल ५ तोले, मिश्री ३० तोले।

विधिः—सब को कूटकर कपड़छान कर लेवें। दो तोला औषधि लेकर दो पाव दूध में मिला १५ मिनट हिलावें, फिर पी लेवें। इसी प्रकार प्रातः शाम २१ दिन तक पीते रहें।

गुणः—वीर्य के सब दोष, प्रमेह, स्वप्नदोष दूर हो जाते हैं। धातु गाढ़ी हो जाती है।

योग (५)

वट (बड़) वृक्ष की कोमल कोंपल तोड़कर छाया में सुखा कर पीसकर इसमें बराबर की मिश्री मिलाकर रख लें।

उपयोगः—प्रातः शाम नौ नौ माशे गोदूध से सेवन करें। यह औषधि वीर्य की न्यूनता और धातु दौर्बल्य को दूर करने में अमृत तुल्य है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (६)

शिरस के बोज लेकर पोसकर चूर्ण बना लें। प्रातः शाम तीन तीन माशे दूध के साथ सेवन करें। इसके सेवन से जल जैसी पतली धातु भी गाढ़ी हो जाती है तथा यह ओषधि प्राकृतिक शक्ति प्रदान करती है। रक्तार्श को भी लाभ करती है।

योग (७)

नागौरी असगन्ध ५ तोले, बीज बन्द ५ तोले, तालमखाना ५ तोले, मिश्री २० तोले, इन सब को कूट पीसकर रख लें। इस में से १०, १० माशे प्रातः शाम दूध के साथ सेवन करें। खटाई, लालमिर्च, तैल से बने पदार्थ छोड़ देवें। ब्रह्मचर्य से रहें। यह औषधि प्रत्येक प्रमेह, स्वप्नदोष और शीघ्रपतन के लिए उत्तम योग है।

योग (८)

बबूल की फली जिन में बीज न पड़े हों १० तोले, शतावर ५ तोला, गोंद कीकर ३ तोले, बुरादा ईशबगोल ३ तोला, मिश्री २० तोले।

विधिः—इन सब को कूटकर छान लेवें। गोदूध से प्रातः शाम ६-६ माशे सेवन करें और खटाई, लाल मिर्च, तैल आदि पदार्थों को छोड़ देवें। ब्रह्मचर्य से रहें।

गुण—पानी जैसी पतली धातु गाढ़ी हो जाती है और वीर्य सम्बन्धी रोग दूर हो जाते हैं।

योग (९)

शिरस के बीजों की गिरी १ तोला, इमली के बीजों की गिरी १ तोला, दोनों को बारीक पीसकर वट वृक्ष के दूध में एक दिन खरल करके जंगली बेर समान गोली बनालें और छाया में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखा लें। ३ गोली नित्य दूध अथवा जल से सेवन करें। यह औषधि पुराने प्रमेह और नपुसंकता को लाभ करती है। दिन में तीन बार प्रयोग करें।

योग (१०)

शकाकुल १ तोला, मूसली सफेद १ तोला, बंशलोचन १ तोला, छोटी हरड़ २ तोला, छिलका ईशबगोल ५ तोला, खाँड १० तोले।

इन सब को कूट छानकर रख लें। प्रातः शाम बकरी के उष्ण दूध से अथवा गोदूध से सेवन करें। यह गर्म प्रकृति वालों के लिए उत्तम योग है।

योग (११)

शालबपंजा ३ तोला, शकाकुल मिश्री; तालमखाना, काली मूसली, तोदरी लाल, तोदरी सफेद, भिण्डी के बीज, सम्भल की मूसली, ढाक का गोंद प्रत्येक ४-४ माशे, मिश्री ७ तोले।

इन सब को कूट-पीस-छानकर शीशी में सुरक्षित रखें। छः छः माशे किंचित् उष्ण गोदूध से दोनों समय सेवन करें। यह औषधि वीर्य को गाढ़ा करके सन्तान के योग्य बना देती है।

धातुपुष्ट चूर्ण (१२)

काला बीजबन्द ३ तोले, गोखरू ३ तोला, तालमखाना ३ तोला, इन्द्रजौ ३ तोला, सत्तगिलोय असली ३ तोला, भूसी ईशबगोल ३ तोले, बंग भस्म १ तोला, खाँड १६ तोले।

विधिः—इन सब को कूट छानकर रख लें। एक-एक तोला प्रातः शाम, प्रकृति के अनुसार दूध अथवा दूध की लस्सी के साथ प्रयोग करें।

गुणः—इसके लिए नित्य प्रति सेवन करने से पानी जैसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतला वीर्य शहद जैसा गाढ़ा हो जाता है । अत्यन्त लाभक औषधि है। ब्रह्मचर्य से रहें। उष्ण पदार्थ, खटाई आदि छोड़

योग (१३)

बड़ (वट) वृक्ष के फल लेकर छाया में सुखाकर बराबर मिश्री मिलाकर कूटकर कपड़छान कर लें। ६-६ माशे प्रातः गोदूध से सेवन करने से प्रमेह रोग शान्त हो जाता है।

योग (१४)

दो तोले गेहूं रात को पानी में भिगोकर रखें । प्रातः ही ठण्डाई की भांति घोटकर मिश्री मिलाकर पीवें। इसी प्र नित्य कुछ दिन पीने से प्रमेह रोग शान्त हो जाता है।

चन्द्रप्रभावटी (१५)

बावची, नागरमोथा, चिरायता, बच, गिलोय, बुरादा देव हल्दी, अतीस, छिलका दारुहल्दी, पीपलमूल, चित्रक, हरड़ ब धनियां, बहेड़ा, आमला, चव्य, बायबिडंग, गजपीपल, पी काली मिर्च, सोंठ, यवक्षार, सज्जीक्षार, सेंधानमक, संचरन बिड़ नमक, स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक ३ माशे। नि दन्तीमूल, तेजपात, दारचीनी, इलायची छोटी, बंशलोचन प्र १ तोला, उत्तम लोह भस्म २ तोला, मिश्री ४ तोला, सूर्य शिलाजीत ८ तोले, शुद्ध गूगल ८ तोला।

निर्माण विधि—एक लोहे की खरल में २ पाव गर्म ज शुद्ध गूगल को भिगोकर खरल करते रहें। जब गूगल जल में जावे तब शिलाजीत और मिश्री डालकर खरल करें। ज तीनों औषधि मिल जावें, पश्चात् सब औषधि मिलाकर एक खरल करके ३-३ रत्ती की गोलियां बना लेवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपानः—एक से दो गोली प्रातः शाम रोगानुसार अनुपान से प्रयोग करें।

१. प्रमेह व स्वप्नदोष में मधु अथवा दूध संग।

२. कब्ज में बादाम के तैल या अभयारिष्ट के साथ।

३. मधुमेह में बेल पत्र रस अथवा हरिद्रारिष्ट से।

४. कष्टार्त्तव से अजवायन के क्वाथ से।

५. अत्यार्तव में गोदूध, बकरी का दूध अथवा लोहे का टुकड़ा लाल करके दूध में बुझा दें और उस दूध के साथ प्रयोग करें।

६. मन्दाग्नि में अर्क सौंफ के साथ।

७. मूत्र में जलन, गदलापन, सफेदी अधिक आना, मूत्र अधिक आना। गिलोय के अर्क से सेवन करावें। इसी प्रकार रोगानुसार अनुपानभेद से सेवन करावें।

गुण—यह गोलियां सब प्रकार को शरीर की और मस्तिष्क की कमजोरी को दूर करती हैं। इनके प्रयोग से पुरुषों के वीर्य सम्बन्धी रोग, प्रमेह, स्वप्नदोष दूर हो जाते हैं। शक्ति बढती है। स्त्रियों के मासिक धर्म न्यून आना, दर्द से आना, अनियमित रूप से आना आदि रोग दूर होते हैं। यह पुरुषों और स्त्रियों के रज-वीर्य को शुद्ध करके सन्तान के योग्य बनाती है। मूत्र में शर्करा, अलब्यूमन यूरिट आदि का आना बन्द हो जाता है। मूत्र का रुक कर आना अथवा जलन के साथ आना, दर्द होना, दायमी कब्ज के लिए लाभदायक है। पेट की आंत्र, यकृत् इनको शक्ति देती है। भोजन को पचाकर रस बनाती है। अर्श (बवासीर) के रोगियों के लिए उत्तम है। प्रत्येक प्रकार के स्त्री पुरुष, युवा, वृद्ध, प्रत्येक स्थान, हर ऋतु, हर प्रकृति के मनुष्य सेवन कर सकते हैं। परन्तु इसका लाभ धीरे-धीरे कुछ समय खाते रहने से प्रतीत होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए कुछ रोगी उकताकर (अधैर्य) छोड़ देते हैं। इसका लाभ स्थाई रूप से होता है।

स्वप्नदोष प्रकरण

स्वप्नदोष प्रमेह रोग में से ही है। यह रोग प्रसिद्ध रोग है। इसलिए यह प्रकरण मानवमात्र के हित के लिए, उपाय तथा योग अलग से लिख रहे हैं।

परिभाषा

किसी मनुष्य का विषयों का अत्यधिक चिन्तन करने, उष्ण, कटु, अम्ल, क्षार, चाय, काफी, भांग, तम्बाकू, शराबादि दूषित पदार्थों के सेवन करने, अति उपवास, अजीर्ण, अतिनिद्रा आदि के कारण रात्रि के समय निद्रा में शुक्रक्षति होने को स्वप्नदोष कहते हैं। कुछ डाक्टरों का विचार है कि स्वप्न में जो पदार्थ निकलता है वह वीर्य नहीं होता। उसी प्रकार का दूसरा पदार्थ है। परन्तु उनका यह विचार भ्रामक ही है। वे डाक्टर युक्ति देते हैं कि स्त्रियों के मासिक धर्म की तरह यह पुरुषों को होता है। यह उनका बड़ा भारी भ्रम है। स्त्रियां तो मासिक धर्म होने के पश्चात् स्वास्थ्य का अनुभव करती हैं और पुरुष स्वप्नदोष के पश्चात् क्षीणता का अनुभव करता है। अतः स्पष्ट है कि यह वीर्य ही है। किसी हिन्दी कवि के अनुसार आज के युवक का हाल ऐसा है, कि "दुनियां में दोनों गये माया मिली न राम"। क्योंकि वह अपने वीर्य से भी शून्य और धर्म से भी भ्रष्ट हो जाते हैं। उस का कारण आज के नवयुवकों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं दी जाती। इससे वह दिग्विमूढ़ होकर पथभ्रष्ट हो जाता है और नाना प्रकार की वीर्यव्याधियों में फंसकर अपना सर्वनाश कर लेता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दूषित वातावरण को बढ़ावा देते हैं, फैशन, कुसंगति, चरित्र-हीन साथी, स्वांग, सिनेमा, अश्लील चित्र, अश्लील साहित्य, चटपटा खान पान आदि।

बालक कुसंगति में पड़कर अपने सहपाठियों, नौकरों आदि से कुकर्म करना सीखते हैं। जिससे उनमें भ्रांत धारणायें बन जाती हैं। इस समय के कालिज स्कूलों की शिक्षा, विशेषकर जहां सहशिक्षा है वहां एक दूसरे के चाल-ढाल, प्रेम व्यवहार, वार्तालाप से मन दूषित होता रहता है। इस का यह प्रभाव होता है कि बालक और बालिका बुरी आदतों में फंस जाते हैं और उन बालकों को स्वप्नदोष आ दबाता है।

परिणाम

रोगी पीतवर्ण का हो जाता है। उसकी आंखें खराब हो जाती हैं। दिखाई कम देता है, चश्मा लगाने लगता है। गाल पिचक जाते हैं। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। उसे किसी काम के करने में उत्साह नहीं होता। शिर दर्द सर्वदा बना रहता है। हृदय दुर्बल हो जाता है। स्मृति कम अथवा नष्ट हो जाती है। आगे चलकर रोगी नपुंसक हो जाता है। उसे क्षय आदि भयंकर रोग हो सकते हैं। बालिकाओं को भी अत्यार्त्तव, श्वेतप्रदर, सोम रोग आदि हो जाते हैं।

स्वप्नदोष से बचने के उपाय

प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठें और उठकर फिर दोबारा न सोवें। यह समय ईश प्रार्थना में व्यतीत करना चाहिये। प्रातः प्रायः इसी समय में ही स्वप्नदोष होता है। व्यक्ति आंख खुलते ही चिन्ता में पड़ जाता है अथवा सिनेमा में देखे हुये चित्र उसकी आंखों के सामने आने लगते हैं। कुछ समय पश्चात् जब सोने लगता है तब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन चित्रों का अथवा भ्रष्ट घटना स्मृति में आकर स्वप्नदोष हो जाता है। इसलिए प्रातः उठने के बाद पुनः न सोवें तो यह रोग नहीं होता। ईश प्रार्थना के पश्चात् व्यायाम, अथवा किसी कार्य में संलग्न हो जावें। खाली न रहें।

मादक द्रव्य चाय, काफी, भांग, चरस, तम्बाकू आदि का खान पान नहीं करना चाहिये। मांस, अण्डा, शराब, मछली, खटाई, तैल, लाल मिर्च, प्याज, लहसन, चाट आदि चटपटे पदार्थ सेवन न करना। खटाई से वीर्य फट जाता है। वीर्य पतला पड़ जाता है। लहसन, प्याज, मद्य कामोत्तेजक एवं तामस हैं। चाय भांग, चरस भी साधारण विष हैं। शरीर में इनके दुर्गुण एकत्र होते रहते हैं, जो तन मन को दूषित कर देते हैं। अधिक गर्म भोजन दूध आदि भी न लेवें, उनकी उष्मा शमन हो जावे तब लेने चाहियें। भोजन को चबाकर महीन करके खावें। एक ही ग्रास को १५-२० मिनट चबाते रहना यह भी ठीक नहीं होता। आप जैसा भोजन करोगे वैसा ही तन मन होगा। अतः भोजन पर अधिक ध्यान देने से अनेक रोगों से बचाव हो सकता है। भोजन भूख से कुछ न्यून ही लेवें। अधिकांश रोग अधिक भोजन खाने से ही होते हैं। इसलिये समय पर खावें, भर पेट न खावें इस से स्वप्नदोष होता है। शाम को सोते समय दूध ही पीवें।

स्वप्नदोष दूर करने वाले उपाय

१- स्वप्नदोष हल्की नींद में होता है। रात्रि को सोते समय ग्रीष्म ऋतु में शीतल जल से और जाड़े में थोड़े गर्म अथवा कुयें के ताजा जल से पांव धो लेवें। इससे गाढ़ निद्रा आ जाती है।

२- यदि घी दूध मिल सके तो उसका अधिक प्रयोग करना चाहिये। परन्तु स्वप्नदोष का रोगी घी का प्रयोग न्यून ही करे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३- कब्ज कभी न होने देवें। यदि हो जाय तो यत्नपूर्वक दूर करते रहें।

४- मल त्याग दो बार तो करना ही चाहिये। प्रातः सूर्योदय से पूर्व और शाम को भी शौच जाना चाहिये। इससे मलाशय शुद्ध हो जाता है। शरीर जिस मल को नहीं चाहता उसे निकाल देना चाहिये। कुछ व्यक्ति जब तक जोर से टट्टी न लगे, नहीं जाते। वह अभ्यास ठीक नहीं। मल शरीर में पडे रहने से आंत्र के अंकुर उसके रस को चूसते रहते हैं। जिससे मल कड़ा अर्थात् शुष्क हो जाता है और दूषित मल शरीर में लीन (आत्मसात्) हो जाने से चर्म रोग, नेत्र रोग, उदर रोग, कब्ज, अर्श, आंत्र रोग आदि उत्पन्न हो जाते हैं। बिना शौच किये अध्ययन करते रहने से नेत्रों की ज्योति क्षीण हो जाती है। कुछ व्यक्ति प्रातः ही एक बार शौच जाते हैं। परन्तु यह भी ठीक नहीं है। यदि आप समय पर शौच जायें तो कुछ तो मल का त्याग हो ही जायेगा और अभ्यास होने पर अवश्य शौच आने लगेगा। अतः यह पूर्ण उचित सम्मति है, इसें अवश्य स्वीकार करें। मल त्याग करते समय जोर न लगायें।

५- अधिक साईकल नहीं चलानी चाहिये। सदा आलस्य में पड़े रहना भी हानिकारक है। क्योंकि भोजन अच्छी तरह नहीं पचेगा। माता पिता को चाहिये अपनी सन्तति को शुभ कर्मों की प्रेरणा करते रहें।

६- रात्रि में अकेला सोवे, दूसरे से मिलकर न सोवें। नर्म गद्दों पर न सोवें, कठोर स्थान पर सोवें। क्योंकि नर्म गद्दों पर सोने से कामोत्तेजना होती है और स्वप्नदोष हो जाता है।

७- विचार शुद्ध और पवित्र रखें। हंसी मजाक में भी कामोत्तेजक चर्चा न करें, न सुनें, सिनेमा न देखें तथा गन्दे चित्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी न देखें। अधिकांश युवक इन से ही बिगड़ते हैं। जिन छाया पटों में निन्दनीय प्रदर्शन हों, अभी तक कोई छाया पट ऐसा नहीं है जिसमें गन्दा प्रदर्शन न हो। प्रभु रक्षा करे। ऐसे खेलों में जहां पर राष्ट्रीय सन्तति लूटी जा रही हो राज्य द्वारा कठोर नियन्त्रण रहना चाहिये। इस समय छाया चित्रों से अधिक दूषित वातावरण हो रहा है।

८- लूप या परिवार नियोजन का अति प्रचार, किशोर तथा किशोरियों पर बुरा असर डालते हैं। सन्तति निग्रह के साधनों का प्रचार छात्रों को और अन्य मनुष्यों को कुमार्ग की ओर प्रेरित करता है। उद्दण्डता उच्छृङ्खलता, स्वेच्छाचारिता, व्यभिचार बढ़ रहा है। स्वतन्त्रता का अर्थ स्वेच्छाचारिता नहीं है। इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर नियन्त्रण किया जावे। संरक्षक माता पिता अपनी सन्तानों पर विशेष दृष्टि रखकर उन को अच्छे मार्ग पर चलायें। कुछ विद्यार्थी अधिक झुककर पढ़ते हैं, यह भी बुरा है। पेट को भीतर पीठ को ऊपर करके पढ़ते हैं। इस से मसाने में गर्मी होकर उत्तेजना होती है। अतः ऐसा न करें। अभिभावक अपनी सन्तानों को कार्यशील रखें। आलस्य में पड़ा न रहने दें। न बुरी संगति करने देवें। घर में उनके लिए अध्ययन, शयन, भोजन का समय निर्धारित करें।

९- कुछ लड़के इधर उधर भ्रमण करते हैं और भोजनालयों (ढावे) में कभी कभी सड़े या बासी अथवा दूषित भोजन भी करते हैं। ऐसा करना रोका जाए।

१०- गन्दे नावल, कहानी, गीत आदि का सुनना अथवा पढ़ना भी हानिकारक है। हिंसात्मक कार्यों में सहयोग देना. फिर चिन्तित रहना। यह भी स्वास्थ्य को बिगाड़ देते हैं। अच्छे धार्मिक पुरुषों की पुस्तक पढ़ना, यथा श्री स्वामी ओमानन्द की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ब्रह्मचर्यामृत" स्वामी शिवानन्द कृत "ब्रह्मचर्य ही जीवन है, वीर्य नाश मृत्यु है"। स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र और सत्यार्थप्रकाश। उत्तम आहार विहार जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के १०वें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य लिखा है उस रीति से सेवन करना, इस से शरीर और मानसिक उन्नति होती है।

११- मन पर नियन्त्रण रखने से स्वप्नदोष में शीघ्र आराम आ जाता है। मन को चलायमान न रखें। मन में कामविकार न उठने देवें। वास्तव में मन ही सब घटनायें घटित करता है। यदि मन का नियन्त्रण किया जावे तो स्वप्नदोष नहीं हो सकता। यदि मन में कोई कार्य करने का विचार उठे तो बुद्धि द्वारा विचार कर उस कार्य को कुछ देर स्थगित कर दिया जाना चाहिये। जैसे मान लीजिए आप कमरे में पढ़ रहे हैं, बाहर कोई मीठी वाणी में गाना गा रहा है। आप के कानों में शब्द पड़ते ही मन कहता है चलो देखें, सुनें कौन गा रहा है। बस आप उसी समय उठकर चल देते हैं। बस यही समय है जब आप मन को वश में कर सकते हैं। आप कुछ देर विवेक से काम लेवें। आप उसी समय विचार उठते ही बाहर को न भागें। कुछ थोड़ी सी देर विचार कर दूसरे कार्य को करके तब बाहर जावें। अर्थात् इच्छा समाप्त सी हो जावे, तब बाहर जावें। इसी प्रकार कुछ दिन तक अभ्यास करने से मन आप के वश में हो जावेगा। मन में जो कार्य करने का ध्यान आवे, उसके उचित, अनुचित का निर्णय बुद्धि द्वारा विचार लेना चाहिये।

१२- प्राणायाम द्वारा मन पर नियन्त्रण किया जाता है और इस से प्राण वायु का निरोध होकर ओषजन (आक्सीजन) भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होता है। जिस से रक्त शुद्धि भी होती है और जीवन वर्द्धनी शक्ति मिलती है। अतः स्वस्थ स्थान पर प्राणायाम अवश्य करना चाहिये (प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये)। बिना किसी व्यय के इस क्रिया द्वारा आयुवृद्धि होती है। सौन्दर्य निखरता है। अमृतत्व प्राप्त होता है।

१२- अधिक दिनों तक स्वप्नदोष होते रहने से द्रवधातु क्षीण हो जाती है। शरीर में स्निग्धता के स्थान पर शुष्कता आजाती है। उदर में शुष्कमल एकत्रित होता रहता है। अशक्ति एवं वात की वृद्धि हो जाती है। अतएव वातशामक प्रयोग भी लाभ करते हैं।

१४- सायंकाल का भोजन अधिक रात्रि जाने पर न करो। इससे भी स्वप्नदोष हो जाता है। क्योंकि भोजन करते ही सो जाने से भोजन का पाचन ठीक नहीं हो पाता।

१५- सायंकाल को सोते समय जल से मूत्रेन्दिय को धोकर शय्या पर जाना चाहिये और ईश प्रार्थना करके सो जाना चाहिये। सोने से पूर्व कोई कामुक विचार मन में नहीं आना चाहिये।

१६- यदि शरीर बलवान् हो, घी, दूध अधिक खाने पर कामोत्तेजना होती हो, तो व्यायाम अधिक करना चाहिये। वरन् एक दो दिन फलाहार से भी काम शमन होता है।

१७- आठ प्रकार के मैथुनों से अपने आप को बचाकर वीर्य की रक्षा करने वाला ही सच्चे अर्थों में ब्रह्मचारी है। ब्रह्मचर्य ही एक महान् तप है। साधना शक्ति का स्रोत है। शक्ति ही जीवन है। शक्ति का नाश मृत्यु है। शक्ति की रक्षा करना ही स्वास्थ्य का मूल मन्त्र है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त—स्वप्नदोष के रोगी को कब्ज नहीं होनी चाहिये कब्ज दूर करने के लिए ईशबगोल की भूसी अच्छी औषधि है। रात को सोते समय दूध न पीवें। सिनेमा, साँग (स्वांग) आदि बुराइयों से दूर रहें। गन्दी पुस्तक पढ़ना, दुराचारी लड़कों के साथ रहना, गर्म पदार्थ, खटाई, मादक द्रव्य छोड़ देवें। रात को सोते समय मूत्र त्याग अवश्य करें। मूत्रेच्छा को उसी समय उठ कर निवृत्त होवें। भोजन सोने से तीन घण्टे पूर्व करें। भोजन सात्विक और सुपाच्य हो। प्राणायाम और शीर्षासन स्वप्नदोष और प्रमेह के लिए अमृत तुल्य है। सीधे न सोवें दाहिनी करवट सोवें और ऊपर वाला पैर आगे की तरफ करके न सोवें। इस से मसाने और उपस्थइन्द्रिय पर भार आकर उष्णता बढ़ जाती है और इस से स्वप्नदोष हो जाता है। नित्य लंगोटे बांधकर सोवें। पर्याप्त शीतल जल से दोनों समय स्नान करें। इन उपायों से स्वयं स्वप्नदोष शान्त हो जाता है।

स्वप्नदोष चिकित्सा (१)

बीज बिधारा, नागौरी असगन्ध, विदारीकन्द प्रत्येक ५-५ तोले लेकर बारीक पीस लेवें। इनके समान मिश्री अथवा खाँड मिलाकर रखें। इसकी मात्रा ३ माशा से ६ माशा है। प्रातः सायंकाल गोदूध अथवा जल से सेवन करें। यह औषधि विद्यार्थियों नवयुवकों के अमृत जैसा कार्य करती है।

योग (२)

बट (बड़) वृक्ष की छाल १ सेर लेकर जल ४ सेर लेकर क्वाथ करें। जब एक सेर क्वाथ शेष रहे छानकर पुनः पकायें। जब रबड़ी जैसा गाढ़ा हो जाए, अग्नि से उतारकर सूर्य के ताप में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखाकर शुष्क करें। जब गोली बनाने योग्य हो जाए दो-दो रत्ती की गोलियां बना लो। एक-एक गोली प्रातः शाम दूध के साथ सेवन करें। इससे स्वप्नदोष और प्रमेह, मूत्र में धातु का जाना दूर हो जाता है।

योग (३)

बड़ के पके पीले रंग के पत्ते ५ सेर किसी पात्र में डालकर जल २० सेर ऊपर से उसी जल में डाल देवें। इन पत्तों को तीन चार दिन जल में ही भीगा रहने देवें। पश्चात् आग पर चढ़ाकर क्वाथ करें। जब क्वाथ ५ सेर शेष रहे तो आग से उतारकर उन पत्तों को हाथ से खूब मथ देवें। जिस से वह सब गल जावें फिर छान लेवें। फिर क्वाथ को डालकर पकावें। पकते समय पलटे से चलाते रहें नहीं तो कढ़ाही के पैंदे में लगकर जल जावेगा। जब गाढ़ा रबड़ो के समान हो जाए उतारकर निम्नलिखित औषधि जो पूर्व ही कूटकर तैयार की हुई हो मिला देवें।

इमली के बीजों की गिरी २॥ तोला, बिधारा २॥ तोला, बंगभस्म १ तोला, दाना छोटी इलायची १ तोला, असली बंशलोचन १ तोला, शुद्ध धतूरे के बीज ६ माशे, कपूर देशी ३ माशे, रेवन्द चीनी १ तोला, अहिफेन (अफीम) ३ माशे इनको मिलाकर २-२ रत्ती की गोली बना लें।

उपयोग:—एक एक गोली प्रातः शाम दूध अथवा जल शीतल के साथ अवस्था तथा रोगानुसार देवें। किसी भी औषधि से धातु का रोगी ठीक न होता हो तो इससे निश्चित रूप से दूर हो जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (४)

वंग भस्म १ तोला को सात दिन हरी भाँग के स्वरस में खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बनाकर रखें। एक गोली सोते समय निगल जावें, ऊपर से ताजा जल लेवें। इस दवा से पहिले ही दिन में भयंकर से भयंकर स्वप्नदोष बन्द हो जाता है।

योग (५)

ब्राह्मी ५ तोला, शंखपुष्पी ५ तोला, शतावर ५ तोला, संगे जराहत ५ तोला, मिश्री २० तोला,

उपयोग—इन सबको यथाविधि कूट पीसकर चूर्ण बनालें। ३-३ माशे प्रातः शाम बकरी के दूध के साथ सेवन करें, इस से स्वप्नदोष कुछ दिन में ही बन्द हो जाता है। इस पर किसी प्रकार का अपथ्य न किया जाये तो पुनः स्वप्नदोष नहीं होता, ऐसा देखने में आया है।

मूसली आदि चूर्ण (६)

सफेद मूसली ४ तोला, भाँग पत्र शुद्ध ६ माशे बंग भस्म ६ माशे, विदारीकन्द २ तोले, कौंच के बीज २ तोले, असगन्ध २ तोले, सत बिरोजा १ तोला, रूमी मस्तगी १ तोला, छोटी इलायची एक तोला, कपूर देशी १॥ माशा, खाँड १५ तोले,

गुण—इन सब को कूट छान कर रखलें। प्रातः शाम ३-३ माशे गोदूध से सेवन करें। यह मीठा चूर्ण स्वप्नदोष. प्रमेह को दूर करता है। वीर्य की रक्षा के लिए नित्य प्रयोग करते रहना चाहिए।

चन्द्रकान्ता वटी (७)

शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ३ तोले, कीकर की कच्ची फली छाया शुष्क का घनसत्त्व २ तोले, (यह फली उस समय लेनी चाहियें, जब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनमें सफेद पीले रंग का गूदा (रस) हो जाये, इससे पहले यह न्यून गुण वाली होती है)

वट (बड़) के पीले पके ताजा पत्तों का घनसत्त्व १ तोला, कोंच के बीज २ तोले, गिरीबीज इमली २ तोले, त्रिबंग भस्म २ तोले, अजवायन खुरासानी एक तोला, तालमखाना एक तोला, उत्तम लौह भस्म १ तोला, कपूर देशी १ तोला, शुद्ध बीज धतूरा ३ माशे,

निर्माण विधि—किसी उत्तम खरल में धतूरे के बीजों को पानी के साथ आधा घण्टा खरल करें, पश्चात् कपूर को मिलाकर घुटाई करें, जब कपूर अच्छी तरह मिल जावे, तब शुद्ध शिलाजीत फिर दोनों घनसत्त्वों को मिलाकर पीसें। जब यह भी मिल जावें, फिर सब औषधियों को मिलाकर जल की सहायता से खरल करें। जब घोटते २ सारी औषध का एक जीव हो जाये तब इसकी ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें। छाया में सुरक्षित रखें।

मात्रा—अनुपान—दो गोली प्रातः निराहार दूध के साथ और दो गोली शाम को सोते समय दो घूंट ताजा जल से सेवन करें।

गुण—स्वप्नदोष, सब प्रकार के प्रमेह, शीघ्रपतनादि रोगों के लिये यह गोलियां अमृत के समान कार्य करती हैं। पानी जैसे पतले वीर्य को पारे जैसा गाढ़ा कर देती हैं। वीर्य सम्बन्धी सब दोषों को दूर करके सन्तान उत्पन्न करने के योग्य बना देती हैं। जिस पुरुष को वीर्य की कमी के कारण, शिर चकराना, हर समय शिर में दर्द बना रहना, शिर का भारी रहना, नेत्रों के सामने उठते बैठते अन्धेरा हो जाना, हर समय जुकाम का बना रहना, मस्तिष्क की स्मरणशक्ति का न रहना, पेट यकृत्, आंतड़ियों तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुर्दा इत्यादि के रोगों को दूर करके शरीर को शक्ति देती हैं। क्षुधा अच्छी लगने लगती है। भोजन करने पर पचकर भली-भांति रस बनने लगता है। शरीर की कमजोरी दुबलापन हटा देती है। रक्त का संचार हो जाता है। बहुमूत्र और एक एक बूंद मूत्र का आना, सब दूर हो जाता है। हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देती है। मस्तिष्क और शरीर की थकान को पास नहीं आने देती। यह अमूल्य दवा निराले ढंग की है। शीघ्र ही लाभ दिखाती है। इसके सेवन से बहुत मनुष्य स्वस्थ हो गये हैं। बनाकर लाभ उठायें। अनुभूत है।

प्रमेह की शर्तिया गोलियां (८)

गुप्ता एण्ड कम्पनी के चन्द्रगुप्त टोहाना की प्रसिद्ध पेटेण्ट गोलियां हैं।

सूर्यतापी शिलाजीत ३ तोला, आमला ३ तोला, भाँग की पत्ती शुद्ध ३ तोला, हल्दी ३ तोला, शुद्ध रसौंत ३ तोला, जायफल १ तोला, शुद्ध एलवा २ तोला, कपूर देशी २ तोला, बच एक तोला, चांदी भस्म एक तोला, त्रिवंग भस्म ५ तोला, अफीम २ माशा।

विधि—एक उत्तम खरल में शिलाजीत, रसौंत एलवा और कपूर को बारीक पीसकर जल डालकर खूब खरल करें। जब यह नर्म हो जाये, खरल करते-करते एक जीव हो जाये, तब दूसरी औषधि जो बारीक चूर्ण बनाकर रखी हुई हैं, उनको मिलाकर जल से २-३ घण्टे दृढ़ हाथों से घुटाई करें। फिर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेवें।

गुण—एक गोली निराहार प्रातः तथा एक गोली शाम को सोते समय ताजा पानी से, दो चार घूंट के साथ निगल जावें। स्वप्नदोष और प्रत्येक प्रमेह के लिए यह गोलियां बहुत ही लाभ-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायक प्रतीत हुई हैं। यह अपने गुण के कारण प्रसिद्ध हो चुकी हैं। इनके प्रयोग से मूत्र के साथ अथवा पहले, पीछे, मध्य में धातु का बहना, नितान्त बन्द हो जाता है। प्रमेह से उत्पन्न होने वाली दुर्बलता दूर हो जाती है। शुक्र बहुतायत से पैदा होता है। पतली धातु गाढ़ी हो जाती है। हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देती है। नवीन रक्त संचार होकर चेहरे पर चमक आजाती है। शरीर की कमजोरी दूर होकर उत्साह भर जाता है। यह प्रमेह और प्रमेह से होने वाली कमजोरी की एकमात्र चिकित्सा है।

मधुमेह प्रकरण

मधुमेह को भाषानुसार जियाबेतिस तथा डायविटीज भी कहते हैं।

१. सभी प्रकार के प्रमेह ठीक तरह से चिकित्सा न करने से पुराना होने पर मधुमेह का रूप धारण कर लेते हैं।

२- यह रोग प्रायः पाचनशक्ति की विकृति अथवा कमजोरी से पैदा हो जाता है। इसमें मूत्र अधिक आता है। जोकि ३॥ सेर से ७-८ सेर तक होता है। मूत्र में गुरुत्व १०२५ से १०४५ तक एवं मूत्र में शर्करा (चीनी) आधी रती से २० रती तक होती है। मूत्र गाढ़ा, लिबलिबा पीला होता है। अथवा मूत्र शहद की तरह होता है। मूत्र का रंग और स्वाद शहद के समान मीठा हो जाने से मधुमेह कहलाता है। मधुमेह रोगी की जिह्वा निराले ढंग से लाल, सूखी, मोटी, दरदरी हो जाती है। अधिकतर मुख में छाले हो जाते हैं। शिर दर्द और सुस्ती बनी रहती है। शरीर में बेचैनी हो जाती है। रोग बढ़ जाने पर नाड़ी क्षीण हो जाती है। दम घुटता है। श्वास क्षीण हो जाता है। उसमें मीठे सेव जैसी गन्ध आती है। मधुमेह का रोगी प्रायः कारबंकल (फोड़ा), क्षयरोग,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमोनिया, अतिसार का रोग होकर ही मृत्यु को प्राप्त होता है। मधुमेह में उपद्रव मारक होते हैं। इस रोग में कामशक्ति (मैथुन शक्ति) समाप्त होती है। कई रोगी अन्धे या मोतियाबिन्द से पीड़ित हो जाते हैं। कई बेहोश होते हैं, बेहोश रहते-रहते मर जाते हैं। यदि मधुमेह जाड़े में बढ़े तो कफ प्रधान है। ग्रीष्म ऋतु में बढ़े तो पित्त प्रधान है। यदि वर्षा में बढ़े तो वात प्रधान है।

मधुमेह चिकित्सा

याद रखने योग्य बातें

रोगी न्यून बोले। छाता लेकर मौन होकर धीरे-धीरे भ्रमण करे। व्यायाम करे, यहां तक कि पसीना अच्छी प्रकार से निकल जावे। भूमि खोदे। कोई भी शक्तिप्रद व्यायाम बलानुसार करे। गोमूत्र पीवे। गोमय (गौ का गोबर) से मिला शुद्ध करके अन्न का सेवन करे। जल में तैरने का व्यायाम करे। नित्य स्नान करे। दिन में न सोवे। रात्रि को भी न्यून (थोड़ा) सोवे। ब्रह्मचारी रहे।

योग (१)

जामुन की गुठली की गिरी ५ तोला, सोंठ ५ तोला, गुड़मार बूटी १० तोला इन को कूट पीस कर कपड़ छान चूर्ण करलें। फिर घीक्वार के रस से झड़बेर समान गोली बनालें। प्रातः मध्याह्न, सायंकाल एक-एक गोली मधु के साथ सेवन करें। एक मास में लाभ हो जायेगा। यह औषधि अत्यन्त गुणकारी है। इससे प्रमेह पिड़िकायें, कारबंकल भी ठीक हो जाता है।

पथ्य—बाजरे की रोटी, मूंग की दाल, परवल, लौकी, गोदूध, बकरी का दूध पीवें। परन्तु दूध में मीठा भूलकर भी न मिलायें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीठा इस रोग में विष के समान है।

योग (२)

गुड़मार बूटी १५ तोला, जामुन की गिरी ७॥ तोले सूर्यतापी शीलाजीत १ तोला, स्वर्ण भस्म ७॥ रत्ती, उत्तम लोह भस्म ७॥ माशा।

विधि—इन सब को कूट छानकर मिलाकर सुरक्षित रखलें बलानुसार ४ माशे से ५ माशे तक प्रातः शाम गोदूध के साथ सेवन करें। दूध में मीठा न मिलाये और पथ्य पालन करें।

योग (३)

० मेथी दाना ६ माशा को कूटकर जल १ छटांक लेकर शाम को भिगो दें। प्रातः खूब घोटकर कपड़े में से छानकर जल को पीवें। इसमें मीठा न मिलायें। १॥-२ मास नित्य सेवन करने से मधुमेह नितान्त चला जाता है। आप अपनी तसल्ली के लिए मूत्र परीक्षा कराके देखलें। मधुमेह जैसे हठीले रोग से छुटकारा करने के लिए यह एक उत्तम चुटकला है। इसी मेथी जल से कई रोगी अच्छे हो गये हैं। इसको छोटी चीज समझकर छोड़ न देवें, इसका प्रयोग करके देखें। उत्तम औषध है।

योग (४)

० हरे नवीन करेले का रस १॥ तोला से २॥ तोला तक (बलानुसार प्रयोग करें) की मात्रा में थोड़ा सा नमक मिला कर प्रातः प्रातराश के पश्चात् सेवन करें। प्रातः थोड़ा सा भोजन करने को ही प्रातराश कहते हैं। एक डेढ़ मास में रोग चला जाता है। करेले का रस मधुमेह (जियाबेतिस) के लिए लाभदायक सस्ता चुटकला है। यह एक उत्तम चुटकला है।

योग (५)

बेलपत्र (बेलगिरी के पत्ते) गणना में १८ नग, जल २॥ तोले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में घोट कर पीवें प्रातःकाल सेवन करें। तथा डोडा पनीर १५ दाने सायंकाल जल में भिगोदें। प्रातः क्वाथ (जोश देकर) करके चतुर्थांश रहने पर छानकर पीवें, इसी भांति शाम को डोडा पनीर भिगोदें और प्रातः जल मिला कर क्वाथ करके पिलावें। डोडा पनीर का क्वाथ एक दिन छोड़ कर तीसरे दिन पिलावें। बेलपत्र रोजाना पिलावें। एक दिन बेलपत्र और डोडा पनीर दोनों सेवन करें, दूसरे दिन केवल बेलपत्र का प्रयोग करें। इस प्रकार तीन मास पर्यन्त सेवन करने से रोग निर्मूल हो जाता है। मूत्र में शक्कर आने पर पूर्णतया लाभकारी है। यह योग श्री मुलकराज (गांधी) शक्करबस्ती से प्राप्त हुआ था।

योग (६)

गुड़मार बूटी २॥ तोला, गिरी जामन गुठली ४ तोला, सूखा करेला ८ तोला, सूर्यतापी शिलाजीत तीन तोला, त्रिबंग भस्म २ तोला, उत्तम लौह भस्म १ तोला, अफीम ६ माशे,

विधि—इन सब को यथाविधि कूट पीसकर घीक्वार के रस में घोटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावें। एक एक गोली प्रातः शाम गोदूध से सेवन करें। मधुमेह पर अनुभूत है। यह योग वैद्य भरतसिंह जी रोहतक से प्राप्त हुआ है।

योग (७)

जामुन की गुठली ५ तोला, गुड़मार बूटी ५ तोला, स्वर्ण-माक्षिक भस्म २॥ तोला इन को करेले के रस में खरल करके ४-४ रत्ती की गोलियां बनावें। छाया में शुष्क करके रखें। प्रातः शाम दो-दो गोली अर्क गुलाब से सेवन करें। निश्चित लाभ होगा।

योग (८)

त्रिबंग भस्म तीन तोला, छायाशुष्क नीम पत्र १० तोला,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुड़मार बूटी १० तोला, सूर्यतापी शिलाजीत १५ तोले,

० **विधि**—प्रथम शिलाजीत को पानी के साथ खरल में पीसकर मिला लेवें। फिर त्रिबंग भस्म मिलाकर घुटाई करें। पश्चात् अन्य औषधि पीसकर मिलादें, दो तीन घण्टे रगड़कर ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें।

प्रयोग—चार चार घण्टे के अन्तर से तीन तीन गोलियां सेवन करें। सारे दिन में चार बार १२ गोली प्रयोग कर। प्रत्येक मात्रा में जामुन की गुठली का चूर्ण रत्ती अथवा गूलर फल का चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर सेवन करें। ऊपर से बेलपत्र का स्वरस अथवा ताजा गिलोय के पत्तों का रस निकालकर १ तोला पीवें। यदि गिलोय अथवा बेलपत्र किसी कारण न मिले तो ताजा जल से सेवन करें। यह मधुमेह और बहुमूत्र का अनुभूत योग है। यदि इस दवा में स्वर्ण भस्म मिला दिया जाये तो यह योग कभी निष्फल न होगा। यह योग श्री वैद्य यादव जी त्रिक्रम आचार्य का है। हमने भी खूब परीक्षा की है।

योग (९) मधुमेह संहार रस

० यह योग स्वर्गीय गोर्धन शर्मा छाँगानी नागपुर का है। मधुमेह प्रमेह को दूर करने के लिए कई योग अनुभूत ही लिखे हैं। परन्तु मधुमेह संहार रस के प्रयोग से जितना शीघ्र लाभ देखने में आया है उतना कोई ही योग सफल होता है। यह बड़ा सफल योग है। मधुमेह में यह रामबाण जैसा कार्य करता है। रोगी के मूत्र में कितनी ही शक्कर क्यों न जाती हो, और कितना ही रोग क्यों न बढ़ा हुवा हो, यह अवश्य सफल हो जाता है। सचमुच यह अमूल्य रत्न है मधुमेह और प्रमेह को दूर करने में।

० **योग**—जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, दाना छोटी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलायची १ तोला; कालीमिर्च १ तोला, लौंग १ तोला, कपूर देशी १ तोला, कृष्ण अभ्रक भस्म एक तोला, असली चन्द्रोदय एक तोला, अशुद्ध बीज सफेद धतूरा २॥ तोला, दारचीनी २॥ तोला, शिंगरफ से निकला पारद २॥ तोला, लौह भस्म २॥ तोले, शुद्ध गन्धक २॥ तोला, अफीम १४ तोले,

० **निर्माण विधि**—सब औषधियों को पृथक् २ कूटकर तोलकर लेवें। क्योंकि औषधि कूटने पीसने पर कम हो जाती है और योग में त्रुटि आजाती है, इसलिये कूट छानकर तोलें। फिर एक शुद्ध खरल लेकर पारे गन्धक की कज्जली करें, जब कज्जली अच्छी प्रकार हो जाये तो चन्द्रोदय को डालकर खूब खरल करें। जब तक इसकी चमक दीखती रहे, खरल में घुटाई करते रहें। जब चमक न रहे फिर अभ्रक भस्म और लौह भस्म मिलाकर खरल करें, जब एक जीव हो जावे, तब अफीम और कपूर मिलाकर धतूरे के पत्तों के रस में खरल करें (धतूरे के पत्तों का रस निकालकर रखदें जब गाढ़ा भाग नीचे बैठ जाये ऊपर का निथरा हुवा जल लेवें) जब यह लेई की तरह हो जाये, तो दूसरी औषधि जो कूट पीसकर रखी है, मिलाकर २४ घण्टे खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर शीशी में भरकर कार्क लगाकर रखें।

० **उपयोग**—औषधि प्रयोग करने से पूर्व रोगी की हल्का सा जुलाब दे देवें। जिस से दो तीन दस्त आजावें। इस के पश्चात् नित्य प्रातः और रात्रि को सोते समय १-१ गोली कदोष्ण दूध के साथ सेवन करें। जब तक इस औषधि का सेवन रहे, तब तक प्रातः शाम भोजन के उपरान्त दोनों समय ओरोग्यवर्धनी रस १-१ माशा थोड़े गर्म जल के साथ सेवन करते रहें। आरोग्यवर्धनी रस आयुर्वेद का प्रसिद्ध योग है। किसी पुस्तक में देखलें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुमूत्र रोग

योग (१)

वसन्त कुसुमाकर रस १ रत्ती, च्यवनप्राश १ तोला दोनों को मिलाकर प्रातः शाम गोदूध से सेवन करें। यह एक मात्रा है। इस भांति कुछ दिन सेवन करने से बहुमूत्र रोग दूर हो जाता है।

योग (२)

तिल, बबूल का गोंद ४०-४० तोला, हल्दी १० तोला, गुड़ ५० तोले।

निर्माण विधि—तिलों को कढ़ाही में भून लेवें। हल्दी और गोंद को घी में भून लेवें। फिर इन सब को मिलाकर फिर गुड़ मिलाकर ५-५ तोले के लड्डू बनाकर रख लें। सोते समय लड्डू खावें। यह औषधि सर्दी में बैठने वाले और वृद्धावस्था में बहुमूत्र पर अच्छा कार्य करती है।

योग (३)

पोस्तदाना ५ तोले, गुड़ ५ तोले। पोस्तदाने को बारीक पीस-कर गुड़ मिलाकर एक एक माशा खावें। जल के साथ सेवन करें।

सुजाक रोग निदान

कारण—व्यभिचार (अधिक मैथुन) करने से मूत्रेन्द्रिय में भीतर का भाग सूज जाता है। जिससे पीड़ा, दाह (जलन), टीस होने लग जाती है। थोड़े समय के पश्चात् पीप बननी प्रारम्भ हो जाती है।

(२) ऋतुमती स्त्री से समभोग करने से यह रोग हो जाता है। क्योंकि ऋतुकाल में स्त्री के योनि मार्ग से प्राकृतिक दुर्गन्धित रक्त आता है। इस काल में समभोग करने से स्त्री पुरुष दोनों रोगी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाते हैं।

(३) उष्ण, तीक्ष्ण पदार्थों के सेवन से यह रोग हो जाता है। यथा लालमिर्च, तीव्र मसाला, अचार, खटाई, चटनी, शराब, चाय, मास, अण्डा, मछली आदि, क्योंकि इन पदार्थों के सेवन से मूत्र में तेजाब अथवा उष्णता उत्पन्न होकर मूत्रेन्द्रिय के भीतरी भाग को क्षत कर देता है, जिस से खुजली और जलन उत्पन्न हो जाती है और सुजाक रोग उत्पन्न हो जाता है।

(४) सुजाक के रोगी स्त्री पुरुष से जो भी स्त्री पुरुष भोग करेगा, वह सुजाक रोग में प्रवेश कर जाते हैं।

(५) गर्भवती स्त्री से संभोग करने से भी यह रोग हो जाता है क्योंकि गर्भावस्था में योनि मार्ग से एक प्रकार का मल निकलता है।

(६) मधुमेह आदि प्रमेह रोग होने पर भी सुजाक हो जाता है।

सामान्य लक्षण

मूत्रेन्द्रिय में दर्द होता है। टीस लगती है। प्रारम्भ में एक प्रकार की नीले रंग की जल जैसी पीप आती है। मूत्र करते समय पीड़ा होती है। यह लक्षण पांच सात दिन तक रहकर पश्चात् स्पष्ट रोग के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। मूत्र थोड़ा थोड़ा बार-बार जलन के साथ आने लगता है। मूत्रेन्द्रिय पर शोथ हो जाता है। पीप आने लगती है। यदि थोड़ा सा स्पर्श हो जावे तो असह्य पीड़ा होती है। कभी कभी पीपमिश्रित रक्त भी आता है। यह अवस्था दो तीन सप्ताह रहकर कुछ लाभ सा प्रतीत होता है। दर्द न्यून हो जाता है, पीप बन्द हो जाती है। पीप केवल मूत्रेन्द्रिय के भीतर चिपकी रहती है। यह अवस्था अधिक दिन तक बनी रहती है। इसी को यूनानी में कुरहा कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा

प्रथम जो कारण इस रोग के होने के लिए लिखे गये हैं उनको छोड़ देवें। नहीं तो लाभ नहीं होगा। रोगी की चिकित्सा आरम्भ करने पर पेशाब का जुलाब देना चाहिये। जिस से जलन दूर हो जाती है और मूत्रेन्द्रिय से पीप आदि मल शुद्ध हो जाता है।

मूत्रेन्द्रिय जुलाब (१)

गुल अरमनी मिट्टी ९ माशे, कलमीशोरा ९ माशे इन दोनों को पिलाओ, जल ३ सेर मिलावें। इस जल को दिन में कई बार पिलावो। इससे पेशाब का जुलाब खूब होता है।

योग (२)

शीतलचीनी, चोपचीनी, रेवन्द चीनी, कल्मीशोरा, जीरा सफेद, इलायची छोंटी, प्रत्येक ६ माशे। मिश्री १॥ तोला। इनको कूट पीस छानकर ३ मात्रा बना लेवें। बकरी के दूध में अथवा गो-दूध में दुगुना जल मिलाकर लस्सी बनावें। इस दूध की लस्सी के साथ एक एक मात्रा प्रातः दो दो घण्टे के अन्तर से सेवन करें। यह दूध की लस्सी जितनी पी सके उतनी पीनी चाहिये। इससे मूत्र का जुलाब खूब होता है।

योग (३)

कल्मीशोरा ७ माशे, रेवन्द चीनी ७ माशे, यवक्षार ६ माशे, सफेद जीरा ३ माशे। इन सबको कूटकर मिश्री अथवा खांड २ तोले मिलाकर रख लें। इसकी ९ माशे की मात्रा दूध की लस्सी के साथ दिन में तीन बार सेवन करायें। यह एक मात्रा है। ऐसी मात्रा तीन बार देवें। प्रातः, मध्याह्न, शाम को देने से मूत्र का जुलाब होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा

योग (१)

केले के वृक्ष को क्रूटकर स्वरस निकाल लें। यह स्वरस (पानी) १० तोले ऐक मिट्टी के नवीन पात्र में शाम को बाहर खुले स्थान में रख देवें। प्रातः सुजाक के रोगी को १ माशा कल्मीशोरा खिलाकर ऊपर से यह केले का पानी बाहर रखा हुआ पिला देवें। इस प्रकार नित्य प्रति पिलाते रहें। लाभ होगा।

योग (२)

बिरोजा सूखा २ रत्ती, सफेद राल २ रत्ती, चन्दन का तैल ५ बूंद। इन को ऐक बड़े कैपसूल में भरकर अथवा बिना कैपसूल के ही खिलादेवें। ऊपर से दूध की लस्सी, पानी पिलादेवें। यह एक मात्रा है। इसी प्रकार प्रातः शाम एक एक मात्रा नित्य खानी चाहिये। इस से लाभ होगा।

योग (३)

चन्दन का तैल १ तोला, माजू हरा १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, बंशलोचन १ तोला,

विधि—इन सब को पीसकर सात मात्रा बनालें। रात्रि को एक छटांक मिश्री एक मिट्टी के पात्र में डालकर एक सेर जल भर कर बाहिर रख दें। प्रातः एक मात्रा इस मिश्री के जल के साथ सेवन करायें। सात दिन तक देते रहने से पूर्ण लाभ होगा।

योग (४)

बंशलोचन २ तोला, रूमी मस्तगी २ तोला, चन्दन का तैल १॥ तोला, छोटी इलायची २ तोला, शुद्ध बिरोजा सूखा २ तोला,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि—इन सब को पीसकर चन्दन का तैल मिलाकर जंगली बेर (झाड़) के समान गोलियां बनालें। प्रातःकाल एक गोली बासी जल के साथ खांड मिलाकर सेवन करें। इससे निश्चित लाभ होगा। भोजन में दही, चावल, अथवा गेहूं की रोटी गोघृत से खावें। अरहर की दाल, बिना मिर्च की, जिस में सेंधा नमक बहुत थोड़ी मात्रा में मिलाया हो।

योग (५)

शर्दचीनी (कबाब चीनी), कुलफे के बीज, बंशलोचन, छोटी इलायची, सूखा बिरोजा. शुद्ध शिलाजीत, राल, चन्दन का तैल प्रत्येक ६-६ माशे लेकर पीसलें, और तैल चन्दन मिलाकर झाड़ बेर के समान गोलियां बनालें। प्रातः शाम एक एक गोली प्रयोग करें। अनुपान में जल दूध की लस्सी. शर्बत बिजूरी आदि से सेवन करावें, निश्चित लाभ होगा।

योग (६)

चन्दन का असली तैल १॥ छटांक, कीकर (बबूल) का गोंद १ छटांक, बिरोजे का तैल २॥ तोला, स्वर्ण गैरिक १ छटांक।

निर्माण विधि—गोंद और गेरू को बारीक पीसकर दोनों तैल मिलाकर खूब खरल करें। सारी दवा मिल जाने पर शीशी में सुरक्षित रखें। तीन माशा की मात्रा में दिन में तीन वार (एक एक मात्रा) दूध की लस्सी के साथ देवें। दूध की लस्सी १ पाव दूध में २ पाव जल मिला कर बनावें। इसी प्रकार लस्सी बनाकर खूब पेट भर कर पीवें। इससे नया पुराना सभी प्रकार का सुजाक अच्छा हो जाता है। मूत्र में जलन, दर्द, रुक रुक कर आना, सब दूर हो जाते हैं। अनुभूत है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (७)

मूत्रकृच्छ्र रोग में जो चिकित्सा लिखी है, वह इस रोग की भी चिकित्सा है। यदि इस रोग में मूत्र बन्द हो जावे, तो मूत्राघात की चिकित्सा करें।

योग (८)

बिरोजे का तैल, कबाब चीनी का तैल, और चन्दन का तैल १-१ तोला, देशी कपूर ३ माशे,

विधि—तीनों तैलों को मिलाकर (शीशी में) फिर कर्पूर मिलावें और सूर्य के ताप में रख दें। जब कर्पूर पिघल कर मिल जावे, तब रखलें।

मात्रा—१० से २० बूंद कैपसूल में भरकर अथवा पताशे में डालकर खिलावें। प्रातः शाम दोनों समय सेवन करायें।

गुण—सुजाक की यह अनुभूत दवा है। इससे मूत्र खुलकर आता है। मूत्र की जलन, दर्द, शीघ्र दूर हो जाती है। पीप आनी बन्द हो जाती है और मनुष्य इस रोग से मुक्त हो जाता है।

सुजाक की पिचकारी (९)

सुजाक रोग की औषधि मुख से खाने की अनुभूत लिखी गई है। परन्तु कभी २ यह रोग खाने की दवा से अच्छा नहीं होता। इसलिए पिचकारी का योग लिखा जाता है, जो अनुभूत है। मुर्दा संग १० तोला, भुनी सफेद फिटकरी १० तोले, शुद्ध रसौत दस तोला, कत्था सफेद दस तोला, काला सुर्मा दस तोला, भुना नीला थोथा एक तोला, रस कर्पूर एक तोला,

विधि—इन सब को बारीक पीसकर कपड़ छान करके रख लें। आवश्यकता पड़ने पर यह दवा ३-४ माशा लेकर ९ पिचकारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी में घोलकर एक बोतल में रख लें। इस घोल को हिलाकर ३ पिचकारी प्रातः ३ पिचकारी दोपहर तथा ३ पिचकारी शाम को लगायें। इसी प्रकार नित्य कुछ दिन लगाते रहें। निश्चित लाभ होगा। इससे नया पूराना सब प्रकार का सुजाक अच्छा हो जाता है। इसके साथ उपरोक्त कोई एक योग खाने वाला सेवन करना चाहिये। यह बड़ा उत्तम योग है।

सुजाक में पथ्य—सात्विक भोजन, दाल, गेहूँ, जौ की रोटी, चावल, मूंग चावल की खिचड़ी, हरा शाकादि, घी का प्रयोग अधिक करें।

अपथ्य—लाल मिर्च, तैल, खटाई, गर्म मसाला, इन को छोड़ देवें। ब्रह्मचर्य से रहें वरन औषधि से कोई लाभ नहीं। होगा।

आतशक (फिरंग) प्रकरण

आतशक भी सुजाक (प्रमेह) की तरह एक भयंकर रोग है। यह रोग फिरंगियों के कारण भारत में आया। इसीलिये इसका नाम फिरंग रोग प्रचलित हुआ। क्योंकि आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में इस का वर्णन नहीं मिलता। कुछ विद्वान् वैद्य उपदंश को ही फिरंग रोग मानते हैं। किन्तु अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है, कि यह भिन्न रोग है। फिरंग का वर्णन भाव-प्रकाश में मिलता है। चरक तथा सुश्रुत में उल्लेख नहीं है।

चरक मतानुसार

जायन्ते क्रिमयश्चापि क्लिद्यते पूतिगन्धि च।
विशीर्यते मणिश्चास्य मेढ्रं मुष्कावथापि च॥

उपेक्षा करने पर इसमें कृमि उत्पन्न हो जाते हैं। लिंग गल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है, और बहुत दुर्गन्ध आती है। इस पुरुष का लिंग, मणि और अण्डकोष गलकर झड़ जाते हैं। इति ध्वजभंगकृतक्लैव्यम्। यह ध्वज भंगकृत क्लीवता का उपदेश कर दिया। सुश्रुत में इस रोग को उपदंश के नाम से कहा है। कुछ कुछ विद्वान् वैद्य ध्वज भंग को पांच प्रकार का मानते हैं। ऐसा चरक का मत है। यथा-

एवं पञ्चविधं केचिद् ध्वजभंगं वदन्त्यपि।

उपदंश और आतशक में भेद—

उपदंश व्रण	फिरंगज व्रण
१- मैथुन के पश्चात् तीसरे या चौथे दिन दाना उत्पन्न होता है।	१- मैथुन के पश्चात् १ से ६ दिन में दाना उत्पन्न होता है।
२- साधारणतया अनेक दाने होते हैं।	२- प्राय एक ही दाना उत्पन्न होता है।
३- दाना मृदु (कोमल) होता है।	३- दाना कठोर होता है।
४- दाहयुक्त, पचुर पूय तथा रक्त लसिका होती है।	४- दाहरहित, केवल लसिका स्राव होता है।
५- व्रण के किनारे साफ कटे हुये भीतर से कुछ पोले और व्रण के तल से कुछ ऊंचे होते हैं।	५- किनारे न साफ न पीले और न तल में ऊंचाई होती होती है।
६- अत्यन्त पीड़ा होती है।	६- पीड़ा नहीं होती।
७- अन्य स्थान पर पूय लगने से व्रण बन जाता है।	७-अन्य स्थान पर व्रण नहीं बनता।
८- व्रण की ओर की जांघ की ग्रन्थियां फूलती है। यह	८- दोनों ओर की ग्रन्थियां फूलती हैं। वह कठोर, न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृदु पकनेवाली तथा अत्यन्त वेदनायुक्त होती हैं	पकनेवाली और वेदना रहित होती है।
९- उपचार न करने व्रण अधिक बढ़कर स्थानिक धातुओं का नाश हो जाता है परन्तु सार्वदैहिक लक्षण नहीं होते।	९- उपचार न करने से भी स्थानिक विकृति नहीं बढ़ती परन्तु विष सारे शरीर में फैल कर सार्वदैहिक लक्षण होते हैं।

आयुर्वेद का उपदंश दोषों की विकृति अथवा चोट आदि के लगने से उत्पन्न होता है, और आतशक रोग स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री को होता है। जो स्त्री अथवा पुरुष इस रोग में ग्रस्त हों, या रोगी के साथ भोजन करने या पीने की वस्तु पीने से, रोगी के वस्त्रों का प्रयोग करने से यह रोग एक दूसरे को लग जाता है। उपदंश और आतशक मूत्रेन्द्रिय से ही सम्बन्धित है। परन्तु दोनों रोग भिन्न भिन्न हैं।

कारण

यह रोग संक्रामक है। यह स्वस्थ पुरुष या स्त्री को हो जाता है। अधिकतर तो यह रोग वेश्याओं से समागम करने से होता है। इसके अतिरिक्त भी यह रोग होते देखा गया है। इस रोग के रोगी के साथ हुक्का, चाय इत्यादि पदार्थों का मिलकर सेवन करना, उसके वस्त्रों का प्रयोग करने से अथवा उस से मिलकर रहने से अथवा झूठा खाने से हो जाता है। आतशक वाली धाया का बालक को दूध पिलाने से बालक इस रोग में ग्रस्त हों जाता है। इस रोग को रोगी माता पिता की सन्तान में यह रोग अवश्य पाया जाता है। प्रारम्भ में यह रोग मूत्रेन्द्रिय में होता है पश्चात् होंठों, गुदा, मुख आदि स्थानों पर होता हुआ सारे शरीर में फैल जाता है। यह रोग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी अवस्था तक स्थानिक होता है। तीसरी अवस्था में यह मूत्रेन्द्रिय पर नहीं रहता।

लक्षण

लक्षण की दृष्टि से चार अवस्था हैं। आतशक का विष शरीर में प्रवेश होते ही रोग के लक्षण नहीं बनते। किन्तु दस-पन्द्रह दिन से लेकर ४५ दिन तक वह शरीर में दिखाई नहीं देता और शरीर में भीतर ही उन्नति करता रहता है। विशेषकर के ३ सप्ताह से ५ सप्ताह में लक्षण प्रकट होते हैं। प्रायः तीन सप्ताह के बाद ही दृष्टिगोचर होते हैं। प्रथम जिस स्थान पर इसका विष प्रवेश हुआ हो, वहां पर कठोर सा उभार पैदा होता है। पहले लाल व्रण की एक फुन्सी सी प्रतीत होती है। उसकी मूल (जड़) बड़ा कड़ी होती है जोकि धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। प्रारम्भ में इसमें दर्द नहीं होता और न ही किसी प्रकार का पोप निकलता है किसी-किसी को फुन्सी भी नहीं होती किन्तु मूत्रेन्द्रिय पर केवल त्वचा लाल और मोटी होती है जिसके देखने से आतशक का भ्रम भी नहीं होता। परन्तु इस प्रकार की फुन्सी अथवा उभार के उत्पन्न होने से एक सप्ताह पश्चात् वह शोथ कठोरता को धारण कर लेता है, परन्तु उसमें दर्द नहीं होता। प्रथमावस्था का समय ४ से ६ सप्ताह तक होता है कभी-कभी तो ६ मास तक होता है। इस अवस्था के लक्षण मिट जाने के पश्चात् रोगी को प्रायः दो मास पर्यन्त लाभ रहता है। फिर दूसरी अवस्था प्रारम्भ होती है। इस द्वितीय और तृतीय अवस्था में आतशक का विष सारे शरीर में हो जाता है। यह प्रथम अवस्था के व्यतीत होने के पश्चात् प्रारम्भ (लगभग दो मास बाद) होता है। इसके लक्षण इस प्रकार हैं। रोगी नितान्त दुर्बलता अनुभव करता है। दुःखी सा हो जाता है। शिर में तीव्र दर्द और मन्द २ ज्वर सा रहने लगता है। हाथ, पांव और सन्धियों में दर्द रहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है। गले और तालु में घाव हो जाते हैं। छाती, पेट और बाहु उसके पिछले भाग में थोड़े लाल रंग के चिह्न बन जाते हैं और कभी-कभी पीप भी बन जाती है। परन्तु दाह, दर्द और खाजादि नहीं होती। यही आतशक की फुन्सियों की विशेष पहचान है। भौं, पलकों, शिर के बाल गिर जाते हैं। इसके कुछ समय के पश्चात् अस्थियों, सन्धियों विशेषकर घुटनों में दर्द होने लगता है तथा नेत्रों में रोग का विष होने से आँख दुखने लगती हैं। इस अवस्था का समय प्रायः दो मास से एक वर्ष तक रहता है। इसके कुछ मास के बाद अगली अवस्था प्रारम्भ होती है। चतुर्थ अवस्था में अस्थियों, त्वचा, भीतरी भागों मस्तिष्क, फेफड़े, यकृत्, गुर्दे, प्लीहा आदि में विष पहुंच जाता है। अस्थियों पर उभार हो जाता है। जिनमें रात के समय तीव्र पीड़ा होती है। रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाता है। तालु आदि स्थानों में घाव होकर वह गल जाते हैं। कभी २ नासिका भी बैठ जाती है।

चिकित्सा

रोगी को रोग की प्रथम द्वियीय अवस्था में वमन (कै) और रेचन कराके पश्चात् औषधोपचार करना चाहिये। बिना संशोधन (कै, दस्त) के आतशक की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि इस रोग में पंचकर्म की क्रिया किये बिना बढ़िया से बढ़िया औषधि भी असफल हो जाती है।

योग (१) रेचक

जयपाल के बीज २ तोले, काली मिर्च २ तोले, दोनों को पीसकर खूब खरल करके ग्वारपाठे के रस में एक-एक रत्ती की गोलियां बनालें।

विधि—दो से चार गोली ताजा पानी से रोगी को देवें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन गोलियों में बिना शुद्ध किये हुये जमालघोटे की गिरी निकाल कर उसका पित्ता निकाल देवें और खरल करके मिर्च मिलाकर गोली बना लें।

गुण—यह गोलियां आतशक के पीप (विष) को बाहर निकाल कर ठीक कर देती हैं। अनेकों बार की अनुभूत हैं।

विशेष—जुलाब के पश्चात् २-३ दिन रोटी न देवें। दोनों समय बिना घी मिलाये, मूंग चावल की खिचड़ी खावें।

योग (२)

इन्द्रायणमूल १ पाव, नीम की जड़ की छाल ३ पाव, बबूल की फली १ सेर, कचनार छाल १ सेर, बुरादा शीशम १ सेर, पंचांग छोटी कण्टकारी १ सेर, हरड़ छाल १ सेर, दो वर्ष पुराना गुड़ १ सेर।

विधि—इन सब को कूट कर २० सेर नदी जल में तीन दिन तक औषधियों को भिगो रखें। पश्चात् कलईदार पात्र में डाल कर पकावें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर मलकर छान कर बोतलों में भर देवें। प्रत्येक बोतल में एक तोला रेक्टीफाइड स्प्रिट मिला देवें। यदि स्प्रिट न मिले तो बादाम रोगन या कोई अच्छी सुरा डाल देवें। सुरा के स्थान पर संजीवनी का ही प्रयोग करें। क्योंकि इस से वायु प्रवेश करके खराब न करेगी।

मात्रा—५ से १० तोले नित्य प्रातः पिलायें। पथ्य में गेहूं चने की रोटी के साथ घृत देवें अथवा दाल चावल दें। औषध प्रयोग काल में घृत अधिक सेवन करें।

गुण—इस से रेचन आकर आतशक का सब विष दूर हो जाता है। कुष्ठ रोग को भी अच्छा कर देती है। दो तीन मास यह औषधि खानी चाहिये। उत्तम योग है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (३)

थूहर के दूध में चने की दाल का आटा तीन चार दिन खरल करें। पश्चात् जंगली बेर के समान गोलियां बनालें। एक गोली आतशक के रोगी को प्रातः पानी से खिलायें। इस से खूब कै, दस्त होकर आतशक का विष निकल जाता है। यह तीन दिन तक नित्य एक गोली खिलायें।

पथ्य—दूध चावल, घी गोली खाने के एक घण्टे बाद देवें।

योग (५) रक्तदोष पर जुलाब

शुद्ध जमालगोटा, सौंफ, हल्दी प्रत्येक ६-६ माशे शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध रसकर्पूर १ तोला, कालीमिर्च ६ माशे।

विधि—रस कर्पूर और गन्धक को घोटकर कज्जली बनालें। शेष चार औषधियों को पीसकर मिलाकर पान के रस में घोटकर जंगली बेर के समान गोली बनालें। १ गोली प्रातः कदोष्ण जल के साथ लेवें। फिर एक-एक घण्टे में दो तीन बार गर्म जल पिलावें। जल की मात्रा एक समय में आधपाव होनी चाहिये। यह गोली एक सप्ताह प्रातः नित्य देते रहें।

गुण—इससे ५-६ दस्त नित्य आकर एक सप्ताह में कैसा ही गला सड़ा शरीर क्यों न हो, ठीक हो जाता है। नमक छोड़कर गेहूं की रोटी खावें। लालमिर्च, खटाई और किसी प्रकार का परिश्रम यहां तक कि पौड़ियों पर चढ़ना उतरना भी वर्जित है।

योग (५) त्वक् रोगान्तक वटी

नीलथोथा ५ तोला, सफेद फिटकरी ५ तोले। इन को कूट कर लोहे की कड़ाही में डालकर आग पर रखें। फिर किसी लोहे के करछुल से चलाते रहें। जब औषधि पिघल कर पानी जैसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर फिर शुष्क हो जावे, तो कड़ाही को आग से नीचे उतार कर खुर्च कर सब औषधि इकट्ठी कर लें। इस को तोलकर देखें। जितनी यह औषधि हो उससे आधी मात्रा में चित्रक मूल की छाल बारीक पीस छान कर मिलादें। फिर पानी के संयोग से खरल कर के १॥-१॥ माशे की गोलियां बनालें। एक से दो गोली प्रातः गर्म पानी से निगलवा दें। यदि निगलने में कठिनाई प्रतीत हो, तो फोड़ कर निगल जावें। इस से कै और दस्त होते हैं। पहले दो तीन वमन होते हैं, फिर दस्त होने आरम्भ हो जाते हैं। फिर कै (वमन) बन्द हो जाती हैं। इस का प्रयोग प्रायः १ सप्ताह होता है। इस से न्यूनाधिक भी किया जाता है।

गुण—कितना ही गला सड़ा आतशक क्यों न हो, अच्छा हो जाता है। आतशक का नाम तक नहीं रहता। कितना ही दूषित कुष्ठ हो, सारा शरीर तक गल गया हो, और डाक्टर लोग इन्जैक्शन लगाकर थक गए हों तथा अच्छा न होने का उत्तर भी दे चुके हों। परन्तु भगवान् की कृपा से वह कुष्ठ रोगी इससे अच्छे हो गए हैं। कुष्ठ, चम्बल, भगन्दर आदि रोगों में इन गोलियों के पश्चात् खाने और लगाने की औषधि कई मास तक देते रहें।

पथ्य—गेहूं चने की, चने की रोटी अथवा मूँग चावल की खिचड़ी घी चावल के साथ खिलावें। नमक तो भूलकर भी न देवें। जब कै दस्त बन्द हो जावें, मन स्वस्थ हो जावे, तब भोजन देवें। इन गोलियों को खाने से किसी किसी को वमन के साथ रक्त आजाता है। उससे घबरायें नहीं। यह गोली बालक, वृद्ध, और कमजोर पुरुष को न देवें। गर्भवती स्त्री तथा कोमल प्रकृति के आदमी को भी नहीं देनी चाहिएं। बलवान् रोगी को ही प्रयोग करायें। इन गोलियों का प्रयोग श्वास रोगियों पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी किया। वमन होने से श्वास नली कफ से शुद्ध हो जाती है। उससे दो तीन वर्ष तक श्वास का दौरा नहीं होता। श्वास रोग में दो तीन दिन प्रयोग करना प्रर्याप्त होती है। इनका प्रयोग प्रलेप रूप में भी होता है। गोली को पत्थर पर पानी डालकर घिस कर लगावें। दाद, नाई के उस्तरे की लाग से मुख पर फुंसियों का होना, चर्मरस अर्थात् जूते के काटे जाने पर व्रण होना। विषयुक्त फोड़ों पर, भिड़ ततैया के घाव पर, खाजयुक्त फैलने वाली फुंसियों पर लगाने से लाभ होता है। मैंने इसका प्रयोग अनेक बार किया है। सफल है। यह योग उर्दू की पुस्तक तिब्बी जवाहरात: लेखक कविराज जगन्नाथ वैद्य-वाचस्पति से लिया है।

योग (६)

शुद्ध जमालगोटा, मुर्दासंग, सफेद कत्था, शुद्ध सुहागा, शुद्ध गूगल, रस कर्पूर प्रत्येक ४-४ तोले, शुद्ध नीला थोथा १ तोला। इन सबको बारीक पीसकर १०० नग नींबुओं के रस में खरल करें। पश्चात् एक एक रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—एक गोली घी में लपेटकर निगलवा दें।

गुण—इससे वमन (कै) रेचन दस्त होकर आतशक का विष निकल जावेगा। एक सप्ताह में पुराने से पुराना आतशक मूल सहित उखड़ जाएगा। शरीर कितना ही गल सड़कर बदबू क्यों न आती हो। इसके प्रयोग में तृषा लगे तो गो दूध का प्रयोग करें। भोजन में दूध, चावल अथवा घृत रोटी देवें।

अपथ्य—तेल, खटाई, लाल मिर्च, दाल मूंग और कद्दू का शाकादि वर्जित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (७)

शुद्ध गन्धक ४ तोला, शुद्ध पारा हिंगुलोत्थ २ तोला, नीला थोथा १ तोला।

विधि—पारा और गन्धक की कज्जली बनावें। कम से कम छः घण्टे खरल करें। जब कजली जावे, तब इसमें नीलाथोथा पीसकर मिला दें। फिर खूब खरल करके रख लें।

गुण—१ रत्ती से २ रत्ती हलवे में लपेटकर निगलवा दें। कुछ दिन में गला सड़ा शरीर ठीक हो जाता है। अत्युत्तम औषधि है। इसको कैपसूल में भरकर भी दे सकते हैं। भोजन में घी का प्रयोग करें। तैल, खटाई लाल मिर्च वर्जित है।

योग (८)

रीठा फल की छाल का बारीक चूर्ण २०० ग्राम, नीला थोथा की डली १० ग्राम।

निर्माण—एक मिट्टी की छोटी सी हाण्डी में १०० ग्राम रीठे का चूर्ण रखकर ऊपर नीलेथोथे की डली रखें। फिर उसके ऊपर शेष रीठे का चूर्ण १०० ग्राम भी रखकर कपड़मिट्टी कर दें। इसको ३ सेर उपलों की आग में पुट दें। जब आग शीतल हो जावे, निकालकर पीसकर रख लें।

मात्रा—४ से ८ चावल अर्थात् एक रत्ती प्रातः शाम घृत में मिलाकर दें।

गुण—तीन दिन अथवा सात दिन में आतशक अच्छा हो जाता है। प्रयोग के समय तृषा लगे तो घी पिलावें। भोजन में गेहूं की रोटी और घी देवें। यदि रोग हल्का (थोड़ा) हो तो औषधि एक दिन छोड़कर देवें। अधिक होने पर कुछ मात्रा बढ़ाई जा सकती है। परम अनुभूत है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (९) विरेचक वटी

सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी, पीतदुग्धा या हेमवती) चैत्र, वैशाख में जब इस पर फल लगा हो, उसको जड़ से उखाड़कर मिट्टी आदि से साफ करके फिर छोटे छोटे टुकड़े काट लेवें, फिर जड़ से उखाड़कर मिट्टी आदि से साफ करके फिर छोटे छोटे टुकड़े काट लेवें, फिर कलईदार पात्र में दुगने जल में भिगो देवें। तीन दिन पानी में भीगा रहने दें। फिर आग पर चढ़ा देवें। जब चतुर्थांश क्वाथ शेष रह जावे, तब मसलकर छान लेवें। उस छने हुए जल को दोबारा अग्नि पर चढ़ाकर पकावें। जब रबड़ी जैसा गाढ़ा हो जावे, उतारकर धूप में सुखाकर गाढ़ा करें। फिर घोटकर मटर के समान गोली बना लें, और छाया में सुखाकर गोली बना लें।

गुण—रात को एक गोली से दो गोली तक अवस्थानुसार खाने से प्रातः मल साफ आयेगा, और उदर के कृमि भी निकल जायेंगे। दो से चार गोली तक लेकर ऊपर से गोखरू का शीत कषाय या हिम पीने से सुजाक व पथरी में भी लाभ हो जाता है। आतशक और उपदंश में ऊपर से चोबचीनी का चूर्ण फांके। लाभ होगा।

योग (१०)

रस कर्पूर १ तोला, लौंग १ तोला। इन दोनों को पीसकर भेड़ के दूध में तीन दिन खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बना लें।

गुण—एक एक गोली दिन में तीन बार घृत से अथवा जल से निगल जावें। दांत न लगने देवें। सब प्रकार का आतशक सात दिन में निश्चित दूर हो जाता है। इसके मुखपाकादि कोई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपद्रव नहीं होता। यह गर्भवती स्त्री को निःसंकोच दे सकते हैं। इसके प्रयोगकाल में बेसनी रोटी (गेहूं चना) और घृत का प्रयोग करें।

योग (११)

रीठे के छिलके का चूर्ण ५ तोले, सफेद कत्था २॥ तोले, कल्मीशोरा १। तोला, शुद्ध नीलाथोथा ६ माशे। इन सब को बारीक पीसकर दो दो रत्ती की गोली बना लें। सुखाकर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—प्रातः शाम दो दो गोली पानी से निगल जावें। इन के सेवन से किसी २ को कै हो जाती है। ऐसी हालत में निराहार न लेवें। फिर कोई कै (वमन) की संभावना नहीं रहती।

गुण—आतशक कितना ही पुराना क्यों न हो, इस से निर्मूल हो जाता है। इसके साथ गेहूं चने की बेसनी रोटी नमकरहित सेवन करें। इस का प्रयोग न्यून से न्यून २१ दिन करना चाहिये। इससे दूसरे त्वचा के रोग, चम्बल एग्जीमा, कुष्ठ, फोड़े, फुन्सी, दाद, खाज इत्यादि दूर हो जाते हैं। रक्त शुद्ध हो जाता है। उत्तम योग है।

योग (१२)

काली हरड़ ५ तोले, गुलाबी कत्था ५ तोले, कच्चा सुहागा ५ तोले, नीलाथोथा ५ माशे। इन सब को बारीक पीसकर आध सेर नींबू के रस में खरल करें। जब खरल करते करते काली हो जाये, तब हावन दस्ते में डाल कर १। लाख चोट लगायें। इसके पश्चात् झड़ बेर समान गोली बनालें।

गुण—एक गोली पानी से सेवन कशायें। इससे काले रंग का दस्त आयेगा। पैर पानी में न भीगने दें और स्नान भी न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें। रोटी घी से खावें। नमक वर्जित है। इससे नया पुराना आतशक अच्छा हो जाता है।

योग (१३) आतशक पर जुलाब

एक तोला इन्द्रायण मूल (जड़) को कूटकर एक पाव पानी में औटाओ। जब एक छटांक क्वाथ शेष रहे छानकर पिला दो। इस से ऐंठन होकर साफ दस्त होंगे। जिन में आंव भी निकलेंगी। इस के पश्चात् खाने वाली दूसरी दवा देवें।

योग (१४) उपदंशनाशक सैट

यह एक कम्पनी का गुप्त योग है। उनका विज्ञापन इस प्रकार है। यह बड़ा ही विकट और पाजी रोग है। बड़ी कठिनाई से आराम होता है। किन्तु हमारे उपदंश नाशक के प्रयोग से नयी नयी अथवा पुरानी गर्मी आतशक दूर हो जाती है। गला, सड़ा शरीर एक मास के औषध सेवन से निर्मूल हो जाता है। इस औषध से सभी उपद्रव जैसे उल्टी, दस्त, गठिया, मुखपाकादि का भय पूरी तरह निकल जाता है। आतशक के सारे कष्ट इससे मिट जाते हैं। उपदंश को जड़मूल से नष्ट करने के लिये हमारा उपदंश नाशक पूरा कोर्स काम में लीजिए। एक सैट में १- उपदंश नाशक २- धोने की दवा ३- उपदंश का मरहम। लीजिए सैट का प्रयोग इस प्रकार है।

१- उपदंशनाशक सैट

तुत्थ (नीलाथोथा) भस्म, रस कर्पूर शुद्ध, सत्यानाशी के बीजों का तैल, पारे की भस्म प्रत्येक समभाग।

विधि—सब को घोटकर पीसकर रख लो। एक रत्ती की मात्रा में कैपसूल में भरकर सेवन करायें। ऐसे दिन में तीन कैपसूल खिलायें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२- उपदंश नाशक धोने की दवा

त्रिफला ३ तोले, पानी एक सेर। दोनों को पकायें, पाव भर क्वाथ शेष रहने पर छान लो, फिर इसमें फिटकरी ६ माशे मिला कर रखलें। साफ रूई से मूत्रेन्द्रिय पर धार बांध कर धोते रहें। पश्चात् पौंछकर सुखाकर मरहम लगावें।

३- उपदंश नाशक मरहम

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक २-२ तोले, सुपारी जली हुई, आमला जला हुआ, माजू जला हुआ, मुर्दासंग १-१ तोला, पीली वैसलीन २० तोले।

निर्माण विधि—प्रथम पारे गन्धक को घोटकर कज्जली बना लें। फिर चारों औषधियों को बारीक पीसकर मिलाकर खूब घोटो। फिर वैसलीन मिलाकर एकजीव कर दें। बस मरहम तैयार है। उपरोक्त तीनों औषधि प्रयोग करने से आतशक चला जाता है।

योग (१५) आतशक हर मरहम

छोटी इलायची, पर्पटिया कत्था, जली सुपारी, मुर्दासंग, कौड़ी भस्म और शीतल चीनी तथा वैसलीन सब समान भाग लेवें।

विधि—कूटने पीसने योग्य चीजों को कूट पीसकर कपड़छान करलो। फिर सब को मिलाकर खूब घोटो। फिर अन्त में वैसलीन मिलाकर चौड़े मुंह की शीशी में भरलो। पहले मूत्रेन्द्रिय को नीम के पानी से धोकर यह मरहम चुपड़ देना चाहिये। इस से घाव शीघ्र भर जायेंगे।

योग (१६) उपदंश की मरहम

रस कपूर, शिंगरफ, सफेदा काशगरी, मुर्दासंग, सिन्दूर, पीली कौड़ी की भस्म प्रत्येक १-१ तोला, मोम एक तोला, चमेली का तेल ३ तोले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि—सब दवाइयों को बारीक पीसकर सुर्मा जैसी बनावें। फिर चमेली के तैल को गर्म करके मोम मिलावें। मोम पिघल जाने पर शेष औषधियां जो पहले पीसकर रखी तैयार रखी हैं, मिलाकर मरहम तैयार कर लें। इसे आतशक के घाव पर लगावें। आराम होगा।

बद्ध की चिकित्सा

प्रायः उपदंश और आतशक के रोगियों को पेडू के नीचे और जांघ के नीचे और जाँघ के ऊपर एक प्रकार का कठोर शोथ हो जाता है। जिस को साधारण जनता की भाषा में बद्ध कहते हैं। यदि इसकी चिकित्सा न की जाय तो पक कर फूट जाती है और अधिक कष्टप्रद होती है। इसलिए इस की चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये।

चिकित्सा

१- पीपल वृक्ष के पत्ते गर्म करके बांधने से लाभ हो जाता है।

२- संभालू के पत्ते गोमूत्र में पीसकर गर्म करके बद्ध पर बांधने से आराम आ जाता है।

३- मेथी दाना को गोमूत्र में रगड़ कर बद्ध पर लेप करने से बद्ध बैठ जाती है।

३- चूना सफेद (कलई) और शहद असली मिला कर वस्त्र पर प्लास्टर की तरह लगाकर चिपकादें।

५- कुचला और काली मिर्च दोनों को खूब बारीक पीसकर लेप करने से बद्ध बैठ जाती है।

६- आक के पत्ते एरण्डतैल में चुपड़ कर गर्म करके बांधने स बद्ध ठीक हो जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाद प्रकरण

(त्वचा रोग)

इस रोग (दद्रुकी) की आयुर्वेद में कुष्ठ के अन्दर गणना की है। यह शरीर के भिन्न भिन्न स्थानों में होता है। विशेषतया जांघ, ग्रीवा आदि स्थानों पर होता है। यह गोल ऊपर को उभरा हुआ, खुजली लालिमायुक्त फोड़े होते हैं। इसी को दाद कहते हैं।

विधि १

वैसलीन ४० तोले, गोआ पाऊडर २ औंस, एसिड क्रायसोनिक १ औंस, कार्बोलिकएसिड ६ माशा, बोरिकएसिड १ औंस, जिंकऔक्साइड १ औंस।

विधि—इन सब को यथाविधि मिलाकर मरहम बनालें। इसको दाद, चम्बल, कुष्ठादि त्वचा के रोगों पर प्रयोग करें। लाभकारी उत्तम योग है। औषधि को आंखों में न लगने देवें। दवा को लगाकर हाथों को मिट्टी अथवा साबुन से साफ करलें।

योग (२)

मैथिलिटिड स्प्रिट ५ औंस, सैलीसिलिक एसिड २ औंस, टिंचर आयोडीन १ ड्राम इनको एक शीशी में मिलाकर हिला देवें। बस औषध तैयार है। दाद के स्थान पर रूई की फुरेरी से दिन में दो तीन बार लगायें। दाद पर साबुन का प्रयोग न करें।

गुण:—यह दवा लगाते ही त्वचा के भीतर चली जाती है, और दाद के सब कृमियों को समाप्त कर देती है। इस से इतना शीघ्र लाभ होता है कि दवा लगानेवाला आश्चर्य करता है। खाज तो पहले दिन ही भाग जाती है। इससे कपड़े पर कोई धब्बा नहीं पड़ता। परन्तु एक मिनट लगती बहुत है फिर आराम हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। इसको जादू कहते हैं। यदि इसकी मरहम बनानी हो तो स्प्रिट के स्थान पर उसी के अनुपान में वैसलीन मिलाकर तैयार करलें। यदि मरहम बनानी हो तो टिंचर आयोडीन न मिलायें। केवल दो औषधि ही मिलावें। यह सफेद रंग की मरहम तैयार होगी।

योग (३)

चम्बल रोग में लिखी हुई सब औषधि दाद को अच्छा करती हैं। वहां प्रकरण में देख लें।

योग (४)

आक का दूध और शहद मिलाकर दाद पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

दद्रुघ्न मरहम (५)

आयल चाल मोगरा ३ तोला, मोम सफेद ६ माशे, एसिड कायसोफेनिक ३ माशे, कार्बोलिक एसिड ३ माशे।

विधि:—इन सब को मिलाकर मरहम बना लें। दाद को पानी से धोकर शुष्क करके इसे लगाना चाहिए। दाद इससे शर्तिया दूर हो जाता है। इसमें दाद, खुजली, चम्बल, कुष्ठ दूर करने की तासीर है।

योग (६)

गन्धक की डली लेकर, साफ पत्थर पर थोड़ासा मिट्टी का तेल डालकर गन्धक को घिसावें। इस घिसे हुए द्रव्य को दाद पर लगावें। तीन दिन नित्य लगाने से दूर हो जाता है। दाद के स्थान पर काला धब्बा बन जावेगा। वह स्वयं तीन चार दिन में मिट जायेगा और दाद अच्छा हो जाएगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चम्बल प्रकरण

चम्बल को एग्जीमा, छाजन इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है।

योग (१)

सिरसों का तैल ५ तोले, मोम ३ तोले, तारकोल (डामर) ५ तोले। पहले तैल को गर्म करें फिर मोम डालकर पिंघला लेवें। जब मोम पिंघल जावे, तब तारकोल मिलाकर अग्नि से नीचे उतार लें। जब तक शीतल हो तब तक हिलाते रहें। जब मिल कर मरहम बन जावे तब प्रयोग करें। यह चम्बल, दाद, खारिश में लाभ करेगा।

योग (२)

गन्धक ५ तोला, कास्टिक सोडा पतरीवाला ३ तोला, स्प्रिट २॥ तोला। इनको मिलाकर लगावें। इससे चम्बल में लाभ होगा। यह प्रयोग स्वर्गीय स्वामी सुधानन्द जी का परीक्षित है। उनसे ही प्राप्त हुवा था।

योग (३)

अर्क (आक) का दूध ५ तोले, उँट पशु की सूखी मेंगनी १० नग, गोघृत ५ तोले।

विधिः—सर्वप्रथम ऊँट की मेंगनी को आग में जला लें। जब निर्धूम हो जाए। जलते कोयले की तरह लाल हो जाए तब आक के दूध में (जो एक कटोरी में रखा है) जलते कोयले जैसी लाल मींगनी को बुझा दें। फिर उसी कटोरी में इन को रगड़ देवें। यदि यह न्यूनाधिक रहे तो दूध भी न्यूनाधिक कर लेवें। पश्चात् गोघृत डालकर खूब घोटें। मरहम जैसा बना लेवें। शीशी में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित रखें। नित्य लगाने से चम्बल नष्ट हो जाता है। यह चम्बल की उत्तम दवा है। विशेषकर सूखे चम्बल पर कारगर योग है। अनेकों बार का परीक्षित योग है।

योग (४)

पोटाशियम परमेगनेट (लाल दवा) कपड़छान, सनी के बीज, बोरिक एसिड प्रत्येक २-२ तोले। सब को पीसकर मिलाकर रख लें।

विधि:—चम्बल को नीम के पत्तों के क्वाथ (काढ़े) से धोकर साफ कर लें। इस में घी इतना मिलावें जिससे मरहम बन जावे। इससे चम्बल, कुष्ठ, खाज, दाद शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। विशेषतया बहनेवाले चम्बल पर तो कमाल कर दिखाती है। अनेकों बार की अनुभूत है।

योग (५)

एक कच्छप (कच्छुआ) की खोपड़ी (पीठ) जलाकर भस्म करलें। इस प्रकार बनी भस्म १० तोले, सिन्दूर १ तोला, देशी कपूर ६ माशे, नारियल का तेल २० तोले।

निर्माण विधि:—कच्छपास्थि वारीक पीसकर सिन्दूर तथा कपूर सब को एक कांसे के पात्र में डालकर एक ताजा नीम की लकड़ी जिसमें ताम्र पत्र लगा हो, घुटाई करें। फिर नारियल का तेल मिलाकर घोटकर महरम बनालें। शीशी में भरकर रख लें।

गुण:—यह औषधि उस चम्बल पर प्रयोग करें जिसमें गन्दा पानी जैसा पीप निकलता हो। किसी प्रकार का बदबूदार फोड़ा हो, घाव हो, सूख जाता है। अन्य किसी प्रकार का बदबूदार घाव हो, शीघ्र भर देता है। हमने इसका खूब प्रयोग किया है। सफल प्रयोग है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (६)

तारकोल (डाम्बर) को चम्बल पर लगा कर ऊपर कोई बारीक प्लास्टिक का कागज लगाकर अथवा किसी वृक्ष का पत्ता लगाकर चिपका दें। इस चम्बल के चारों तरफ मिट्टी का लेप कर दें, ताकि तारकोल फैल न जाये। फिर ऊपर पट्टी बांध दें। इस पट्टी को चार दिन बाद खोल दें। और उसी प्रकार दूसरी पट्टी बांध देवें। इस पट्टी के आस-पास खुजली हो जाती है। वहां पर कोई खुजली-नाशक मरहम लगाते रहें। इस प्रकार पट्टी के प्रयोग से नया चम्बल तो ५-६ पट्टियों में अच्छा हो जाता है। पुराना चम्बल समय लेता है। किसी-२ को ६ मास से भी अधिक पट्टी लगानी पड़ी। इससे चम्बल समूल नष्ट हो जाता है। अनुभूत है।

योग (७)

दाद, चम्बल, किसी प्रकार का त्वक् रोग हो. इससे अच्छा हो जाता है।

कुइक फिक्स (Quick Fix) सैलोलाईड जोड़ने का मसाला। यह जनरल मरचैन्टों के पास मिल जाता है। यह ट्यूब में आता है। इस को लेकर बिगड़े हुये चम्बल में, जिसमें पीप हो, सूजन, जलन, खाज हो लगा देवें। यह थोड़ी देर में सूख जायेगा। फिर कोई परहेज नहीं। चाहे पानी में भीगे चाहे मिट्टी लगे, कोई भय नहीं। इसे उतारें नहीं। जब यह अपने आप उतरे, दोबारा लगा देवें। लगाये हुये में दरार हो जाय, तो वहीं यह मसाला लगा दें। जिस घाव में पीप आती हो, अथवा असह्य खाज हो। जो किसी दवा से अच्छी होने में न आती हो। पहले घाव को स्प्रिट से साफ कर सुखा लें। फिर यह मसाला लगा दो। अद्भुत योग है। कई मनुष्य किसी स्थान विशेष पर खाज होने के कारण अत्यन्त दुखी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। उस खाज पर इसे लगा दो, तत्काल खुजली मिट जाती है। यह मसाला उस समय तक लगाते रहे. जब तक कि त्वचा का रंग काला परिवर्तन होकर पहले जैसा रंग न हो जावें। प्रयोग करके देखें। उत्तम योग है।

योग (८)

तारकोल तथा सरसों का तैल ५-५ तोले दोनों को एक पीतल अथवा सिल्वर की कटोरी में डालकर गर्म करो। जब उबलने लगे उतारकर रख लें। इसे नित्य लगायें। चम्बल पर कारगर योग है।

योग (९)

आम का कच्चा फल जिसमें गुठली पकी न हो, उसे मसलकर कूटकर रस निकाल लें। यह रस ४ तोला, मैथिलेटिड स्प्रिट १ तोला। दोनों को मिलाकर ३ दिन रख दें। पश्चात् कार्य में लावें। इसके लगाने से पुराने से पुराना दाद, चम्बलादि त्वचा के रोग दूर हो जाते हैं। गहरे से गहरा नासूर इसके लगाने से अच्छा हो जाता है। रूई के फ़ाये में भर चम्मल तथा नासूर पर दिन में दो बार लगायें। यह लगती खूब है। कंठमाला पर लगाने से उसे भी अच्छा कर देती है।

योग (१०) चम्बल की मरहम

बेरियम सल्फायड २॥ तोले को जल ५ तोले में मिलाकर १५ मिनट भिगोकर रखें। उसके ऊपर पीले वर्ण का तैल आ जायेगा। उसे उतारकर सरसों के ८ तोले तैल में मिलाकर हल करें। बस मरहम तैयार है।

गुण:—दाद चम्बल आदि को खद्दर के कपड़े आदि से रगड़ कर लगावें। एक सप्ताह में सदा के लिए दाद का विनाश हो जाएगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग (११)

जब घोड़े को नाल जुड़ते हैं तब उसके कटे हुए खुर को फेंक देते हैं। आप उसको इकट्ठा करके १।। छटांक लेवें। उसको धोकर साफ करलें। सरसों का तेल २ छटाँक, लालमिर्च ४ तोले। इन तीनों को मिलाकर आग पर पकावें। जब पकते पकते यह जलकर काले रंग का कोयला हो जाए, आग से उतारकर उसी कढ़ाही में नीम के डण्डे से घुटाई करें। मरहम बन जाने पर सुरक्षित रखें। बस दवा तैयार है।

गुण:—चम्बल गीला हो अथवा सूखा औषधि लगायें। नित्य न्यून से न्यून १० दिन तो अवश्य लगायें। लाभ होगा।

योग (१२)

नारियल का खोल जिसमें से गोला निकाल लिया हो वह १ सेर, खांड १।। पाव, नीला थोथा ५ तोला। इन तीनों को मोटा मोटा कूटकर एक हांडी में डालकर गर्भपाताल यन्त्र अथवा पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। फिर इसमें से ५ तोले यह तैल में दार-चिकना १ माशा खूब पीसकर मिलादें। इसी अनुपात से आप अधिक औषधि तैयार कर सकते हैं।

गुण:—एग्जीमा, चम्बल नया हो अथवा पुराना हो, ठीक हो जाता है। पहले ताजा गोबर मलकर पांच मिनट पीछे गर्म पानी से धोकर सुखाकर यह दवा फरेरी से लगायें। खाज पर भी इसी भांति प्रयोग करें। परन्तु खाज पर लगाते समय औषधि १ भाग पानी १० भाग मिलाकर प्रयोग करें। लाहौरी सोर फोड़े पर, कण्ठमाला फूटी पर, रसौली, गांठ, चोट, बालतोड़, प्रत्येक फोड़े, फुन्सियों पर नित्य दो बार लगावें। इसी प्रकार शिर की फुन्सी, भिड़, ततैया, बिच्छु, कच्छराली (कांखौली) पर लगावें। नासूर,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगन्दर के सुराख में एक दो बूंद ड्रापर से भरदो। बवासीर पर हल्की सी लगाकर ऊपर शहद, कपूर मिलाकर लेप कर दो। जो घाव गन्दे हों वह इससे अच्छे हो जाते हैं। पशुओं के घाव पर अच्छा कार्य करती है।

योग (१३) कुष्ठ हर तैल

पारा ५ तोला, गन्धक ५ तोला, नीलाथोथा ५ तोले, तपकी हरताल ५ तोले, सरसों का तैल ३० तोले।

विधि:—प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करें। फिर हरताल को बारीक पोसकर कज्जली में मिलावें। फिर नीला थोथा पीसकर मिलावें। सबको एकत्र मिलाकर रगड़ें। पश्चात् सरसों का तैल मिलाकर घुटाई करें। बस औषधि तैयार है। इस औषध को लगाकर तीन घण्टे धूप में बैठ जावें। फिर गोबर मसलकर थोड़ी देर ठहरकर गर्म पानी से नहला दें।

गुण—इस से कुष्ठ, दाद, चम्बल, फुल बहरी (श्वेत कुष्ठ) खाज आदि त्वचा के हर प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

योग (१४)

(१) नारियल की लकड़ी जिसमें गोला (खोपा) होता है उसको गोले का खोल कहते हैं। वह लकड़ी (२) शीशम की लाल लकड़ी (३) गेहूं (४) अखरोट के फल का छिलका (५) बादाम के फल का छिलका (६) नीलाथोथा प्रत्येक १-१ पाव लेकर यवकुट कर लें। फिर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। इस तैल को चम्बल, दाद, कुष्ठ, खाजादि त्वचा पर लगाने से निश्चित लाभ होता है।

योग (१५)

कार्बोलिक एसिड को रोगी स्थान पर लगाकर तत्काल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी का भोगा हुआ कपड़ा रख देवें। थोड़ी देर में हटाकर चम्बल नाशक कोई सी मरहम लगा देवें। अथवा नारियल का तेल लगावें। इसी प्रकार ४-५ दिन लगाने से चम्बल अच्छा हो जाता है यह सूखे चम्बल की दवा है।

योग (१६)

बोरिक एसिड, जिंक ऑक्साइड, सल्फानीलेमाईड .पाऊडर, पोटाशियम परमैगनेट प्रत्येक ६-६ माशे, सफेद वैसलीन २॥ तोले इनकी मरहम बना कर प्रयोग करें। यह चम्बल के लिए कारगर योग है।

योग (१७)

कार्बोलिक एसिड ६ माशे, बिंजोइक एसिड ६ माशे, क्रायसो-फेनिक एसिड ६ माशे, कर्पूर देशी १ तोला, गन्धक २ तोला, बोरिक एसिड ६ तोले, सैलीसिलक एसिड ६ तोले, वैसलीन ३० तोले।

विधि—गन्धक और कर्पूर को मिलाकर बारीक पीस लें। फिर अन्य द्रव्य मिलाकर घुटाई करें। फिर वैसलीन मिलाकर मरहम तैयार करलें। यह चम्बल, दाद आदि पर सफल प्रयोग है।

योग (१८)

सरसों का तैल २ पाव, थोहर का गूदा २ पाव। दोनों को आग पर पकावें। जब गूदा जल कर कोयला हो जाए, तब इसमें मोम डालकर गलावें, मोम पिघल जाने पर नीचे उतार कर १ तोला नीलाथोथा बारीक पीसकर मिलाकर घोटें। यह मरहम बन जावे तब सुरक्षित रखें। फिर दाद, चम्बल पर प्रयोग करें।

योग (१९)

नीलाथोथा २॥ तोला, कमीला २॥ तोला, बाबची २॥ तोला,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुर्दासंग २॥ तोला, हरताल वर्की २॥ तोला, नारियल का छिलका १ सेर।

निर्माण विधि—सब औषधियों को जवकुट कर लें, फिर एक तांबे की देगची जिस में कलई न की हो, उस देगची में १ ईंट पक्की अथवा पत्थर का टुकड़ा रखें। उस ईंट के चारों तरफ जौकुट की हुई दवा डाल देवें। फिर ईंट पर सिल्वर या चीनी का पात्र रखें, जो कटोरी जैसा हो और देगची में ठीक आजाये। फिर देगची पर कोई पीतल का पात्र जो देगची पर अच्छी तरह जम जावे। देगची और पीतल के पात्र को गेहूँ के गूँदे हुए आटे से सन्धि बन्द करदें, जिस से वाष्प नहीं निकलने पावे। इस प्रकार बनाकर इस यन्त्र को चूल्हे पर चढ़ावें और ऊपर पीतल वाले पात्र को पानी से भर देवें। नीचे चूल्हे में बेरी की लकड़ी मन्दी-मन्दी जलावें। जब ऊपर वाले पात्र का पानी गर्म हो जावे, तब गर्म पानी निकाल कर शीतल पानी भर देवें। इस बात का खूब ध्यान रखें कि जल अधिक गर्म न होने पावे। इस प्रकार लगभग ४ घण्टे आग जलाता रहे। इसके पश्चात् आग बन्द करदें। ठंडा होने पर ऊपर वाला पात्र हटा कर देगची में रखा हुआ सिल्वर का पात्र काले रंग की दवा से भरा मिलेगा। यह तैल जैसी वस्तु ही औषधि है।

विशेष—पानी के पात्र में कोई भारी वस्तु लोह अथवा पत्थर डाल दें। कई बार दवा की वाष्प पात्र को ऊपर उठा देती है। फिर सब औषधि उड़ जाती है। फिर यह भय नहीं रहता।

प्रयोग—चम्बल के छिलके को, कपड़े से रगड़ कर साफ कर लें। जिससे चम्बल का मैल उतर जावे। फिर रूई के फोहे से इस औषधि को लगावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—चम्बल चाहे बीस वर्ष का क्यों न हो, कितना पुराना क्यों न हो। कुछ दिन के प्रयोग से शर्तिया दूर होगा। जो चम्बल का रोगी सब प्रकार से चिकित्सा करते २ थक गया हो। ऐसे रोगी परिश्रम करके इस औषधि को तैयार करें। इस का प्रयोग करके चम्बल, दाद आदि को सर्वथा नष्ट करें। अनेकों बार का अनुभूत है

योग (२०)

आतशक प्रकरण में लिखी हुई औषधि से वमनातिसार कराके अन्य रक्तशोधक दवा भी खिलावें। फिर लगाने की औषधि लगावें। सब त्वचा के रोगों में कुष्ठ, खाज, दाद, चम्बल में इन का प्रयोग अवश्य करें।

खाज (खुजली) प्रकरण

योग (१)

शुद्ध गन्धक ६ माशा, गेरू ६ माशे, काली जीरी ६ माशे। इनको कूटकर ३ पुड़िया बनालें। एक पुड़िया की दवा दही में मिला कर प्रातः सेवन करें। दूसरी पुड़िया की औषधि दही के साथ दोपहर सेवन करें और धूप में बैठ जावें। तीन घण्टे के पश्चात् गोबर मसल कर स्नान करें। एक दिन में खाज अच्छी हो जाती है। उस दिन दही के अतिरिक्त कोई चीज सेवन न करें। यदि किसी कारण से खाज ठीक न हो तो तीसरे दिन इसी प्रकार औषधि फिर सेवन करें। इससे सब प्रकार की खाज अच्छी हो जाती है।

योग (२)

पारा १ तोला, गन्धक १ तोला, नीलाथोथा १ तोला, राल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ तोला। पारे गन्धक की कज्जली करें फिर सब औषधियों को मिलाकर रगड़कर घुटाई करें। जब एक जीव हो जावें, तब सरसों का तैल इतना मिलावें, जिससे यह दवा रबड़ी जैसी हो जावे। अब इसमें थोड़ा थोड़ा जल डालते जावें और रगड़ते जावें। यह क्रिया किसी खरल में अथवा थाली में हाथ से मिलावें। जब तक जल मरहम में मिलता जावे, डालते जावें और हिलाते जावें। जब जल मिलना बन्द हो जावे तब समझो मरहम तैयार हो गई। यदि इसमें कुछ पानी न मिले अथवा मरहम पानी को छोड़ देवे; उसको निकाल देवें। अच्छा तो यही है कि उसमें इतना पानी मिलाकर रगड़ें जितना वह मरहम बन जावे और पानी भी न छोड़े।

विधि प्रयोगः—पहले नीम के पत्तों के क्वाथ से फुन्सी अथवा खाज को शुद्ध कर लें फिर मरहम को लगावें। खाज कितनी ही तंग करती हो दो तीन दिन में ही अच्छी हो जाती है। यह औषधि त्येक फोड़े, दाद, चम्बल, कुष्ठ पर अच्छा कार्य करती है।

योग (३)

साल्ट (मगनेशिया सल्फ) १ छटांक, पानी १ पाव इनको घोलकर लेप करें। पहले स्नान करलें, फिर लेप करें। लेप करने के पश्चात् ४ पहर स्नान न करें। सूखी खाज इससे दो दिन में ठीक हो जाएगी।

योग (४)

पारा, गन्धक, नीलाथोथा, सिन्दूर, काली मिर्च, बावची, कमीला, सुहागा प्रत्येक १-१ तोला।

विधिः—पहले पारे गन्धक की कज्जली करें। फिर सब औषधियाँ पीस छानकर मिलादें। फिर खरल करके एकजीव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करलें। फिर जितनी आवश्यकता हो उतनी औषधि लेकर पानी से घुले घी में मिलाकर प्रयोग करें। इसके लगाने से सब प्रकार की खाज अच्छी हो जाती है। तीन चार दिन अवश्य लगावें

योग (५)

अजवायन, हरमल (इस्बन्द) के बीज १॥ - १॥ तोले, प्याज १ तोला। इन तीनों को बारीक करके सरसों के १० तोले तेल में पकावें। जब यह जलकर काले रंग की हो जावे अग्नि से नीचे उतारकर लोहे की मूसली से पीसकर लेप बनालें। इस औषधि को दिन में एक दो बार प्रयोग करें, मसल दिया करें। चार पांच दिन में गीली खुजली अच्छी हो जाती है।

योग (६)

बारूद गोले वाली, सिन्दूर असली, गन्धक आमलासार प्रत्येक १-१ तोला।

विधि—गन्धक को बारीक पीसलें, फिर दोनों को मिलालें। इनको मिलाकर कभी न पीसें। नहीं तो भयंकर परिणाम हो सकता है। सबको मिलाकर रखलें, औषधि तैयार है। आवश्यकता के अनुसार लेकर १२ गुणा दही अथवा मक्खन (नोनी घी) में मिलाकर खाज पर मालिश करें। रात को मलकर सो जायें। प्रातः स्नान करें। दोनों प्रकार की खाज पर आश्चर्यजनक लाभ करती है। अमृत तुल्य है। यह योग पंडित कृष्ण कंवर जी का है।

चर्मरोगहर तैल (७)

सरसों का तैल १० तोले, एसिड क्रायसोफेनिक १ माशा, कार्बोलिक एसिड डेढ तोला इनको मिलाकर आग पर गर्म करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4120

जब सब मिलकर एक जीव हो जाये, तब कपड़े से छानकर शीशी में रखल। इसका रोग के स्थान पर मालिश कर। सूख जाने पर नीम के साबुन अथवा गोबर से मिट्टी मलकर स्नान करें।

गुण—खुजली, दाद, दाग, मुहासा, कील, सीप, छाई आदि चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

योग (८)

गिली अरमनी मिट्टी १ तोला, सफेद जीरा १ तोला, शुद्ध गन्धक ६ माशे। इनको पीस छानकर चार मात्रा बनालें।

प्रयोग—गेहूं का आटा लेकर एक मात्रा उसमें मिलाकर रोटी बनालें। फिर इसका चूर्ण (चूर्मा) बनाकर खावें। दूसरी मात्रा घी में मिलाकर मालिश करें। इसी प्रकार दो दिन औषधि का प्रयोग करने से खाज अच्छी हो जाती है।

योग (९)

गन्धक ४ तोला, फिटकरी दो तोले, बोरिक एसिड डेढ तोला, इन सबको खरल करके सुरक्षित रखें। नोनी घी को १०० बार धोकर रखलें। उस में से ढाई तोले घी, उपरोक्त पिसी दवा दो माशा मिलाकर खुजली पर मालिश करें। यह खुजली के लिए लाभदायक है।

खारिश की औषधि (१०)

स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) के बीजों का तैल ढाई तोले, कार्बोलिक एसिड १ तोला। दोनों को मिलाकर रखलें।

सेवन विधि—इस औषधि को चार गुने तिल के तैल में मिलाकर खुजली पर लगायें। इससे खुजली एकदम शांत हो जाती है।

॥ समाप्त ॥

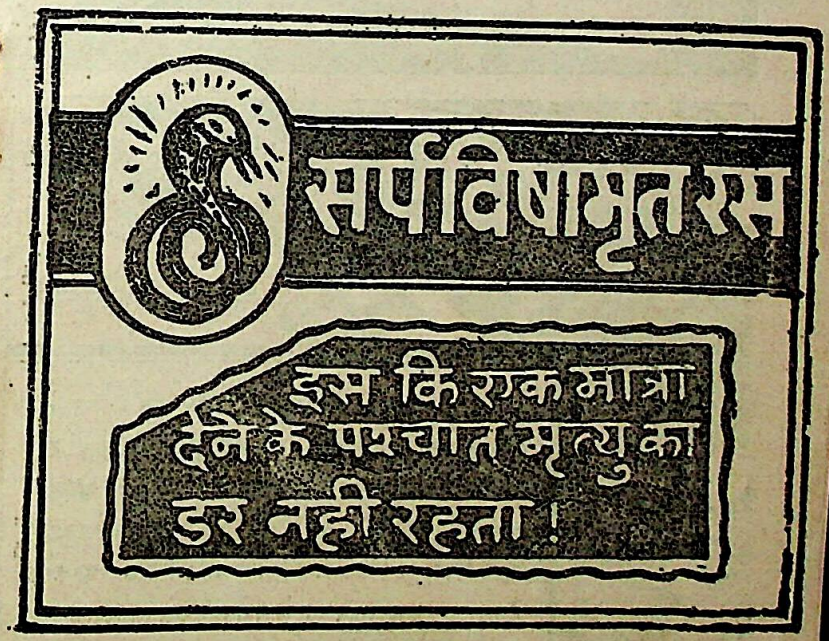
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला

गुरुकुल झज्जर की

पेटेंट औषधियां



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजीवनी तेल

संजीवनी तेल-इतिहास प्रसिद्ध संजीवनी बूटी से बड़े परिश्रम से तैयार किया गया है यह यथा नाम तथा गुण है। कटे-फटे एवं जले हुए पर अत्यन्त गुणकारी है। बहते हुए खून को लगाते ही बन्द करता है। अन्दर की चोट की भी उत्तम औषधि है। जादू भरा प्रभाव करती है।

मंजन विधि-फोड़े में घाव आदि पर बार बार लगायें। जल में बचाव रखें।



प्रयोग करें

नेत्रज्योति सुर्मा

नेत्रज्योति सुर्मा-सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन ही नहीं असम्भव है। इस के लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँखों में पानी बहना, खुजली, लाली, जाला फोला नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आँखों की रक्षा करता है। लगातार इस का प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१७		मात्रा २ तोले
३५	२३	३ माशे	६ माशे
३९	१०	उशारा	असारा
४६	२५	घीक्वार से	घीक्वार रस से
६१	१९	आराम से परिश्रम और व्यायाम कारणों	आराम से गद्दे तकियों पड़े रहना, कुछ भी परिश्रम और व्यायाम न करना इत्यादि कारणों
१०३	५	कजलो जावे	कजलो बन जावे

मुद्रक—वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक।
फोन : २८७४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१	प्रदीप-उद्द्योत-विमर्श सहित व्याकरणमहाभाष्यम्	१५०.००
२	छन्दःशास्त्रम्	४.००
३	काव्यलंकारसूत्राणि	२.००
४	कारिकाप्रकाश	२.००
५	दयानन्दलहरी	१.२५
६	ब्रह्मचर्यामृतम्	.५०
७	विरजानन्दचरितम्	१.५०
८	नारायणस्वामिचरितम्	.७५
९	ब्रह्मचर्यशतकम्	.६५
१०	गुरुकुलशतकम्	.५००
११	ब्रह्मचर्यमहत्त्वम्	.५०
१२	चारुचरितामृतम्	१.००
१३	भारतेतिहासः	३.००
१४	तत्त्वबोध	१.००
१५	लिङ्गानुशासनवृत्तिः	१.२५
१६	स्थावरजीव मीमांसा	२.००
१७	विरजानन्दचरित (हिन्दी)	१.५०
१८	महर्षि दयानन्द जीवन कथा (भजन)	.७५
१९	असली अमृतगीता १ भाग	.७५
२	असली अमृतगीता २ भाग	.७५
२१	बस्तीराम रहस्य	.५०
२२	मानस दीपिका	१.५०
२३	पोप की नाखर	.३०
२४	पाखण्ड खंडनी	१.७५
२५	बस्तीराम अग्निबाण	१.००
२६	वैदिक भारत में यज्ञ	२.००
२७	दो महात्मा (ईसा, दयानन्द)	१.००
२८	माया का खेल	२.५०
२९	सामयिक समाधान	.५०
३०	बाल शिक्षा	.३५
३१	मनोविज्ञान शिव सकल्प	५.००
३२	वेद प्रवेश (१-२ खण्ड)	२-५०
३३	आर्य सामाजिक धर्म	.७५
३४	फिट् सूत्र प्रदीप	१.००
३५	महर्षि दयानन्द जीवन	२.२५
३६	वेद विमर्श (प्रथम भाग)	२.००
३७	आसनों के व्यायाम	१.५०
३८	सुखी जीवन	२.२५
३९	घर का वैद्य (दोनों भाग)	३.२५
४०	रामप्रसाद बिस्मिल	.७५
४१	ईशोपनिषद् व्याख्या	.७५
४२	संस्कृत प्रबोध	१.५०
४३	एक सत्पुरुष की दिनचर्या	१.२५
४४	जीव का परिमाण	.७५
४५	कन्या और ब्रह्मचर्य	.२५

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान, पो० गुरुकुल झज्जर, रोहतक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.